श्रीः

ज्योतिष्मती

नववर्षाङ्क

वर्ष
२४
सं० २०३७

संख्या
१
कार्तिक

















वार्षिक
मूल्य
१५.००

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का
मूल्य ४.००

विषय-सूची

आवश्यक सूचना

जो सज्जन गतवर्ष २३ अंक २ माघमास (जनवरी ८०) से ग्राहक बने थे उनका व मूल्य इस अङ्कमें समाप्त है अतः उन्हें छपा हुआ मनीआर्डर फार्म साथ भेजा जा रहा आगामी वर्ष भरके चारों अङ्कोंके लिए १५/–रुपये शीघ्र भेज दें ताकि समय पर २४वें दूसरा अङ्क (माघ फाल्गुन-चैत्रका) जनवरी ८१ में भेजा जा सके। आगामी अङ्कके लिए ज ३० नवम्बर ८० तक प्राप्त हो जावेंगे वे ही छप सकेंगे। व्यापार-भविष्य स्तम्भके लेखक अवधिका विशेष ध्यान रक्खें। 'श्रीविश्वविजयपंचांग' स्थानीय पुस्तकविक्रेता या धर्मसन प्रक नई सड़क दिल्ली ६ से प्राप्त करें। स्थानीय कार्योंकी अधिकताके कारण बाहरके ज्योतिष स सब कार्य स्थगित कर दिये हैं, अतः इस सम्बन्धमें पत्र व्यवहार न करें।

—व्यवस्थापक ज्योतिष्मती-निकेतन सोलन, १७३२१२ (हिमाचल प्र

❁ श्रीः ❁

ज्योतिष्मती

[भारतीय संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानकी प्रचारक प्रमुखपत्रिका]

सम्पादक एवं संचालक

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्योतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)
अध्यक्ष—हिमाचल-प्रान्तीय विश्वहिन्दू-परिषद्, सोलन (हि०प्र०)

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

Telegram—'Jyotishmati' Telephone–696

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिःशास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के संरक्षक माने जायेंगे। संरक्षकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे। सहायकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

(३) जो सज्जन एक बार ५०१) रु० देंगे वे आजीवन संमान्य सदस्य और जो १५१) रु० एक बार देंगे वे आजीवन सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १५.०० पन्द्रह रुपये और एक प्रतिके ४.00 चार रुपये मात्र हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हिमाचल-प्रदेश) के पतेसे भेजनी चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं—चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरदपूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए।

व्यवस्थापक—

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[त्रैमासिक पत्रिका]

(कर्तिक-मार्गशीर्ष-पौष दि० २४ अक्टूबर ७६ से २० जनवरी ८० तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती ।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले ॥

वर्ष २४ — सोलन, आश्विन शु० १५ गुरुवार, सं० २०३७ वि० १ कार्तिक, शाके १९०२ (२३ अक्टूबर १९८० ई०) — संख्या १

अभय करो

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥

(अथर्व—१९।१५।५)

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥

(अथर्व—१९।१५।६)

सुख व शान्ति स्वतन्त्रता बिना सम्भव नहीं ।
स्वाधीनता अभय बने बिना प्राप्त होती नहीं ।
'आधिदैविक' विपत्तियोंसे डरते रहना जीवन-कर्म नहीं ।
राष्ट्रके दसों दिशाओंसे शत्रु-रहित होने पर ही व्यक्ति अभय होगा ॥
आकाश, नभोमण्डल, विस्तृत मही राष्ट्रके शत्रुनाश बिना अभय कर सकते नहीं ।
बलवान् बनो तेजस्वी बनो शक्तिशाली बनो, तब सब होंगे मित्र और होंगे निर्भय ॥
निर्बल तेजो विहीनका कोई मित्र नहीं, फलतः वह रहेगा सदा भयभीत ।

नववर्षोपलक्ष्में—

'ज्योतिष्मती' का अभिनन्दन

ज—योतिष्मती स्व-पाठकों का, आज अभिनन्दन करे।
चौबीसवां वर्षाङ्क-नव, अज्ञान-तम जग का हरे ॥१॥
यो—ग आदि रहस्य विद्याओं की मैं भण्डार हूं।
तन्त्र ज्योतिष संस्कृति का कर रही उद्धार हूं ॥२॥
ति—रष्कार सत्-शास्त्र का करने कोई पावे नहीं।
अन्वेषकों की खोज नूतन व्यर्थ भी जावे नहीं ॥३॥
ष—ठीव झूठा ही बिलोना लक्ष्य मेरा है नहीं।
प्रगति करे व्यापार सुधरे देश की हालत सही ॥४॥
म—ङ्गलमय होवे जग-जीवन शुभ कामना मेरी यही।
मार्ग-दर्शन स्वपाठकों का हूं निरन्तर कर रही ॥५॥
ती—क्ष्ण बुद्धि ज्योतिषी औ शास्त्र के विद्वान् हैं।
सम्पादक मम 'हरदेव जी'' इस क्षेत्र में महान् हैं ॥६॥
श्री—''ज्योतिष्मती-निकेतन'' से, त्रैमासिक मैं छपती रहती।
हिमाचल-प्रदेश के ''सोलन'' से मंगवा लो मुझ को यह कहती ॥७॥
ह—र अंक अनूठा है मेरा, ज्योतिष ज्ञान से जो भरपूर।
प्राच्य भारतीय विद्याओं का, करती प्रचार प्रसार प्रचूर ॥८॥
र—खना मुझे सम्भाल, पढ़ोगे ज्ञान बढ़ाती जाऊँगी।
अज्ञान-तिमिर को नाश, ज्ञान की ज्योति सदा जलाऊंगी ॥९॥
दे—ती हूँ यश मान कीर्त्ति, स्वलेखक वृन्द विद्वानों को।
संरक्षण सहायता पाती उन उदार-हृदय धीमानों को ॥१०॥
व—रदान तुल्य यह, लुप्त हो रही विद्याओं का हो उद्धार।
विश्व-गुरु का डंका बाजे, सकल विश्व में फिर एक बार ॥११॥
जी—तनी भी हो तन मन धन से, सेवा का व्रत ग्रहण करो।
ज्ञान प्रचार औ विद्या दान हित, भार अल्प कुछ वहन करो ॥१२॥
त्रि—स्कन्द ज्योतिष का फिर से, सकल विश्व में हो सम्मान।
भारत से ही ज्ञान गया था, माने इस को सकल जहान ॥१३॥
वे—द ज्ञान आदि प्राचीनतम, मानवता का सब माने।
इतिहास साक्षी आए विदेशी, भारत में इसको पाने ॥१४॥
दी—न हुआ भारत जिसे खो, फिर उसका विस्तार करो।
'ज्योतिष्मती' की 'सुन्दर' विनती, पुनः ज्ञान भण्डार भरो ॥१५॥

—एडवोकेट श्याम कसेरा

सम्पादकीय हृदयोद्गार—

"ज्योतिष्मती" का १४वें वर्षमें पदार्पण

'ज्योतिष्मती' का प्रकाशन इस अनुभवका परिणाम है, परवशता किसी भी प्रकारकी हो, स्वतन्त्रताकी शत्रु है। स्वाधीन जीवन, स्वतन्त्र साहसी जीवन, सतत संघर्षरत-जीवनमें ही मानवकी शक्तियोंका समुन्नत विकास सम्भव है। स्वतन्त्रता मूल्य चाहती है, बलिदान और त्यागकी अपेक्षा करती है। 'ज्योतिष्मती' का जीवित रहना ही सञ्चालक सम्पादक को सन्तोष देता है कि वह कर्त्तव्य पथसे विचलित नहीं हुआ। प्रेरणा मिली :—

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्॥
मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥ (अथर्व० १९-७१-१)

'ज्योतिर्वेद' वेदका एक उपवेद है। 'ज्योतिष्मती' द्वारा वेदमाताकी ही स्तुति की है और द्विजोंके योग्य व विहित पवित्र कर्मोंको किया है। यह अनुभूति गौरवपूर्ण सन्तोष देती है। ज्योतिष्मती योग्य भारत सन्तान कहानेकी अधिकारिणी है।

संचालक सम्पादक ७१ वर्ष पार कर गया है और विगत ५० वर्षोंसे अहर्निश लेखनी घिसाते अथक श्रम करते-करते अब शरीर स्वस्थ सबल नहीं रह पाता अत: विश्राम और विरामकी इच्छा उत्पन्न हुई, पर वेदमाताके सेवकके लिए यह कहां? भारत सन्तानका जीवन तो :—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥
कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ (यजु० ४०—१, २)

सम्पूर्ण जगत्का स्मामी ईश्वर है। इस जगत्का उसकी अनुमतिसे उपभोग करो। आवश्यकता से अधिक मत लो, वह तुम्हारा धन नहीं, वह तो ईश्वरका है। अत: त्याग पूर्वक भोग करो। त्याग और भोगका जीवनमें समन्वय करो। कमसे कम सौ वर्ष कर्म करते हुए, पुरुषार्थ करते हुए, कठोर परिश्रम करते हुए जीओ। "**भूयश्च शरदः शतात्**" इस आदेशके आगे विश्रामका क्षणिक विचार जाता रहा। फिर अन्तर्ध्वनि उठी :—

"**चरैवेति चरैवेति**" चलो चलो, चलते रहो। क्यों? ऐतरेय ब्राह्मण उत्तर देता है—

न अनाश्रान्ताय श्रीः अस्तीति रोहितः शुश्रुम् ।
पापो नृषद्वरो जनः इन्द्र इत् चरतः सखा ॥

निरन्तर चलने वाला ही श्री पाता है । परमात्मा उसीका मित्र है । अपुरुषार्थीके लिए ऐश्वर्य नहीं । बैठा हुआ श्रेष्ठ पुरुष भी श्रीहीन तेजोविहीन हो जाता है । और भी :—

पुष्पिण्यौ चरतो जंघे, भूष्णुः आत्मा फले ग्रहिः ।
शेरेऽस्य सर्वे पाप्मानः श्रमेण प्रपथे हताः ॥

चलने वाले पुरुषार्थीकी टांगें प्रफुल्लित, मन उत्साही, फलग्राही होता है, उसके सब पाप श्रीहीन करने वाले सब कारण लम्बे जीवनमार्गमें श्रमसे सदाके लिए सो जाते हैं ।

ऐतरेय ब्राह्मण (३३।३में) आगे कहता है—

आस्ते भगः आसीनस्य, ऊर्ध्वं तिष्टति तिष्ठतः ।
शेते निपद्य मानस्य, चरति चरतो भगः ॥

बैठे हुएका ऐश्वर्य व श्री बैठ जाती है । बैठ कर खड़े हुएका खड़ा हो जाता है । टांगे पसार पड़े हुएका सोए हुएका सो जाता है । चलने वाले पुरुषार्थीके ऐश्वर्य पीछे-पीछे चलता है ।

इसके बाद दुविधाका क्या काम रहा । 'ज्योतिष्मती' सतत चलेगी, निरन्तर बढ़ती रहेगी, 'ज्योतिष्मती'की यह कामना पूर्ण हो, यही सञ्चालक सम्पादककी हार्दिक कामना है—

पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतम् । बुध्येम शरदः शतम्, रोहेम शरदः शतम् ॥
पूषेम शरदः शतम्, भवेम शरदः शतम् । भूयेम शरदः शतम्, भूयसी शरदः शतात् ॥
(अथर्व० १९—६७—१—८१)

चलना निरंतर चलना है । स्वस्ति पथ पर सूर्य-चन्द्रकी नाईं चलना है । क्या सूर्य-चन्द्र कभी ठहरते हैं, रुकते हैं ? फिर भारत सन्तान क्यों ठहरे ? उसके ठहरने के ही कारण तो संसार विनाशके कगार पर खड़ा हैं । इस मृत्युसे विश्व को वचाना अभीष्ट है। अतः 'ज्योतिष्मती' स्वस्ति-पथ पर चलेगी क्योंकि ऐसे आदेश, ऐसे उपदेश :—

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददता अघ्नता जानता संगमेमहि ॥
(ऋ० ५—५१—१५)

इस स्वतिपथ पर चल कर ही भारतने विश्व साम्राज्यकी स्थापना की । महायज्ञोंका अनुष्ठान किया । इसमें भाग लेनेके लिए बड़े बड़े सम्राट दूर-दरसे आए । विद्वान् आए, याज्ञिक आए, ऋत्विज आए ।

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुः, अपरिव्हृतादधिरे दिविक्षयम् ।
तान् आविवास तमसा सुवृक्तिभिः महो आदित्यान् अदिते स्वस्तये ॥

(ऋ० १०-६३-५)

गुण और कर्मों से महान् भारत भूमिका और भारत माताके सुपुत्रोंका स्तुति गान करनेका अपरिव्हृता (न दबते हुए) रहते हुए व्रत 'ज्योतिष्मती' लेती है। स्वस्तिपथ प्रशस्त पथ है, प्राचीनतम है। भारतके आदि महान् पूर्वजोंका बनाया हुआ है। ऋषि कहता है—

इदं नमः ऋषिभ्य पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः ।

(ऋ० १०-१४-१५, अथर्व० १८-२-२)

यह पथ प्राचीनतम है। सृष्टि संवत्से भी पुराना है, यह तो दैवज्ञके गणितमें कभी आया ही नहीं। दैवज्ञ और 'ज्योतिष्मती' सृष्टि संवत्का व्यवहार करेंगे। अपनी कालगणनाका इसको आधार मानेंगे। विवाह संस्कार और दान संकल्पों तकमें इसको सीमित न रहने देंगे। 'ज्योतिष्मती' यह प्रण करती है।

भारतकी गौरव-पताका यह सृष्टि संवत् है। भारत और आर्य जातिकी अमरताका यह प्रमाण है। यह संवत् भारतकी सूखी नसोंमें नूतन रक्तका संचार करेगा।

इसी कारण 'ज्योतिष्मती' का अंग्रेजीराजका अन्धकार अज्ञानकी तमिस्रारात्रिका अन्त करने का आग्रह रहा है और आगे भी रहेगा। क्योंकि कविने कहा—

'एके साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।'

ऋषि दयानन्दने ब्रह्म-समाजके नेता केशवचन्द्र सेनको कहा था— "हमको पश्चिमसे कुछ नहीं लेना, हमारे पास सब कुछ है। पश्चिमको हम देंगे।" यह होते हुए भी संस्कृतका पठन-पाठन नहीं चला। २७ मार्च १८३५ की मेकालेकी घोषणा आज भी काम कर रही है। मेकालेकी मानस-सन्तान भारतको एक राष्ट्र बनाना ही नहीं चाहती, यदि चाहती होती तो संस्कृतकी बाधित शिक्षा तीन या पांच वर्ष होती। शिक्षित वर्ग नागरी लिपिसे परिचित होता। इसका एक सामान्य शब्दकोष होता। सभी-सम्मेलनों संसद और विधानसभाओंमें हिन्दीमें काम होता। हिन्दी किसीको पढ़ानेकी आवश्यकता ही न रहती। वेदके १०० से १००० मंत्र कण्ठस्थ कराते। खेल, दूर शब्द वेदके हैं। और तो और इस्लामको अपने मिले भू-भागका नाम वेदसे लेना पड़ा है। देखिए :—

एकः सुपर्णः समुद्रम् आविवेश, स इदं विश्वं भुवनं विचष्टे ।
तं 'पाकेन' मनसा अपश्यन् अन्तितः, तं माता रेढि स उ रेढि मातरम् ॥

(१०-११४-४)

ऋषि कहता है (पाकेन मनसा) पवित्र मनसे निकटसे मैंने देखा। पृथिवी-माता-सूर्यको

चाटती है, और वह माताको चाटता है चूमता है।

हिन्दी इस लिए सरल भाषा है क्योंकि हिन्दीकी उत्पत्ति सीधे वेदसे हुई है और वेदसे इसका निर्माण और विस्तार हुआ है।

गियर्सन और द्विवेदी मण्डलीका यह कहना है कि—"हिन्दी प्राकृत और अपभ्रंश भाषासे बनी है" नितान्त भ्रान्त धारणा है। देखिए और विचारिए :—

वाक् वाक्। प्राणः प्राणः। चक्षुः चक्षुः। श्रोत्रम् श्रोत्रम्। नाभिः। हृदयं। कण्ठः शिरः। वाहुभ्यां यशोबलम्। करतल करपृष्ठे। भूः पुनातु शिरसि। भुवः पुनातु नेत्रयोः॥ स्वः पुनातु कण्ठे। महः पुनातु हृदये। जनः पुनातु नाभ्याम्। तपः पुनातु पादयोः। सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। खं ब्रह्मपुनातु सर्वत्र। भूः। भुवः। स्वः। महः। जनः। तपः। सत्यम्॥

ये शब्द इस देशकी शतप्रतिशत निरक्षर जनताकी दैनिक व्यावहारिक भाषा व बोलीके शब्द हैं। यह सामान्य जनतामें संसार भरमें सर्वाधिक प्राचीन होनेका आत्म-गौरव और आत्माभिमान उत्पन्न करता है। मैकालेकी मानस सन्तान भूतके गौरवको आत्म-विस्मृतिकी राखके नीचे दबा देना चाहती है। आत्म-विस्मृतिकी नींद गहरी है, इसके कारण अंग्रेजी पठित वर्गको लज्जाजनक स्थितिका सामना करना पड़ता है। परन्तु फिर भी वह संस्कृतसे दूर भागता है। एक उदाहरण लीजिए :—

संस्कृतका महत्व

इलाहाबाद विश्वविद्यालयमें एक जर्मन विद्वान् विशेष व्याख्यान देने आए। उपकुलपति श्री बी०के० नेहरूने व्याख्याताका अंग्रेजीमें स्वागत किया। और भी जो भाषण हुए सब अंग्रेजीमें हुए। अन्तमें जर्मन विद्वान्के बोलनेकी बारी आयी। वह उठा और अस्खलित संस्कृतमें धाराप्रवाह भाषण देने लगा। जल्दी-जल्दी एक संस्कृत पण्डित ढूंढ कर लाया गया।

पण्डितने अनुवाद करके बताया—

"बड़े दुःख और परितापकी बात है कि आपने मेरा स्वागत संस्कृतमें नहीं, अंग्रेजीमें किया है। संस्कृतमें सम्भव नहीं था तो हिन्दीमें करते, नहीं तो मेरी भाषा जर्मनमें करते। अंग्रेजी तो मेरे लिए और आपके लिए (दोनोंके लिए) विदेशी भाषा है। संस्कृत विश्वकी सर्वश्रेष्ठ थाषा है और सैंकड़ों भाषाओंकी जननी है। इसमें जो ज्ञान है उस सीमा तक यूरोप आज भी नहीं पहुँच सका। उदाहरणके लिए रामायणमें वर्णित "लक्ष्मण रेखा" को ही ले लीजिए। जर्मनीके बड़े-बड़े वैज्ञानिक और इंजीनियर उस टैकनालौजी-यंत्र-तंत्र ज्ञानका पता नहीं लगा सके जो शीत-तप्त विस्फोटक मिसाइल बना सके। भिक्षुकको

भिक्षा देना गृहिणीका धर्म है। सीता भिक्षुक रावणको निराश लौटा नहीं सकती। भिक्षुक रावण जानता है यदि उसने रेखा पार की तो भारी विस्फोट होगा और उसका कहीं पता भी नहीं चलेगा, जलकर भस्म हो जायेगा। अतः वह आग्रह करता है कि सीता बाहर आये और भिक्षा दे, क्योंकि सीताके रेखा लांघनेसे मिसाइल न फटेगी। क्या यूरोपका विज्ञान इस सीमा तक पहुंचा है?"

जर्मन विद्वान्‌के इस कथनका क्या कुछ प्रभाव हुआ? नहीं. यह सुनने वालोंमेंसे अधिकांश आज क्लर्की कर रहे हैं। अंग्रेजीने महत्वाकांक्षाका नाश कर दिया है, विजयेच्छा उत्पन्न ही नहीं होने दी। उन्नीसवीं शतीमें ऋषि दयानन्दने १८७५ में ऋग्वेदादिभाष्य भूमिकाको हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया। पहला संस्करण संस्कृतमें था। ऋषि इस समय तक संस्कृतमें ही भाषण देते थे। केशवचन्द्रके कहने पर ऋषि हिन्दीमें भाषण देने लगे। इस पुस्तकको १८ वर्षीय युवक नारायण रावने पढ़ा। इसमें एक अध्याय है "वेदमें विज्ञान" इसमें कहा गया है विज्ञान सूक्तके आधार पर विमान बनाना सम्भव है। पर नारायण संस्कृत नहीं जानता था, किन्तु युवकने हिम्मत नहीं हारी। वैदिक मुनि श्रीपाद दामोदर सात्वलेकर उन दिनों बम्बईमें थे। नारायण राव उनसे और संस्कृतके अन्य विद्वानोंके पास जाता पूछता। इस प्रकार विमान-सूक्तको पढ़ा और जाना। फलतः संसारभरमें सबसे पहले १८९१ में, बम्बईके चौकमें जस्टिस रानडे और जस्टिस तैलंग की उपस्थितिमें विशाल जन-समूहके सामने विमान उड़ाया। यह २०० फुट ऊँचा गया। इसके दो वर्ष बाद अमेरिकाके राइट बन्धुओंने विमान बनाया। यह समाचार "टाइम्स आफ इण्डिया" में छपा। बम्बईमें प्लेग फैली। नाराणराव प्लेगमें मर गया। "बृटिश इन साइक्लोपीडिया" में इस घटनाका उल्लेख तक नहीं। परन्तु फ्रैंचके समाज शास्त्रके विश्वज्ञान-कोषमें इस घटनाका वर्णन है। स्पष्ट है ब्रिटेन और अंग्रेजी भारतकी प्रगतिके महाशत्रु हैं। अतः अंग्रेजी राज भारतका विनाशक है।

नारायणरावका प्रयत्न 'एकाकी' में था। १८९५ में चौपाटीसे एक और विमान उड़ाया गया। इस युवकका नाम तक ज्ञात नहीं। बड़ौदाके एक मराठा-दम्पतिने आर्य सन्यासी स्वामी नित्यानन्दकी प्रेरणासे विमान बनाया। बड़ौदा-नरेशने आर्थिक सहायता दी। यह विमान पुष्पक विमानके ढंगका था। इसको दौड़-पट्टीकी आवश्यकता नहीं थी। यह इच्छानुसार आकाशके मध्य ठहर सकता था, महाराजा बड़ौदाके सामने यह विमान उड़ाया गया। बड़ौदा-नरेश प्रसन्न हुए और आगे बढ़नेका प्रोत्साहन दिया, पर मराठा-दम्पति प्लेगमें चल बसे। मैसूरके दो भाइयोंने शिल्प-शास्त्रके आधार पर विमान बनाया। अंग्रेज रेजीडेण्टने इनके हाथ कटवा दिये। शिल्प-शास्त्र जैन ग्रन्थागारमें विद्यमान हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि मराठा-दम्पतिके बनाए विमानके लिए दौड़ पट्टीकी आवश्यकता नहीं थी। १९८० में पश्चिम क्या ऐसा विमान बना सका है—जो सीधे आकाशमें उड़ सके?

हमारा संकल्प

ऋषिका निदेश है, देवोंका सखा होना अभीष्ट हो तो अपनी आयु देवोंको अर्पित करो, उनके लिए जिओ "देव हितं यदायुः"

भद्रं कर्णेभिः श्रुणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनुभिर्व्यशेमहि देव हितं यदायुः॥
(यजु० २५-२१)

दृढ़ अङ्गों और पुष्ट शरीरसे भारत माता, वेद माता और देववाणीके प्रचार प्रसारको जीवन अर्पित करो। भारत माता और वेदमाताके अनन्य भक्तके लिए गीतामें कहा है—

'न मे भक्तः प्रणश्यति'

अतः 'ज्योतिष्मती' के संचालक सम्पादकका संकल्प है वह वेद और संस्कृत प्रचार-प्रसार को अपने जीवनका एक मात्र ध्येय बनायेगा। इसके लिए उसका प्रयत्न होगा।—

१— स्कूलोंमें सबको अनिवार्य एवं बाधित रूपसे कमसे कम तीन वर्ष संस्कृत पढ़ाई जाय और वेदमंत्र १०० से १००० तक कण्ठस्थ कराए जाएं।

२— १९३७ से पहलेके समान मैट्रिक व एंट्रेंसकी परीक्षामें एक प्रश्नपत्र संस्कृतका हो और इसमें उत्तीर्ण होना आवश्यक हा।

३— भारतसरकार और राज्य सरकारकी सेवाओंकी परीक्षामें एक प्रश्नपत्र संस्कृतका हो।

४— एक ऐसा विश्वविद्यालय स्थापित किया जाय जिसके परिसरमें ४० कालेज़ हों और 'नारदने सनत्कुमारसे कहा' उन विषयों और विद्याओंका अध्ययन कराया जाए, वे सब विद्यायें और विषय वहां पढ़ाए जाएँ।

भारती राष्ट्रवादका मूलाधार है—भारतभूमि और वेद। वेदकी रक्षा केवल भारत सन्तान ही करेंगे अन्य कोई नहीं।

१९७० के दशकमें कनाडाके संस्कृत कालेजका प्रिंसिपल उडूपी एक मूल पाण्डुलिपि देखने भारत आया। इस अवसर पर उसने एक व्याख्यान भी दिया था। उसने इस बात पर सविस्मय खेद प्रकट किया कि—संस्कृतका अध्ययन अध्यापन नहीं होता, उसके अपने संस्कृत कालेजमें १००० छात्र हैं। इतने और पढ़नेको तैय्यार हैं। दूसरा संस्कृत कालेज़ खोलनेके लिए हमारे पास फण्ड नहीं। संस्कृतके अभावमें भारत-छिन्न-भिन्न हो जायगा। भारतकी एकता और अखण्डताका दृढ़ सूत्र संस्कृत है। कनाडियन प्रिंसिपलने सत्य कहा है। क्योंकि संस्कृत ही भारतकी महिमा गाती है—

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारत भूमि भागे।
स्वर्गापवर्गाश्च हेतु भूते भवन्ति भूयः पुनः सुरत्वात्॥ (विष्णु.)

वेद कहता है—

यामश्विनावभिमातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमे।
इन्द्रो यां चक्रे आत्मनेऽनमित्रां शचीपतिः।
सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः॥
(अथर्व० १२।१।१०)

[जिसके इञ्जीनियर अश्विनी देवोंने चप्पा-चप्पा भूमि मापी है। जिस देशमें विष्णुने बल-पराक्रम प्रदर्शित किया है। जिसको शचीपति जनताके सेनापति और शासक इन्द्रने शत्रु शून्य किया वह भारत माता हम पुत्रोंको दूध पिलाये।]

भारतीय राष्ट्रवादके लिए जीने और मरने वाला कोई दिखाई नहीं देता, इस अभावको पूरा करनेके लिए हमारा संकल्प हैं।

कृतज्ञ और आभारी हूँ :—

'ज्योतिष्मती' के पालन-पोषण और इसको पुष्पित विकसित करनेमें भाग लिया, सहायता दी, संकटकी घड़ियोंमें जिन्होंने उदार भावसे सहायता की—उन सब महानुभावोंके नाम यहां देना सम्भव नहीं। राजर्षि स्व० सोलननरेश और श्रेष्ठिवर स्व० श्री हरिरामजी साबूकी पुण्य-स्मृति सदा पथ प्रशस्त करती रहेगी। ऐसे ही अन्य संरक्षकों सहायकोंकी स्मृति ज्योतिष्मतीकी पवित्र धरोहर है। 'ज्योतिष्मती' को जिन बन्धुओं और स्नेहियोंने सजाने-सँवारने और इसकी शोभा बढ़ाने, इसके मूल्यवान् ग्राहक विज्ञापक आजीवन सदस्य बनानेमें उदारता और लक्ष्यके प्रति अनुराग भावसे सहयोग दिया उनके प्रति 'ज्योतिष्मती' कृतज्ञ है। संचालक सम्पादक हृदयसे आभारी है। पराम्बासे यही प्रार्थना है उन सब उदारमना महानुभावों कृपालु सहयोगियों संरक्षकों और स्नेही विद्वान् लेखक बन्धुओंकी कृपा एवं विश्वासकी पात्र ज्योतिष्मती सदा बनी रहे।

गार्ग्य ऋषिके शब्दोंमें हमारी प्रार्थना है—

सहवामग्ने कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा।
पुनर्वसू सुनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे॥
पुण्यं पूर्वाफल्गुन्यौ चात्र हस्त चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु।
राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम्॥
अन्नं पूर्वा रासतां मे अषाढ़ा ऊर्जं देव्युत्तरा आवहन्तु।
अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवणः श्रविष्ठा कुर्वतां सुपुष्टिम्॥

आ मे महच्छतभिषग्वरीय आ मे द्वया प्रोष्ठपदा सुशर्म।
आ रेवतीं चाश्वयुजौ भगं म आ मे रयिं भरण्य आहवन्तु॥

दैवीबलका सहारा

विगत २३ वर्षोंसे 'ज्योतिष्मती' समय पर निरन्तर प्रकाशित होती आ रही है। इस लम्बी अवधिमें ६२ अंकोंमें किसी भी अङ्कमें व्यवधान नहीं पड़ा। सभी बालारिष्टोंको पार कर 'ज्योतिष्मती' अब पूर्ण यौवनावस्था (२४वें वर्ष) में पदार्पण कर रही है और यदि महामायाका इच्छा हुई तो आगामी २५वें वर्षका प्रथमाङ्क 'रजतजयन्ती अङ्क' के रूपमें विशेष उपयोगी नयनाभिराम सुन्दर सामग्री लेकर प्रकाशित होगा। आशा है अनुभवी विद्वान् लेखकबन्धु अभीसे तय्यारी करके 'रजतजयन्ती अङ्क' में पूर्ण योगदान करेंगे। योग्य साथी सहयोगीके बिना इन अशक्त हाथोंसे लेखन सम्पादन प्रकाशन प्रूफ-संशोधन व्यवस्थापनादिका सब कार्यभार 'पीर बबर्ची भिश्ती खर' बनाकर वहन करानेकी शक्ति महामायाकी ही है। जहां इस कठिन कालमें अनेक साधनसम्पन्न संरक्षक सम्पादक प्रकाशकोंसे सांस्कृतिक वैज्ञानिक नवजात पत्र पत्रिकाए व्यवस्थित रूपेण नहीं चल पायी, वहां ज्योतिष्मतीका अबाध गतिसे आगे बढ़ते जाना ईश्वरीय चमत्कार ही है।

यद्यपि अब सम्पादक संचालकका कलेवर ७१ वर्ष पुराना हो जानेसे जर्जर निर्बल हो चला। अर्धशताब्दीसे अहर्निश अत्यधिक श्रम करते-करते अब स्वास्थ्य पूरा साथ नहीं देता, तथापि इस अङ्कका अधिकांश सम्पादन संशोधन रुग्णावस्थामें ही जैसे-तैसे हो पाया है। वैद्य डॉक्टर मित्रोंने कुछ समय पूर्ण विश्रामका परामर्श दिया। पर, यह मेरे लिए सम्भव नहीं। मैं तो उस आद्याशक्तिकी कठपुतली मात्र हूँ "भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया" के अनुसार वह जब जो चाहे करावे। 'ज्योतिष्मती' उसीकी वस्तु है, अतः मैं चिन्ता-मुक्त हूँ। इसी आशा और विश्वासके साथ निश्चिन्त होकर २४वें वर्षका अभिनन्दन करते हुए अपने सभी सन्मित्रों सहयोगियों एवं गुरुजनोंका अभिवादन करके २४वें वर्षका यह प्रथम पुष्प जगन्माताके श्रीचरणोंमें समर्पित है। "त्वदीयं वस्तु देवेशि! तुभ्यमेव समर्पये।"

ज्योतिष्मती निकेतन, सोलन
आश्विन शु० १ सं० २०३७ वि०

विनयावनत—
हरदेव शर्मा त्रिवेदी

पं० मानचन्द ज्योतिष निबन्ध प्रतियोगिता

इस वर्ष १९८० में प्रतियोगिताका विषय "भारतीय ज्योतिषमें राजस्थानका योगदान" निर्धारित किया गया है। प्रथम पुरस्कार १५१) रु०, द्वितीय १०१) रु० एवं तृतीय ५१) रु० मय प्रमाण पत्र प्रदान किये जाएंगे। निबन्ध भेजनेकी अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर १९८० है। पुरस्कार वितरण मार्च १९८१ में होगा।

निबन्ध निम्नाङ्कित पते पर भेजे जाएं एवं विशेष जानकारी हेतु यहींसे सम्पर्क किया जाय।

पं० अमरचन्द महेशचन्द ज्योतिषी
पूंगलपाड़ा, जोधपुर (राजस्थान)

सम्पादकीय विचार—

राष्ट्र-चिन्तन

बागपत (जयप्रस्थ) भारतका पुनः नया इतिहास लिख रहा है

पांचहजार-पांचसौ-अट्ठाईस वर्ष पूर्व भगवान् श्रीकृष्णने हस्तिनापुरमें कौरवोंकी सभामें कहा था, पाण्डवोंको पांच गांव—इन्द्रप्रस्थ, वृकप्रस्थ (सोनीपत, पानीपत) बागपत (जयप्रस्थ) तथा वरणावत दे दो और विनाशकारी युद्धको मत छिड़ने दो। परन्तु कौरवोंने यह नहीं माना। परिणाम सर्वविदित है।

१९८० में बागपत अन्तर्राष्ट्रीय तो नहीं किन्तु, अखिल भारतीय चर्चाका विषय हो गया है। कांग्रेस और यूथकांग्रेसका भयंकर आतंक भी इसको दबा न सका, समाचारों तारोंको रोका गया। डेढ़ मास बाद 'ब्लिट्ज' ने नई दिल्लीसे अपना विशेष सम्वाददाता माया देवीकी ससुराल भेजा और माया देवीका बयान छापा। 'पोलिटिकल-इकानामिक वीकली' ने भी अपना विशेष प्रतिनिधि रतनपुर गांव भेजा। वह स्वदेश कुमारी डाकूका नाम बोलते हुए गांव पहुँचा। गांववालोंने कहा "इस नामकी हमारे गांवकी कोई बेटी नहीं है।" सहसा एक सज्जनके ध्यानमें आया, यह जज्जन बागपतके थानेसे यह नाम लेकर पूछ-ताछ कर आ रहे हैं। गांव वालोंने तब बताया हमारी बेटीका नाम 'माया देवी' है। माया, परन्तु इस समय गांवमें नहीं है, उसको अन्यत्र भेज रखा है, क्योंकि उसके प्राणोंको खतरा है। २०,००० रुपये नकद देनेकी बात है, यदि वह अपना बयान बदल दे। यह प्रतिनिधि रातौड़ी गांव पहुँचा, वहां उसे एक झाड़ू देने वाली मिली। जो घटना घटित होनेके समय बागपतमें झाड़ू लगा रही थी। उसने कानों पर हाथ लगाकर कहा—'साहब मुझसे मत कुछ पूछिए, पुलिस को पता चल गया तो वह मुझे तुरन्त गोली मार देंगे, तब मेरे पांच बच्चोंका क्या हाल होगा?'

बागपत काण्डको राजनीतिक रूप कांग्रेस ने दिया या लोकदलने? प्रधानमंत्री नारायण-पुर तो पहुंची, पर बागपत या रतनपुर नहीं गई, क्यों?

आधुनिक भीष्मपितामह आचार्य कृपलानी (९६ वर्ष) को बागपतने लिखनेको बाध्य कर दिया, क्यों?

भारतके इतिहासमें १८ जून १९८० को पहली बार दिन-दुपहरीमें एक गर्भवती स्त्री विवस्त्रा की गई। शासन द्वारा पीटी गई, उसके जख्म डेढ़ मास बाद भी भरे नहीं। नंगी बाजार में ले जाई गई। थानेमें ९ व्यक्तियोंने शील भंग किया, वह अंग ही बेकार हो गया। हस्प-तालमें ६ टांके लगाये गये। माया देवी चार भाइयोंकी बहन है। बड़ा भाई सेनामें है, इसकी लड़कीके व्याहमें माया देवी रतनपुर जा रही थी। बरात आ गई थी। पर बेटी नहीं आयी। विवाहके ६ वर्ष बाद कन्या गर्भवती हुई थी, १७५ बीघा जमीनकी खेती करने वाले पिता बेटीको देखनेको उत्सुक थे। पर उनको १९

जूनको पता चला लड़की हस्पतालमें है, किन्तु उससे मिल नहीं सकते। यदि रतनपुर गांवको बागपतका समाचार उसी दिन मिल जाता तो 'चौरीचौरा काण्ड' की पुनरावृत्ति हो जाती। रतनपुरके लोग डेढ़ मासके बाद भी गुस्सेमें भरे थे, कहते थे—'द्रोपदीकी लाज तो कृष्ण भगवान्ने बचाई थी, पर हम अपनी बेटीकी लाज नहीं बचा सके। मुकद्मा भी नहीं चला सकते। जांच कराई जा रही है, जिससे पुलिस पर हम मुकद्मा न चलावें।'

पुलिसने घृणित निन्दित व वीभत्स कार्य करनेके बाद माया देवीको लाशके समान थाने के बाहर आहातेमें घास पर फेंक दिया था। श्रीमती गांधीके दुर्भाग्यसे सायंकाल दो स्थानीय वकील श्री तोमर और श्रीवीरसिंह थाना पहुंचे, उन्होंने माया देवीको इस अवस्थामें देखा, रक्तस्राव जारी था। इनके कहने पर पुलिसने माया देवीके छीने ट्रंकसे जो वह भतीजीको देनेके वास्ते ले जा रही थी, साड़ी और ब्लाउज निकाल कर दिये। फिर हस्पताल भिजवाया। 'ब्लिट्ज' यह तो पूछता है—'पांच घण्टे देरसे क्यों मायाको हस्पताल भेजा गया?' पर इतना नहीं कह सकता कुकर्मकी साक्षी तो माया ही अकेली है, इसको मिटा देने पर इन्दिरा-सरकारको दोषी ठहरानेका क्या कोई साहस करता?

बागपतमें जो कुछ हुआ वह शासनकी इच्छा और सहमतिसे हुआ, जनताके मनमें बैठी धारणा सर्वथा निर्मूल नहीं। गृहमंत्रीके परामर्श पर माया देवीको प्रधानमंत्रीसे मिलाया गया। प्रधानमंत्रीने कहा—'एकान्तमें बात करना चाहती हूँ।' क्या बात की? प्रधानमंत्री ने पूछा क्या गहनोंकी सूची बनाई है? मायाने जवाब दिया नहीं। दूसरा प्रश्न भी इसी सम्बन्ध में था, गहने लगभग २०,००० रुपये के होंगे। यह इस समय भी पुलिसके पास है। इससे पहले महिलाओंके शिष्टमण्डलसे कहा था "मेरठ कांग्रेसकमेटीकी दूसरी रिपोर्ट है।" पार्लियामेण्टमें कांग्रेसी सदस्योंने—महिलाओं ने भी पुलिसके कार्यका समर्थन किया और कहा 'वह डाकू है।' कांग्रेसकी दृष्टिमें नारीका कोई गौरव और सम्मान नहीं। मनुकी इस बातमें विश्वास नहीं करती—"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।" भारत विभाजक कांग्रेसको भारतीय होनेका कोई गर्व नहीं। प्रधानमंत्रीसे जब माया देवी मिली थी उस समय भी चार टांके लगे हुए थे। प्रधानमंत्री को क्या भारतीय नारी होनेका तनिक भी गौरव है। माया देवीकी आयु २३ वर्ष है। क्या गृहमन्त्रीके समान प्रधानमंत्रीने मायाको बेटी मानकर बात की? नारीके सम्मानसे अधिक कांग्रेसकी प्रतिष्ठाकी चिन्ता थी!

भ्रान्त धारणा—आचार्य कृपलानी तक मानते हैं कि भारतकी साम्राज्ञी द्रौपदीका दु:शासनने चीरहरणका प्रयत्न किया। पाण्डवोंसे द्वैतवनमें कृष्ण मिलने आए, उस समय द्रौपदीने यही रोना रोया, उसके अवभृथस्नानसे पवित्र केशोंको दु:शासनने खींचा। कृष्ण जब हस्तिनापुर जाने लगे और भीम तकने कृष्णसे कहा युद्ध न होने दो। उस समय द्रौपदीने अपने खुले बालोंको दिखाते हुए कहा—'इन केशोंके अपमानकी बात कृष्ण मत भूलना।'

'बेणी-संहार नाटक' सम्भवत: ८वीं शती

का है। इसमें भीम द्रौपदीकी विषण्णता दूर करनेके लिए अपनी पुरानी प्रतिज्ञाको निम्न शब्दोंमें दुहराता है–

चंचद्भुजभ्रमितचण्डगदाभिघात-
सचूर्णितोरुयुगलस्य सुयोधनस्य।
स्त्यानावबिद्धघनशोणितशोणपाणि-
रुत्तंसयिष्यति कचांस्तव देवि ! भीमः ॥

भीम सुयोधनकी गदासे जंघा तोड़ने और दुःशासनके रक्तसे सने हाथोंसे द्रौपदीकी खुली बेणी बांधनेकी ही बात कहता है। 'वेणी-संहार नाटक' का नाम भी यही बताता है।

अतः बागपतके बाजारमें कांग्रेस शासन ने भारती नैतिक आदर्शों और भारती दिव्य महती संस्कृतिकी दिनदहाड़े लगभग ढाई हजार भीत आतंकित लोगोंके सामने होली की, सूर्य भगवान् इस होलीके साक्षी हैं। यह होली अंग्रेजी राजके लिए काल सिद्ध होगी। भारत की आत्मा अमर है। अंग्रेजी राजकी होली होकर रहेगी। नैतिकताका यह पतन, विनाश, भारतके अस्तित्त्वको चुनौती है। यह राजनीतिक ही नहीं आत्मिक प्रश्न है। भारत आज भी जीवित है अपने उच्च नैतिक आदर्शों के कारण।

भारतकी संस्कृति आज भी जीवित है भारतीय नारीकी भक्तिके कारण। कांग्रेसने उसे नष्ट करनेका घृणित-प्रयत्न किया। माया देवी पर पड़े स्लीपरोंकी मार वस्तुतः भारती संस्कृति पर निर्मम प्रहार है। इस प्रहारकी गूंज प्रत्येक भारतीके हृदयसे उठेगी और उसमें अंग्रेजी राज भस्म हो जायगा। यह भारतमें प्रति दिन हो रही घटनाएं क्या यही सत्य नाना रूपोंमें नहीं कह रही।

भारती राष्ट्रवाद पर एक और घातक प्रहार

भारतविभाजनके बाद अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटीका ही अन्त कर देना चाहिए था। भारतविभाजनका मूल कारण अलीगढ़ ही है। इसके ही छात्रोंने पाकिस्तानसे हिन्दुओं को बाहर निकाल दिया। इसके बाद भी इस अराष्ट्रीय अभारतीय संस्थाको मान्यता देना, दरिद्र दीन जनताके पसीनेकी कमाईसे मूर्तिमान भारत अभक्ति और विद्रोहको पालना, भारतकी राष्ट्रके प्राणोंको लेनेका कांग्रेसका अत्यन्त गर्हित प्रयत्न है। यह राष्ट्रवादके मूलमें मट्ठा डालनेका प्रयत्न है। शिक्षामें साम्प्रदायिकता, मजहबी कट्टरताको स्थान देना 'सेक्युलर' शब्द का उपहास करना है।

मुस्लिम शासन ७०० वर्षोंमें जो न कर सका वह श्रीमती इन्दिरा गांधी और कांग्रेस कर रही है। इस्लामका केन्द्र अलीगढ़ नहीं बन सकता और न बनेगा। भारतकी मट्टीका अपमान कर इस्लामका पौधा रोपकर कांग्रेस उन करोड़ों लोगोंको जो भयसे, लोभसे और अन्य किसी कारणसे जैसे मेव प्राणभयसे, सदर बाजार दिल्लीके खत्री जजीयासे बचनेके लिए, शेख अब्दुल्लाके दादा विवाहके लिए भारतीयताका त्याग कर मुसलमान हो गये उन्हें कांग्रेस कह रही है, मुसलमान बने रहो, भूल जाओ अपने पूर्वजोंको, बाप-दादाओंको, बस कांग्रेसको वोट दो। १९४७-४८ में मेवोंसे यही कांग्रेसने कहा था। ये कराचीसे लौटाए जाने पर भारत लौटकर इस्लाम त्यागनेको तय्यार थे। नेहरू-सरकारने फौरन आचार्य विनोबा भावेके नेतृत्वमें एक मण्डली भेजी और इनसे कहा "मुसलमान ही रहो, इस्लाम

छोड़नेकी कोई जरूरत नहीं है।" कांग्रेस भारतको अखण्ड बनानेकी विरोधी है, अतः सौदी अरेबियाकी मददसे अलीगढ़को मक्का बनाना चाहती है। मक्का खतरेमें है, किन्तु संस्कृतिकी आधार भूमि है, देश है, इसका इतिहास है। 'सेक्युलर' शब्दका जाप करते हुए मज़हबके आधार पर विश्वविद्यालय बनाना और उस पंथके लोगोंको व्यवस्थाका भार सौंपना कर-दाताओंके पैसेका अपव्यय और दुरुपयोग करना है। शिक्षा पूर्णतः भारतीय होनी चाहिए। सरकारी पैसा मज़हबी शिक्षा पर खर्च नहीं होना चाहिए। कांग्रेस यह कर अपनी मृत्यु बुला रही है और भारतके शत्रु इस्लामका गौरव एवं बल बढ़ा रही है। इस प्रकार इस्लामको सामान्य जनताकी नज़रोंमें गिरा रही है। इसके बाद क्या इस्लामी समान व्यवहार समान अधिकारकी मांगके पात्र बने रहेंगे? मुस्लिम भारतमें ही न रहेंगे। अपने रक्तको भूलने वाला, अपने पूर्वजोंको भुलाने वाला उन्नत नहीं हो सकता। इस ध्रुव सत्यकी अवहेलना कर स्थापित किया अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय क्या कभी भी शिक्षाके क्षेत्रमें प्रतिष्ठा और सम्मान पा सकता है? भारतका अहित कर क्या इस्लाम कभी विश्व-इस्लाम बन सकेगा? लखनऊके शिया १९८० में ईद क्यों नहीं मना रहे?

मँहगाई मार गई

युद्ध कालसे चली आ रही, सतत बढ़ती आ रही, १९८० में मँहगाई असह्य हो गयी। चायका एक प्याला बाजारमें ४० नहीं ५० पैसेका मिलता है। क्या यह पेट्रोलकी कीमत बढ़ाने मात्रसे हुआ? नहीं, मास्को भक्तिके कारण, कांग्रेसके जीवनका आधार सत्य नहीं है, इस देशकी मान्यता है :—

सत्येनोत्तमिता भूमिः सूर्येणोत्तभिता द्यौ।
ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधिश्रितः।
(अथर्व—१४)

यह ऋग्वेदमें भी है, भूमि सत्य पर टिकी है, द्यौ सूर्यके सहारे टिका हुआ है। आदित्य-मण्डल ऋत-नियमों शाश्वत नियमों से टिका हुआ है।

कांग्रेस असत्य पर आधारित है। फिर बजटके बाद थोक भावोंका सरकारी निर्देशांक ऊंचा ही ऊँचा जाय तो विस्मय क्यों?

मंहगाईका मूल कारण है, अंग्रेजी राज। इसको चलानेके लिए केन्द्र और राज्यों एवं यूनियनोंमें ८८ लाख सरकारी कर्मचारी हैं। इसके विपरीत निजी आंचलके संगठित उद्योगोंमें ६२ लाख कर्म-कार हैं। शासन-व्यय सर्वथा अनुत्पादक है। यह कमसे कम होना चाहिए। इसके विपरीत यह बढ़ता जाता है। ऊपरसे ओवर-टाइमका खर्च बढ़ रहा है। अंग्रेजी राजके चलते मंहगाईके कम होनेकी आशा करना वन्ध्याके माता होनेकी आशा करनेके समान है। दूसरा मुख्य कारण है सरकारी आंचलके उद्योगोंका बढ़ता घाटा। घाटा कम करनेके विचारसे इनका दाम बढ़ाया जाता है। जैसे कोयला कम्पनीके लाभको बढानेके उद्देश्यसे १९५९ में पांचवीं बार १५ प्रतिशत कीमत बढ़ाई गई। घाटा कम हो गया। कोयला जीवनोपयोगी वस्तु है। ऊर्जाका मुख्य स्रोत है। इसका मूल्य बढ़ानेसे चारों ओर कीमतें

(शेष पृष्ठ ८१-८२-८३-८४ पर)

'ज्योतिष्मती' नववर्षांकके लिए विशेष लेख

भारतीय काल-गणनामें १३५ वर्षोंका व्यवधान-चमत्कार

[लेखक :—श्री पं० चन्द्रकान्त बाली, शास्त्री]

प्रकृत लेखकने 'ज्योतिष्मती' के विज्ञ पाठकोंसे एक वायदा किया था। मेरी अनुसन्धान पट्टी पांच संवत् युगल ऐसे भी हैं, जिनमें १३५ वर्षोंका व्यवधान[1] है। [इस विषय पर कभी फिर विस्तृत लिखनेका इरादा है।] लीजिए, हमें अपना वायदा पूरा करनेका अवसर मिल गया है; वह वायदा वसूल कीजिए—

हम भली भांति जानते हैं : संवत्-युगलोंमें चमत्कारिक १३५ वर्षोंका व्यवधान कहीं १३४ वर्ष है, और कहीं १३६ वर्ष है। हमने बीचका मार्ग अपना लिया है—यह स्मरण रखनेकी बात है। हमारा यह अनुसंधान समस्त इतिहासकारोंके लिए एक पूर्व चेतावनी है कि काल-गणनाके प्रसंगमें संभल-संभल कर कदम रखनेकी जरूरत है, सौ बार सोचकर निर्णय लेनेकी अपेक्षा है। यहां 'पूर्वाग्रह' का सिक्का चलने वाला नहीं है। काल-गणना एक विज्ञान है। यहां विवेक-पूर्ण निर्णय लेनेसे ही प्रशस्त मार्ग मिल सकता है, अन्यथा नहीं।

हमने पांच संवत्-युगलोंको पांच अध्यायोंमें विभक्त करके लिखा है। इस पद्धतिसे समझनेमें, स्मरण रखनेमें तथा उन्हें अलग-थलग करके पहचाननेमें सुविधा रहेगी।

पहला अध्याय : विक्रमसंवत् बनाम शक-संवत्

भारतीय इतिहासमें अनेक विक्रमादित्य हुए[2] हैं। उसकी तुलनामें अनेक शक-संवत् भी देखनेमें आएं हैं। यथा—

विक्रम संवत् : श्रीस्कन्दपुराणने भारतीय इतिहासका प्रसंग उठाते हुए प्रथम विक्रमादित्य का समय इस प्रकार निर्दिष्ट किया है :—

"त्रिषु वर्ष-सहस्रेषु विंशत्यधिकेषु च [?]
भविष्यं विक्रमादित्यं राज्यं सोऽथ प्रलप्स्यते॥"

अर्थात् सप्तर्षि-संवत् ३०२० में राजा विक्रमादित्य[3] होगा। हमने सप्तर्षि-संवत्को ईसवी सन्में परिणत करनेका नियम आविष्कृत किया है, जो इस प्रकार है—(क) प्रस्तुत संख्यामेंसे ६२८ वर्ष घटाने चाहिएं, कारण, महाभारत संग्राम सप्तर्षि-संवत् ६२८ में हुआ था। [इस पक्षके

१. 13 जनवरी 1979, 22 वर्ष/2 अंक, पृष्ठ 17—कालम 1, पंक्ति 3.
२ ज्योतिष्मती 22/1, सन् 1979, पृष्ठ 32—टिप्पणी सहित
३. वही, लेखकी प्रतिकृति उतारते समय हमसे एक भूल होगई—वहां हमने टिप्पणी संख्या —1 में ईसवी सन् 486 लिखा है, जो होना चाहिए 756,

कतिपय अन्य विकल्प भी हैं', संग्राम-पूर्ववर्ती संख्या हटानेसे गणना सरल हो जाती है। अतः ३०२०—६२८=२३९२ सौर वर्ष शेष रहे । (ख) अवशिष्ट सौर वर्षोंको ३१४८ ईसवी पूर्व से पुनः घटाना चाहिए, कारण, महाभारत संग्राम ३१४८ ईसवी-पूर्वमें हुआ था। ऐसा करनेसे, ३१४८—२३९२=७५६ ईसवी पूर्व फलित हुआ। अर्थात् सप्तर्षि-संवत् ३०२०=७५६ ईसवी पूर्व में किसी विक्रमादित्यकी सूचना श्रीस्कन्दपुराणकी है।

यहां प्रश्न होना स्वाभाविक है कि सप्तर्षि-संवत् ३०२० ईसवी पूर्व ७५६ के समकक्ष ही क्यों है? प्रश्न सामयिक है, और इसका उत्तर भी बड़ा सरल है। ज्योतिर्जगत्के स्वनामधन्य श्रीमद् यल्लयार्यने लिखा है :

"बाणाब्धिगुणदस्रोनाः शूद्रकाब्दाः कलेर्गताः"

अर्थात् कलिसंवत् २३४५ में शूद्रक-संवत्की स्थापना हुई । सबको विदित है कि ३१०१ ईसवी पूर्वमें कलि-संवत्की स्थापना हुई। सो, गणना करने पर ३१०१—२३४५=७५६ ईसवीपूर्व ही प्रतिफलित हुआ है। इस सूत्रसे श्रीस्कन्दपुराणकी स्थापनाको जबरदस्त आधार मिल गया है। इस काल-गणनाके सूत्रसे 'विक्रमादित्य' और 'शूद्रक' की अभिन्नता बतानेमें कोई छल-छिद्र नहीं है। **प्रथम विक्रमादित्यका समय ७५६ ईसवीपूर्व बताना प्रमाण-सिद्ध हैं।**

शक-संवत्—विक्रम-संवत्का युगल-बद्ध संवत् 'शक' नामसे पहचाना जाता है। प्राचीनतम शककालकी सूचना वराहमिहिरकी है :—

"आसन् मघासुमनयः शासति पृथिवीं युधिष्ठिरे नृपतौ
षट्द्विक पंच-द्वियुतः शककालः तस्य राज्यस्य।"

उक्त आर्यामें २५२६ युधिष्ठिर-संवत्के पश्चात् 'शक-संवत्' की स्थापना सभीको स्वीकार्य है। परन्तु युधिष्ठिरका राज्य-स्थापन कब हुआ? इस पर वितंडावाद खड़ा होगया है। सभी पक्ष इस संख्या [२५२६] को ठेलठालकर अपने गन्तव्य [मन्तव्य] तक पहुंचा देनेमें चेष्टावन्त नज़र आते हैं। हम इस समय किसी मतके निराकरणमें रुचि नहीं ले रहे। हम अपने आपको बहु साक्ष्य-सिद्ध-सिद्धान्तको ही प्रकाशित करनेमें सीमित रखे हुए हैं। हम अनेक बार लिख चुके हैं—'महाभारत-संग्राम' ३१४८ ईसवीपूर्वमें हुआ था, और तत्पश्चात् ही युधिष्ठिर-संवत्की बात व्यावहारिक है। अतः वहीं [३१४८ ई० पू०] से काल-गणना करते हैं, यथा—३१४८—२५२६=६२२ ई०पू० में शक-कालकी स्थापना-स्वीकृति कई अन्य सूत्रों अथवा साक्ष्योंसे भी अनिवार्य लगती है।

इतना ऊहापोह करनेके पश्चात् अपने मौलिक लक्ष्यकी ओर अग्रसर होते हैं। विक्रमादित्य का समय ७५६ ईसवीपूर्व है, प्राचीनतम शक-संवत् ६२२ ईसवीपूर्वमें स्थापित हुआ, क्या इस संवत्-युगलमें १३४ वर्षोंका चमत्कारपूर्ण व्यवधान नहीं है? यथा—७५६—१३४=६२२ ई०पू०, इत्यादि।

यह १३४ वर्षीय व्यवधान केवल गणितका जोड़-तोड़ नहीं है, बल्कि इतिहासका विचारणीय

सत्य है। स्पष्ट है, इन उपलब्धियोंके साधन सर्वथा विभिन्न एवं परस्पर निरपेक्ष हैं। श्रीस्कन्दपुराण, ज्योतिषदर्पण (यल्लयार्य-विरचित), बाराही-संहिता—ये ग्रन्थ एक लेखकके नहीं है। अतः इन ग्रन्थोंकी समवेत उपलब्धियों पर शंका करना निर्मूल है।

दूसरा अध्याय : शक-संवत् बनाम विक्रम-संवत्

अब ज़रा जैन काल-गणनाकी ओर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

जैन-आचार्य इस बातको मानते हैं कि तीर्थङ्कर महावीर स्वामीका परमनिर्वाण ५२७ ई० पू० में हुआ था। प्रकृत लेखक इस परम्परासे सहमत नहीं है। लेखकके अनुसंधानके अनुसार महावीर स्वामीका निर्वाण १२२७ ईसवीपूर्वमें हुआ था। हम इसी स्थापनाके संदर्भमें विचार करेंगे।

शक-संवत् :—हमारा प्राचीनतम शकसंवत् वही देखा-पहचाना है। अर्थात् ६२२ ईसवी-पूर्व से प्रचलित शक-संवत् यहां भी अभिप्रेत है।

विक्रम-संवत् :— यहां एक बात विशेष ध्यान देने योग्य है। वह यह है कि पूर्व-लिखित संवत्-युगलमें विक्रम-संवत् पूर्ववर्ती है, और उसका सहयोगी संवत् परवर्ती है, प्रस्तुत संवत्-युगलमें शक-संवत् पूर्ववर्ती है, और उसका सहयोगी संवत् परवर्ती है। इस 'विक्रम-संवत्' के बारेमें अलबैरूनी लिखता है : "श्रीहर्ष और विक्रमादित्यके बीच ४०० वर्षों का अन्तर[1] है।" अत्रोल्लिखित श्रीहर्ष भी विक्रमादित्य है—यह अनुमानगम्य है। श्रीहर्षका राज्यान्तकाल ४५८ ई० पू० है। मान लो अलबैरूनी द्वारा प्रस्तावित श्रीहर्ष (विक्रमादित्य) ने २८ वर्ष राज्य किया हो तब उसका शासना-रंभकाल ४५८+२८=४८६ ईसवीपूर्व ठहरता है। हमारा यह अनुमान निराधार नहीं है। नेपाल के राजाओंने इसी हर्ष-संवत् [४८६ ई०पू०] का उपयोग किया है। केवल विस्तारके भयसे हम उसका उल्लेख नहीं कर रहे।

जैन-तीर्थ 'श्रवण बेलगोला' पर अवस्थित एक शिलालेखसे नया प्रकाश मिलता है। उस पर लिखा है—"**महावीर संवत्** २४९३ **शक-संवत्** १८८८ **विक्रम-संवत्** १७५२" इत्यादि। यह शिला-लेख १२६६ ईसवीमें उत्कीर्ण हुआ था। म०म० गौरीशंकर हीराचंद ओझाने इसे जाल घोषित किया[2] है। हम इसे ज़ाल नहीं मानते, बल्कि परम प्रमाण मानते हैं। इस संदर्भकी काल-व्यवस्था इस प्रकार है—

[क] **महावीर-संवत्** २४९३—१२२७=१२६६ ईसवी,

[ख] **शक-संवत्** १८८८—६२२=१२६६ ईसवी, तथा

[ग] **विक्रम-सवत्** १७५२—४८६=१२६६ ईसवी।

इन गणनाओंमें पहले **महावीर-संवत्** पर विचार करते हैं। जैन-समाजकी सर्व-सम्मत

---

१. अलबैरूनीका भारत : तीसरा भाग, पृष्ठ 7 [अंग्रेजी संस्करण पृष्ठ 205]

२. भारतीय प्राचीन लिपिमाला : पृष्ठ 160.

मान्यतासे हट कर हमने महावीर-संवत् १२२७ ईसवीपूर्वसे माना है । हमारी स्थापनाके पीछे 'श्रवण वेल-गोला'के शिलालेखके अतिरिक्त अन्य स्रोतोंका आधार भी उपलब्ध है । शकसंवत् का उद्‌घोषकर्ता आचार्य वराहमिहिर है। श्रवणवेलगोला भी साक्ष्यने आचार्यकी स्थापनाको अखण्डनीय आभार दे दिया है, और परम्परागत रूपसे ६२२+२५२६=३१४८ ई०पू० में महभारत-संग्राम होनेकी बात अब स्वीकरणीय लगती है।

पहले अध्यायमें लिखित संदर्भमें तथा प्रस्तुत अध्यायमें संसुप्त संदर्भमें एक विचित्र बात देखनेमें आई है, वह यह कि विक्रम-संवत्, शक-संवत्, तथा विक्रम-संवत् एक अभेध शृंखलामें जुड़े हैं और वह शृंखला भी १३५ वर्षोंके व्यवधानकी है ।

विक्रम-संवत्	शक-संवत्	विक्रम-संवत्
७५६— १३४=	६२२— १३६=	४८६

इस शृंखलामें आबद्ध शक-संवत्‌ने श्रीस्कन्दपुराण तथा आचार्य वराहमिहिरकी 'आप्तता' पर जैन-समाजकी छाप लगा दी है और अलबैरूनीके कथनको ज़ोरदार समर्थन दिया है।

कुछ विद्वान् ईरानके राजा साइरस द्वारा स्थापित काल-गणनाको प्राचीनतम शक-संवत्‌के रूपमें अंगीकार करते हैं और उसका समारंभ ५५० ईसवीपूर्वसे मानते हैं। वे सांवत्सरिक विद्वान् अपनी काल-गणनाको ऊपर कथित तीन-तीन कड़ियों वाली शृंखलामें किसी भी विधिसे कहीं भी सन्नद्ध नहीं कर सकते ।

अलबैरूनी द्वारा प्रस्तावित तथा श्रवणवेलगोला द्वारा समर्थित विक्रमादित्यका समय ४८६ मान लेने पर क्या शक-संवत् बनाम विक्रम-संवत्‌के अन्तरालके लिए १३६ वर्षोंसे इनकार किया जा सकता है ? क्या यह व्यवधान चमत्कारपूर्ण नहीं है ? है, यथा—६२२—१३६=४८६ ईसवी-पूर्वका साल ।

तीसरा अध्याय : (१) मालव-संवत् बनाम शक-संवत्

यह संवत्-युगल भी जैन-साहित्यकी उपलब्धि है ।

हमने बड़े कड़े अनुसंधानके बाद चार मालव-गणस्थिति-काल स्वीकार किये हैं, यथा—

१ : प्रथम मालव-संवत्=९४ ईसवीपूर्व (गर्दभिल्ल द्वारा स्थापित)

२ : द्वितीय मालव-संवत्=७० ईसवी पूर्व (गन्धर्वसेन द्वारा स्थापित)

३ : तृतीय मालव-संवत्=५८ ईसवीपूर्व (प्रचलित विक्रम-संवत्), तथा

४ : [कृत] मालव-संवत्=३६ ई०पू० (विक्रम द्वितीय द्वारा स्थापित)।

इस प्रकार चार मालव-गणस्थितियोंका स्थापन मालवों और कुशाणोंके परस्पर संघर्षके परिणाम स्वरूप हुआ है । आश्चर्यकी बात यह है कि इन सबके नामोंमें बड़ी दुरूह पुनरावृत्ति है, यथा-मालवगण स्थितिकाल=मालव-संवत्=विक्रम-संवत्—ये नाम सभी पर चरितार्थ होते हैं । केवल चौथी 'काल-गणना' का नाम 'कृत-संवत्' है, जो पूर्व प्रचलित संज्ञाओंसे निराला है और वैज्ञानिक है । 'कृत'

अर्थ है चार अर्थात् कृत-संवत्=चतुर्थ संवत्।

मालव-संवत् : इस संवत्का स्थापित करने वाला राजा गर्दभिल्लका पुत्र गंधर्वसेन है इस संवत्की स्थापना जैन-साहित्यमें प्रकारान्तरसे सूचित है। जैन ग्रन्थोंसे पता चलता है कि विक्रमने विक्रम-संवत् १३ में संवत्सरकी स्थापना[1] की। यथा :—

"विक्रम रज्जाणंतर तेरस वसेसु वच्छर पवित्तो"

जैन-मुनि इसका अर्थ करते हैं : अपने राज्य स्थापित करनेके १३ वर्ष-पश्चात्, वत्सर-प्रवृत्ति अर्थात् संवत्-स्थापना की। हम इस अर्थसे सहमत नहीं। जैन-ग्रन्थ इस बातके गवाह हैं कि वीर-निर्वाणसे ४६१वें वर्षमें उज्जयिनीमें शकराज्य स्थापित[2] हुआ। उन्हींके गणनानुसार ५२७—४६१= ६६ ईसवी पूर्वमें 'उज्जयिनी' शकराजाके आधीन हो गई थी। गन्धर्वसेन केवल ४ वर्ष ही शासन कर सका। अतः उज्जयिनीमें १३ वर्ष निरन्तर राज्यकालके अभावमें उससे १३ वर्ष पश्चात् संवत्सर स्थापनकी बात बेमानी है। अलबत्ता द्वितीय गणस्थिति कालसे [जिसे मालव-संवत् अथवा विक्रम-संवत् नामसे भी पहचाना जाता है] १३ वर्षोंका अन्तराल व्यतीत करके **विक्रमसंवत्** [५७ ई०पू० वाला] की स्थापना बुद्धिगम्य है।

स्पष्ट है—विक्रम-संवत्से पहले भी कोई विक्रम-संवत् था, जिनके मध्य केवल १३ वर्षीय व्यवधान वाञ्छनीय है। हमने इसका नाम **मालव-संवत्** लिखना ही उचित समझा है, लिखा है। **उक्त मालव-संवत्का समय** ७० [=५७+१३] **ईसवी पूर्व माना** है। इस संवत्की उपलब्धि विशुद्ध जैन-शास्त्रीय है। इस संवत्का प्रयोग 'वीसलदेव रासो' में देखा गया है।

शक-संवत् : हमने अपने अनुसंधानके बल पर नौ [९] शक-संवत् ढूंढ निकाले हैं। एक शक-संवत् [६२२ ई०पू०] का परिचय पीछे दिया जा चुका है। अन्य शक-संवत्का परिचय प्रस्तुत है। यथा :—

अबूरिहां अलबेरूनीने लिखा है : "जब अलैग्जैंडरका समय १३४०वां वर्ष था, तब शककाल का ९५२वाँ वर्ष था[3]।" बात बड़ी सरल है। हम ६५ ईसवीसन्से एक शककाल[4] मानते हैं। इस शककालको ईसवी सन्में पलटनेके लिए अभीष्ट संख्यामें ६५ जमा करने होते हैं। ६५+९५२ =१०१७ **सौर वर्ष**। इस संख्याको अलैग्जैंडरके समयसे घटा देते हैं :१३४०-१०१७=३२३ ईसवीपूर्वमें अलैग्जैंडरका निधन सर्व-सम्मत है। ६५ ईसवी सन्का शककाल क्वचित् ६६ ईसवी सन्से भी गिना जाता है। हम इस प्रसंग पर अत्यन्त विस्तारसे लिख[5] चुके है। सिकन्दरकाल

---

१. वीर निर्वाण-संवत् और जैन कालगणना : मुनि कल्याणविजय, पृष्ठ 146

२. वीरजिणं सिद्धिगदे चउसद इगि सट्ठिवास परिमाणे
कालम्मि अदिक्कं ते उप्पणो एक सगराओ। —त्रैलोकाविज्ञप्ति 86.

३. अलबैरूनीका भारत [अंग्रेजी रूपान्तर भाग 1, पृष्ठ 60]

४. 'ज्योतिष्मती' 22/1 पृष्ठ 22.

५. साहसांक : हिन्दुस्तानी एकेडेमी पत्रिका, वर्ष 37 अंक 1, पृष्ठ 60

तथा शककालको ठीक-ठीक समझनेके लिए निम्न सारिणी द्रष्टव्य है :—

सिकन्दरकाल	शककाल	ईसवीपूर्व/ईसवीसन्
००	—	३२३ ई० पू०
३८८	००	६५ ईसवी
१३४०	९५२	१०१७ ईसवी

अर्थात् ६५ ईसवीसे चलने वाला शककाल ही सिकन्दरकालसे तालमेल रखता है, ७८ ईसवीसे चलने वाला 'शक-संवत्' नहीं।

कहना न होगा, मालव (२) संवत् तथा शककालके मध्य १३५ अथवा १३६ वर्षोंका व्यवधान यहां वाञ्छनीय है। यथा ७०+६५=१३५ अथवा ७०+६६=१३६ वर्ष उभयत्र घटित है।

चेतावनीके तौर पर यह लिख देना ज़रूरी है कि एक जैन साक्ष्यका सहारा लेकर अगर कोई अनुसन्धायक मालव-संवत्से ५७ ईसवीपूर्वकी कालगणना सामने रख लेगा और ७८—ईसवी सन्के शककालसे उसका तालमेल बैठानेका यत्न करेगा तो सिकन्दरकालसे उसका तालमेल बिगड़ जायगा। यथा—९५२+७८=१०३० ईसवी सन्, स्मरण रहे अलबैरूनीका भारत-निवासीय काल १०३०—३१ ईसवी सन् बताया जाता है, परन्तु इससे सिकन्दरकालका तालमेल नहीं है। यथा—१३४०—१०३०=३१० ईसवीपूर्वमें सिकन्दरका निधन मानना बिलकुल अनैतिहासिक है। अतः प्रस्तुत जैन संदर्भ—

"ततो वर्षशते पंच-त्रिंशता सन्धिके पुनः।
तस्य राज्ञोऽन्वयं हत्वा वत्सरः स्थापितः शकैः।"

—प्रभावकके अर्थके अनुसार ७० ई० पू० के मालव संवत्के साथ ६५ ईसवीके शककालका तालमेल ऐतिहासिक है और ५७ ई० पू० के मालव-संवत्के साथ ७८ ईसवीके शककालका जोड़, तोड़ अनैतिहासिक है। अतः यहां सावधानीकी परम आवश्यकता है।

चौथा अध्याय। (२) विक्रम-संवत् बनाम शक-संवत्

१३५—वर्षोंके व्यवधान पर जीवित एवं गतिशील संवत्-युगल, अर्थात् विक्रमसंवत् [५८ ईसवी पूर्व] तथा शक-संवत् [७८ ईसवी] बड़ा प्रसिद्ध है और प्रत्येक पंचांगकी आधारभूमि है। विक्रम-संवत् २०३७ एवं शाके १९०२, ई० पू० ५७+७८ ईसवी सन्में १३५ वर्षोंका व्यवधान कर-स्थित पद्मपत्रकी तरह सर्व-संवेद्य है। प्रस्तुत निबंधमें उक्त संवत्-युगलका उद्बोधक संदर्भ प्रस्तुत करेंगे, ताकि पहले और तीसरे अध्यायमें उट्टंकित संवत्-युगलोंसे न्यारा-न्यारा करके उसे परख सकें।

विक्रम संवत् :—ज्योतिर्जगत्के महापण्डित श्रीयल्लयार्यने विक्रम-संवत्के बारेमें लिखा है :

"बाणाब्धि व्योमरामोना विक्रमाब्दा कलेर्गताः।"

अर्थात् कलिसंवत् ३०४३ बीतने पर विक्रम-संवत्की स्थापना हुई। कलि-संवत्को ईसवी सन्में परिणत करनेका तरीका बड़ा आसान है। ३१०१ मेंसे घटाए—३०४३=५८ शेष रहे। ५८ ईसवीपूर्वसे विक्रम-संवत्के प्रचलनकी बात असंदिग्ध है।

शक-संवत् :—भारतीय ज्योतिषाचार्योंने शक-संवत् भी कलि-संवत्के माध्यमसे लिखा है।

[क] "नन्दाद्रीन्दुगुणास्तथा शकनृपस्यान्ते कलेर्वत्सरा:।" —भास्कर
[ख] "कलेर्नवांगैकगुणा: शकावधे:।" —बटेश्वर

ये संख्याएं कलि-संवत् ३१७९ को प्रकाशित करती है। ठीक है: ३१७९—३१०१=७८ ईसवी सन्से शक-संवत् स्थापित हुआ।

यह संवत्-युगल १३६ अथवा १३५ अथवा १३४—अर्थात् तीनों विकल्पोंको आश्रय दिए हुए है, यथा—विक्रम-संवत् ५८ ई०पू० से १३६ वर्ष पश्चात् ५७ ई० पू० से १३५ वर्ष पश्चात् और (क्वचित्) ५६ ई० पू० से १३४ वर्ष पश्चात् शक-संवत्की सत्ता असंदिग्ध है।

इस प्रसंगमें तीन बातें विचारणीय हैं, यथा—

पहली बात : उक्त शककालकी स्थापना करने वाला शालिवाहन नहीं, बल्कि उसका पोता राजा विक्रमाङ्क[1] है। विस्मयकी बात है, दृग्गणितके वैज्ञानिक पक्षपाती भी यहां पहुँच कर घोर रूढ़िवादी बन गए हैं। शालिवाहन द्वारा स्थापित शक-संवत् ३२ ईसवीसे गिना जाता है। परन्तु पंचाङ्ग-प्रणेता इसे 'शालिवाहनीयशक' ही लिखते हैं, जो कि अशुद्ध है।

दूसरी बात : जहां कहीं संवत्-युगलमें विक्रमरहित केवल 'संवत्' लिखकर शकका उल्लेख हो और उनमें १३५ वर्षोंका व्यवधान परिलक्षित हो, तब वहां तीसरे अध्यायमें प्रतिपादित काल-गणना [अर्थात् ७० ई०पू० और ६५ ईसवीसन्] ही ग्राह्य होगी, अन्य नहीं। ऐसा संवत्-युगल केवल हस्तलेखोंमें ही मिलेगा।

तीसरी बात : किसी समय दक्षिणमें विक्रम-संवत् और शकसंवत् [५८+७८=१३६ का प्रचलन था, उत्तर भारतमें संवत् और शककाल [७०+६५=१३५] का प्रचलन था और इन संवत्-युगलोंको 'उत्तर' और 'दक्षिण' के नामसे पहचाना जाता था, परन्तु आज उत्तर-भारतकी परम्परा केवल पुस्तकोंमें रह गई है और दक्षिण-भारतकी परम्परा सार्वत्रिक हो गई है। इन संवत्-युगलोंमें तेरह वर्षोंका व्यवधान है। यद्यपि एक संवत्-परम्परा [७०+६५=१३५ वर्ष] लुप्त हो गई है और दूसरी संवत्-परम्परा [५८+७८=१३६] लोकप्रिय हो गई, परन्तु इनका षष्ठि-संवत्सरीय प्रयोग उत्तर-दक्षिणकी परम्परा और मान्यताओंका प्रतीक बनकर शेष रह गया है। पंचांग उठाकर देख लो प्रमाण मिल जाएगा।

१. श्रीनाथ वृत्तेः सकाशात् पंचोत्तर षट्शतवर्षाणि [605] पञ्चमाससुतानि गत्वा पश्चात् विक्रमांक शकराजो जायते। 605—527=78 ईसवी सन्।

पांचवाँ अध्याय : गुप्त-संवत् बनाम शक-संवत्

यहां हमें एक नए संवत्-युगलका परिचय मिला है। अब तक हमने केवल विक्रम-संवत् और शक-संवत्के विभिन्न 'युगल' देखे, परखे और पहचाने हैं, यहां विक्रम-संवत्का स्थान 'गुप्त-संवत्' ने ले लिया है। 'गुप्त-संवत्' के बारेमें हमारा चिन्तन नितान्त ऐकान्तिक है। यथा—

प्रथम गुप्त-संवत् = २७७ ईसवी सन् श्रीमत्स्यपुराणके अनुसार प्रथम चन्द्रगुप्तने आन्ध्र-वंशीय पुलोमावीको अपदस्थ करके मगध सत्ता हथिया ली। उस समय सप्तर्षि-संवत् ४४१७ तथा ईसवीं सन् २७७ था[1]। परन्तु इस बीच विश्वस्फणिसे उभरकर चन्द्रगुप्तको अपदस्थ कर स्वयं मगध-सिंहासनासीन हो गया।

द्वितीय गुप्त-संवत् = ३०७ ईसवी सन् : विश्वस्फणिने ३० वर्ष शासन किया। वह नपुंसक था। उसने गंगानदीमें कूद कर आत्म हत्या[2] कर ली। इस घटनासे रिक्त मगध सिंहासन पर चन्द्रगुप्त प्रथम पुन: पदासीन हो गया। द्वितीय गुप्त-संवत्की सूचना अलबैरूनीकी है। उसने लिखा है: शकसे २४१ वर्ष बाद गुप्त हुए। हमने शक-संवत् २४१ का संबंध साहसाङ्क शकसे जोड़ा है, जो ६६ ईसवीमें प्रतिष्ठित हुआ था। सो, २४१ + ६६ = ३०७ ईसवीमें गुप्त-संवत्की स्थापनाका प्रस्ताव हमारा है। इतिहासकार गुप्त-संवत् ३१६-२० ईसवीसे मानते हैं।

तृतीय गुप्त-संवत् = ३६४ ईसवी सन् : इस गुप्त-संवत्को प्रतिष्ठित करने वाला चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य था। मुद्राराक्षसके एक श्लोक[3] का ज्योतिष-परक अर्थ करके हमने ३६४ ईसवी सन्में गुप्त-संवत्की सत्ता प्रकाशित की है।

इस प्रकार प्रथमगुप्त-संवत् 'पौराणिक' है, दूसरा गुप्त-संवत् 'ऐतिहासिक' है और तीसरा गुप्त-संवत् 'साहित्यिक' है।

प्रस्तुत संवत्-युगलमें पौराणिक 'गुप्त-संवत्' ही प्रासंगिक है।

शक-संवत् : उज्जयिनीमें शकोंने ३८० वर्ष राज्य किया। शकवंशका आदिपुरुष शालिबाहन था, जिसने ३२ ईसवीमें शकराज्यकी स्थापना की। इस वंशका अन्तिम राजा विषमशील विक्रमादित्य था, जिसका राज्यान्त काल[4] ४१२ ईसवी है। यह काल-गणना उसके मरणोपरान्त आरंभ होती है। जैन-ग्रन्थोंमें इसी काल-गणनाका उपयोग हुआ है।

प्रस्तुत संवत्-युगलका काल-आकलन नितान्त निर्भ्रान्त है। गुप्त-संवत् [पौराणिक] का प्रतिष्ठान-वर्ष २७७ ईसवी है, उसमें जमा किए १३५ वर्ष [२७७ + १३५ = ४१२], तब विषमशील

---

१. तत्पुत्रं तु पुलोमानं विनिहत्य नृपार्भकम् ।
आन्ध्रेभ्यो मागधं राज्यं प्रसह्यापहरिष्यति ॥

२. विश्वस्फणि र्नरपतिः क्लीबासन्तति रुच्यते ।
जाह्नवीतीरमासाद्य शरीरं यंस्यते बली ॥

३. क्रूरग्रहः स-केतुः चन्द्रमसंपूर्णमण्डलमिदानीम् ।
अभिभावितुमिच्छति बलात् रक्षत्वेनं तु बुधयोगः ॥

४. 'ज्योतिष्मती' 22/1 ईसवी 1979, देखो विषमशील.

द्वारा स्थापित शक-सवत् [इसका अन्य नाम विक्रम-संवत् भी है] ४१२ से मान्यता प्राप्त है। मज़े की बात यह है कि इन १३५ वर्षोंका विकल्प १३४ अथवा १३६ वर्ष बिल्कुल नहीं है।

उक्त संवत्-युगलका प्रयोग बड़े विचित्र तरीकेसे देखनेमें आया है: **"चामुण्डरायका गुप्त संवत् १०३३ का एक ताम्रपत्र-शासन भारतीय विद्यापठीपत्र कार्तिक १९६६ पृष्ठ ८०-८१ पर छपा है। चामुण्डराजके अन्य शासन १०३३ के आसपास विक्रम संवतोंमें है। चण्डमहापुराण शक-सवत् ९०० [अर्थात् विक्रम-संवत् १०३५] में रचा गया**[1]।" यह उद्धरण श्रीभगवद्दत्तने प्रस्तुत किया है। हमारे आकलनके अनुसार चामुंडरायका समय १३१२ ईसवीके अनुरूप होना चाहिए। परन्तु दिवंगत भगवद्दत्तने गुप्त-संवत्के प्रतिष्ठापक चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यको ५८ ई० पू० का व्यक्ति मान कर उसका समय निर्धारित करनेके लिए शक संवत् [७८ ईसवी] का सहारा लिया है, जो हमारी समझके अनुसार अनैतिहासिक है। उक्त स्थापना न केवल अनैतिहासिक है, बल्कि अपौराणिक भी है। अत: अस्वीकार्य है। और-तो और, गुप्त-संवत्को ५८ ईसवीपूर्वकी कालगणना मान लेने पर तत्पूर्ववर्ती किसी शक-संवत्की कल्पना करनी होगी, जो गुप्तकालसे २४१ वर्ष पूर्व-प्रतिष्ठित हुआ हो। हम जानते हैं, श्रीभगवद्दत्त इस कल्पनाको मूर्तरूप देनेमें कभी दत्तचित्त नहीं रहे। दिवंगत भगवद्दत्तकी स्थापना पर दो बातों पर विचार करना समीचीन रहेगा।

पहली बात : श्रीभगवद्दत्तने लिखा है—"चामुंडराजके अन्य शासन [लेख] १०३३ के आसपास विक्रम-संवतोंमें हैं।" लेखककी पहली कमज़ोरी यहीं प्रकट हो जाती है कि उसने विक्रम-संवत् के संदर्भ उद्धृत नहीं किए। अगर वे संदर्भ उद्धृत होते तो काल-निर्णयमें आसानी रहती। फिलहाल इसी आकलन पर संतोष करना पड़ रहा है।

दूसरी बात : भगवद्दत्तीय उद्धरणमें 'गुप्त-संवत्' का प्रयोक्ता कोई और है, अर्थात् राजा चामुण्डराय है, और शक-संवत्का प्रयोक्ता तद्भिन्न व्यक्ति है, अर्थात् चामुण्डरायका आश्रित कवि है, जिसने 'चामुण्ड पुराण' लिखा है और समय शक-संवत् ९०० दिया है। यदि इनके परिणाम समन्वित न हों, तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं है।

उपसंहार

हमें काल-अनुसंधान करते समय अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा है। जहां-जहाँ दो संवतोंका उल्लेख देखनेमें आया, वहां-वहां १३५ वर्षोंका व्यवधान भी नजर आया। मन में प्रश्न उठना स्वाभाविक था—क्या यह सब जान-बूझकर किया गया है ?

उत्तर मिला—नहीं। हमने परख कर देखा कि इनके उपलभ्यक आधार भिन्न-भिन्न हैं जैसे प्रथम शक-संवत् [६२२ ई०पू०] की सूचना वराहमिहिरकी है, प्रथम विक्रमादित्यकी सूचना श्रीस्कन्द-पुराणकी है। इनमें १३५ वर्षोंका चमत्कारिक व्यवधान देख कर हम चकित रह गए। ऐसे ही अन्य

१. भारतवर्षका बृहद् इतिहास : भगवद्दत्त, द्वितीय भाग, पृष्ठ 242, पंक्ति ६.

संवत्-युगलोंकी बात भी है।

१३५ वर्षोंका व्यवधान देख कर सभी गणनाओं को ५८ ईसवीपूर्व तथा ७८ ईसवी पर टिका हुआ नहीं मान सकते। यही भूल पं० भगवद्दत्तने की है। उनके मनमें पूर्वाग्रह था कि विक्रम-संवत् केवल दो हैं—[१] पहला विक्रम-संवत् शूद्रकका चलाया हुआ है और उसका समय ४५७ ईसवीपूर्वका है। [२] दूसरा विक्रम-संवत् चन्द्रगुप्त-विक्रमादित्य द्वारा चलाया हुआ है, और उसका समय ५७ ईसवीपूर्वका है। जब उन्होंने चामुण्डरायका लेख देखा तो उन्हें अपनी धारणाको पुष्टि मिलती नजर आई। ऐसी ही भ्रान्ति अन्य अनेक अनुसंधायकोंके सामने भी आ सकती है। यदि यह निबंध उनकी कठिनाइयोंको दूर करनेमें सहायक हो सका तो ये पंक्तियां धन्य हो जाएंगी।

आश्चर्यकी बात है—अच्छे-खासे विद्वान् यह तो अनुभव करने लग गए थे कि एकमेव विक्रमादित्य माननेसे काम चलने वाला नहीं है। सन् १९२२ या २३ की 'सरस्वती' की फाईलें देखने पर पता चला कि साहित्याचार्य गोपीकृष्ण शास्त्रीने "विक्रमादित्योंकी विविधता" लिखकर इतिहासकारोंका ध्यान इधर आकृष्ट किया था, पर परिणाम कुछ नहीं निकला। उक्त निबन्धकी पूर्ति "विक्रमादित्य नामावली कोश" लिख कर हमने कर दी, 'ज्योतिष्मती' के विज्ञ पाठक ये सब प्रसंग जानते हैं। ठीक विक्रमादित्योंके नानात्व की तरह शक-संवत् भी नाना हैं, जिन पर अभी तक अनुसंधायकोंकी दृष्टि नहीं गई। प्रस्तुत निबन्धमें चार शक-संवतोंका प्रामाणिक परिचय दिया गया है—प्रथम शक : ६२२ ईसवीपूर्व, द्वितीयशक : ६६ ईसवीसन्, तृतीयशक : ७८ ईसवी सन् [प्रचलित] और चतुर्थ शक : ४१२ ईसवी सन्, इत्यादि। इनके अतिरिक्त पांच शक-संवत् अभी और हैं, जिनका परिचय फिर कभी देंगे। ये सभी काल-गणनाएं परस्पर-निरपेक्ष हैं।

भारतीय 'काल-गणना' विज्ञान-परक होने पर भी संवत्-बाहुल्यके कारण उलझनपूर्ण तथा परेशानी पैदा करने वाली है। भारतीय इतिहासका अनुसंधान करने वालोंको हमारे इस परिश्रम से लाभ उठाना चाहिए।

भारतीय काल-गणनामें १३५ वर्षोंका व्यवधान एक आश्चर्य है, परन्तु सत्य है।

ए—१० अमर कालोनी, लाजपतनगर [४]
नई दिल्ली—११००२४.

सदाचार

सदाचार आचारधर्म है, मानव मानव बनता है।
स्वस्थ शरीर आयु लम्बी पा, यश कीर्ति, जग करता है!! [सदाचार आचार धर्म है...
सन्तानें यश नाम बढ़ाती, जन्मे अमर कहाता है!! [सदाचार आचार धर्म है...
सत्य, अहिंसा, धैर्य शीलता, क्रोध, विजय बढ़ जाता है!! [सदाचार आचार धर्म है...
मद्य मांस भोजन निषेध कवि, आचार विशुद्ध निरखता है!! [सदाचार आचार धर्म है...
नास्तिक, लम्पट, झूठा, कपटी, रहें दूर दुःख भगता है!! [सदाचार आचार धर्म है...

—शम्भु कवि

मेधा (१)

[लेखक :—श्री विक्रमसिंह]

बाल वर्षके उपहार स्वरूप प्रस्तुत है मानवके सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण इन्द्रिय "बुद्धि" पर कुछ विचार संग्रह । क्योंकि बुद्धिके निकास का मुख्य आधार बचपनकी आदतें ही हैं ।

बुद्धिकी गिनती अन्त:करण चतुष्टय। (मन बुद्धि चित्त अहंकार) में की गई है जिस के अभावमें ज्ञानेन्द्रियां अपना कार्य करनेमें असमर्थ हैं ।

मन पर कुछ विचार 'ज्योतिष्मती'के सं० २०३४ वि० के चारों अंकोंमें प्रकाशित हो चुके हैं । वहां शतपथके उद्धरण (१४।४।३।९) से यह स्पष्ट किया जा चुका है कि "मन हृदयस्थ जड़ इन्द्रिय है कार्यके विभागसे बुद्धि चित्त अहंकार मनके ही नाम होते हैं । काम संकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धृति अधृति लज्जा बुद्धि व भय यह सब मन ही है।" तीसरे अंकमें यह बात अधिक स्पष्ट की गई है कि मनका मुख्य कार्य ज्ञान स्मृति और प्रेरणा है। मनुष्य जीवनकी स्मृतियां भी असंख्य है, सब याद नहीं रह सकती हैं, फिर भी आवश्यकता होने पर मनुष्यसे संबन्धित स्मृति प्राप्त हो ही जाती है, इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि स्मृतियां नष्ट नहीं होतीं, अपितु कहीं संग्रहीत रहती हैं और कभी-कभी पुनर्जन्ममें साथ जाकर वहां भी प्रकट होती है ।

अर्थ विचार—मेधा शब्दसे हम उस बुद्धि को ग्रहण करते हैं जो शुद्ध संस्कार रूपसे धारण होकर हमारा अंग बन जाती है। प्रसंग से मेधाके भिन्न अर्थ भी पाये जाते हैं, जैसे अमर कोषमें "बुद्धिर्मनीषा...धीर्धारणावती मेधा संकल्प: कर्म मानसम्" में धारणावती अर्थ किया है, लेकिन "पूतं पवित्रं मेध्यं च" में मेध्य शब्द पवित्रताके अर्थमें प्रयुक्त हुआ है । ऋक् १०।७३।११ में "वय: सुवर्णा: उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमाना:" में प्रिय मेधा शब्द इन्द्रिय रूपी ऋषियोंके लिये विशेषण रूपसे प्रयुक्त हुआ है, जिसका अर्थ संगमन प्रिय है। शाब्दिक अर्थ भिन्न होने पर भी तात्विक दृष्टिसे इसमें मिलता नहीं है क्योंकि पवित्रता से तात्पर्य अन्य धारणाओंका मिश्रण न होना है, जिसे गीतामें "अव्यभिचारिणी बुद्धि:" की संज्ञा दी गई है । संगमन या धारणाके द्वारा जो तद्रूप हो गई है वही दैवी बुद्धि मेधा है इसलिये हम प्रार्थना करते हैं :—"यां मेधां देवगणा: पितरश्चोपासते तया मामद्यमेधाविनं कुरु।" अर्थात् हे भगवन् ! जिस बुद्धिकी देवता और पितर उपासना करते हैं उससे मुझे आज युक्त कर मेधावी बना ।

स्थूल रूपसे बुद्धिके दो भेद प्रतीत होते हैं एक तो कुशाग्रता या समझ और दूसरी स्मृति या याददाश्त । शरीरका कौनसा अंग इस कार्य को करता है और उसकी कार्य प्रणाली क्या है इस पर विचार करनेके लिये लेखको निम्न शीर्षकोंमें रखना उचित होगा :—

१. मस्तिष्क रचना व उसकी कार्य प्रणाली ।

२. मस्तिष्क विकारके कारण व विकृति का वर्गीकरण।
३. इन्द्रियोंका मस्तिष्कसे संबन्ध।
४. मस्तिष्क विकासके मुख्य आधार।
५. कुछ व्यावहारिक सुझाव।

मस्तिष्क रचना और उसकी कार्य प्रणाली :—

खोपड़ीमें सिरकी आठ गोल हड्डियोंसे घिरा हुआ ललाट तकका जो हिस्सा है इसके अन्दर अखरोटकी गिरीके आकारका धूसर रंगका जो मांसल पदार्थ है इसीको मस्तिष्क कहते हैं, इसके तीन मुख्य भाग हैं, ऊपर अर्ध-वृत्ताकार बृहद् मस्तिष्क है जो बीचमेंसे दो हिस्सोंमें विभक्त हो रहा है, एक को वाम-मस्तिष्क व दूसरेको दक्षिण-मस्तिष्क कहते हैं। सिरके पिछले हिस्सेमें चपटी गेंदकी तरहका लघु मस्तिष्क है।

मस्तिष्कका औसत तोल १२८५ ग्रामके लगभग है।

पृथ्वीका निर्माण जैसे प्रशान्त महासागर व हिन्द महासागरोंसे हुआ है इसी प्रकार मस्तिष्कके दोनों गोलार्द्धोंके नीचे तरल पदार्थ है, मस्तिष्कका ठोस अंश इसी तरलसे विकसित हुआ है। ठोस अंशका धरातल अखरोटकी गिरी की तरह ऊंची-नीची घाईयोंसे युक्त है। जिस प्रकार सुगठित शरीरका मांसल अंग उभर कर एक विशेष आकार धारण कर लेता है उसी प्रकार मेधावी पुरुषका मस्तिष्क भी हल निकाली हुई जमीनकी सीताओंकी तरह दृष्टि-गोचर होता है। मस्तिष्कमें करीब तीन अरब प्रकोष्ट हैं जो ज्ञानवाही और क्रियावाही सूत्रोंसे संयुक्तरहते हैं। सुषुम्ना शीर्ष पर इन वात सूत्रों की एक श्वेत पट्टी दिखाई देती हैं यह सारे मस्तिष्कमें व्याप्त है, अर्थात् बृहद् मस्तिष्कके वाम-भागसे दक्षिणमें, तथा दक्षिणसे वाम गोलार्द्धमें परस्पर लांघते हुए लघु मस्तिष्कमें होकर सुषुम्ना शीर्षमें प्रवेश करते हैं और मेरुदण्डके सुषुम्ना पथमें उतर जाते हैं। मेरु दण्डके प्रत्येक कशेरूसे वाम व दक्षिण शरीरके अंगोंके लिये अपनी शाखायें व प्रशाखायें छोड़ते जाते हैं। इस प्रकार ज्ञानवाही व चेष्टावाही वात सूत्रों का यह जाल समस्त शरीरमें व्याप्त हो जाता है। जिससे ज्ञान प्राप्ति और समस्त प्रति-क्रियायें होती हैं। मस्तिष्कका महाछिद्र कण्ठ में लटकते काकके पास खुलता है जिससे दूषित विजातीय पदार्थका स्राव होता है। वामार्ध दक्षिणार्ध और लघु मस्तिष्क आठ गोल हड्डियों से परिवृत है, इससे अनुमान होता है कि मस्तिष्कमें आठ मुख्य केन्द्र हैं।

कार्य प्रणाली :—सुषुम्ना शीर्षसे मेरुदण्ड में उतरने वाले वात सूत्रोंमें बारह नाड़ी-युगल की गिनती की गई है। इनमें किसी-किसी ज्ञानेन्द्रियके एकसे अधिक युगल भी हैं, जैसे नेत्रेन्द्रियकी दृष्टिसे संबन्धित, नेत्रकी पुतलियों को चलाने वाले, उनसे भय क्रोध हर्षको प्रकट करने वाले, और प्रकाश पर नियंत्रण करने वाला युगल जिससे पुतलियोंका संकोच विकास होता है आदि आदि। जब हमारी कोई इन्द्रिय उससे संबन्धित ज्ञान प्राप्त करती है तो ज्ञान वाहिनी नाड़ी मस्तिष्कके तरल पदार्थमेंसे गुजरती हुई मस्तिष्क प्रकोष्ठका निर्माण करती हुई अपने केन्द्रमें पहुंचती है व ज्ञानको ठोस रूप प्रदान करती है। इसका घनत्व ग्रहण-शीलताके संवेग और स्पष्टता पर निर्भर है।

सड़क परसे किसी काली चीजके गुजरनेका आभास होना अस्पष्ट, अर्धचेतन अवस्था है। ऐसी स्मृति स्थाई नहीं होती। लेकिन गुजरने वाली कारका रंग, नम्बर, सवारियोंकी संख्या इत्यादिका ज्ञान होना अधिक स्पष्ट और सूक्ष्म निरीक्षणका परिणाम है। यह स्मृति अधिक स्थायी है। द्वीप निर्माणका उदाहरण इसे अधिक स्पष्ट कर सकेगा—पार्थिव तत्व जल से पृथक होकर जब संयुक्त होने लगते हैं तब स्थलका निर्माण होता है। जब तक वे पार्थिव तत्व अर्धतरल दल-दलकी शक्लमें रहते हैं तब तक उनमें धारणा शक्ति नहीं होती, परिपक्व हो जाने पर ही स्थलका रूप लेते हैं, जहां प्राणी विश्राम ले सकते हैं। या वनस्पति उग सकती है। मस्तिष्क कोष्ठोंका भी यही हाल है, जब तक वे तरल या अर्धतरल अवस्थामें रहते हैं उनमें धारणा शक्ति नहीं होती। यही कारण है कि मस्तिष्क रोगोंमें यह तरल पदार्थ अनुपातसे बढ़ जाता है। यहां तक कि सुगठित प्रकोष्ठ भी विकारग्रस्त होकर शिथिल और तरल हो जाते हैं व सुषुम्ना पथमें स्रवित होकर पांचवें कशेरूके पास जमा होने लगता है। प्रमाणस्वरूप मस्तिष्क रोगीके पांचवें कशेरू को दबानेसे हलका दर्द अनुभव होगा, सुषुम्ना मूलमें स्रिजसे इस द्रवको प्राप्त कर मस्तिष्क रोगका निदान किया जाता है। मस्तिष्कको प्रभावित करने वाली तीन मुख्य अवस्थायें मल, विक्षेप और आवरण हैं।

त्रिगुणात्मक प्रकृति, सात्विक राजसिक तामसिक भाव, रोग, दुर्घटना आदिसे होने वाले स्मृति दोष मल कहलाते हैं। जैसे ज्वर के अतिवेगसे सरसाम जन्य स्मृति दोषमें रोगी सन्मुख खड़े संबन्धीको भी नहीं पहचानता, इन्द्रियोंकी अतिप्रवृत्ति या निवृत्ति रूप क्षोभका नाम विक्षेप है यह रजोगुणसे पैदा होने वाले राग व द्वेषके कारण होता है। शत्रुके भयसे या प्रियके वियोगसे असाधारण हरकत करने वाले व्यक्तियोंकी गिनती इसी अवस्थाके पागलोंमें की जाती है। तृष्णाके तीव्रवेगसे जब ज्ञान पर पर्दा पड़ जाता है तब उसे आवरणकी संज्ञा दी जाती है। अपनी धुनसे ही उसे लगाव होता है। प्रतिपक्षीकी बात या तो उसे सुनाई नहीं देती या स्मरण नहीं रहती। यह तामसिक अवस्था है, जिसमें कामान्ध व्यक्ति अपने रिश्तों को भूल जाता है। जिह्वा लोलुप व्यक्ति पशु के समान स्वाद पर टूट पड़ता है, शील संकोच लोकव्यवहार भक्ष्याभक्ष्य आदिके नाम पर पर्दा पड़ जाता है। महर्षि पतञ्जलिने ६ विक्षेप (१ रोग २ जड़ता ३ सन्देह ४ उद्यम-शून्यता ५ आलस्य ६ विषय तृष्णा ७ मिथ्या अनुभव ८ एकाग्रताकी अप्राप्ति व ६ प्राप्त होकर भी एकाग्रताका न ठहरना) (पा.यो. १। ३०) गिनाये हैं। इनका उक्त तीनों अवस्थाओं में हो जानेसे विस्तृत विवेचनकी यहां आवश्यकता नहीं समझी गई हैं।

मस्तिष्क रोग

मस्तिष्क रोग अनन्त हैं, उनकी गिनती नहीं हो सकती है। उदाहरणार्थ एक लड़कीने छः माहसे खाना छोड़ रखा है, पहिले उसके उदर विकार समझा गया, सफलता न मिलने पर अन्य उपचार भूत प्रेत आदिके किये गए, अब मस्तिष्क रोगी मानकर इलेक्ट्रिक शॉक दिये जा रहे हैं। तात्पर्य यह है कि शरीरके प्रत्येक रोगका सम्बन्ध मस्तिष्कसे जोड़ा जा

सकता है। अतः यहां मस्तिष्क रोगोंका स्थूल वर्गीकरण ही पर्याप्त होगा।

मस्तिष्क रोगोंमें मूर्च्छा उन्माद और मदात्यय मुख्य हैं।

१. मूर्च्छामें—भ्रम तन्द्रा सन्यास आदि शामिल हैं, जो दुर्बलता, त्रिदोषाधिक्य, विरुद्ध भोजन, मलमूत्रावरोध, आघात, मादक द्रव्य सेवन, विष, भय, शोक मानसिक आघात व रक्तदर्शनके कारण प्रायः होती है।

ज्ञानवाही नाड़ियोंको जब दोष ढक लेते हैं तब मूर्च्छाके तात्कालिक दौरे या निरन्तर मूर्च्छा होती है। त्रिदोषज मूर्च्छा शीतल जल के छींटे देनेसे, नस्य द्वारा छींक लेनेसे, हवा करनेसे या शीतल हृद्यपेय देकर दूर की जा सकती है। लेकिन मद्यज व विषज मूर्च्छाको दूर करनेके लिये विष-नाशक औंषधियां देना आवश्यक है। विष-नाशक औषधियोंमें मुख्य मुक्तापिष्टी, कस्तूरी भैरव, मकरध्वज आदि हैं।

२ उन्माद—दूषित या दुर्बल मनके कारण व्यक्तिके व्यवहारमें जो असाधारणता आ जाती है उसीको उन्माद कहते हैं। यह निम्नांकित सात प्रकारका होता है :—

१. वातिक उन्मादमें मनुष्य अनवसर हंसता, गाता, रोता है, अंग संचालन करता है उसका स्वभाव कर्कश, रंग लाल व प्रकृति रूक्ष हो जाती है उपवास शीत भोजन या विरेचनसे भी यह प्रकोप होता देखा गया है।

२. पैत्तिक उन्मादमें मनुष्य क्रोधी, विकृत, और इधर-उधर दौड़ने लगता है उसका शरीर ऊष्ण रहता है। कटु अम्ल और विदाही आहार से या अजीर्णसे यह प्रकोप होता है।

३. श्लेष्मिक उन्मादमें मनुष्य कम बोलता है, अधिक सोता है, मुँहसे लारका स्राव होता है। नख, मूत्र, नेत्र श्वेत हो जाते हैं। यह कष्ट संभोगकी अधिकता व आलस्यके कारण होता है।

३. सान्निपातिक उन्मादमें वात पित कफ तीनों दोषोंके कारण व लक्षण उपस्थित रहते हैं।

४. मानसिक उन्मादमें मनुष्य विवेक खो बैठता है, गुप्त रहस्योंको प्रकट करने लगता है, उसे यह सुधि नहीं रहती कि क्या कहना चाहिये व क्या नहीं कहना चाहिये। इस दोष का मुख्य कारण अति कामुकता या धन जन की असह्य हानि होता है।

५. विषज उन्मादमें आंखे लाल हो जाती हैं। इन्द्रियां कांतिहीन हो जाती हैं। दीन भाव प्रकट होता है। विषैले आहारसे ऐसा कष्ट प्रायः होता है।

६. भूतज उन्मादमें मनुष्य ताप या शीत-वत् व्यवहार करता है, कपड़े हटाता है, या फाड़ता है। इसका कारण कोई असन्तुष्ट आत्मा होती है। भूतज उन्मादके रोगियोंके साथ प्रायः ताड़ना की जाती है लेकिन वे दण्डके नहीं दयाके पात्र होते हैं। आश्वासन शान्ति, इष्ट वस्तुकी उपलब्धि, धैर्य व उत्तम वमन विरेचन ही उनका पथ्य है। उन्मादमें मस्तिष्ककी निर्बलता मुख्य कारण है, इसलिये ज्ञान व चेष्टावाही नाड़ियोंकी शुद्धि और बुद्धि वर्धक औषधियोंका प्रयोग अनिवार्य है। बुद्धि-वर्धक औषधियोंमें ब्राह्मी रस, सारस्वत चूर्ण, चतुर्मुख रस, उन्माद गज केसरी, उन्माद गजां-कुश आदि मुख्य हैं। श्वेत घुंघचीसे पका दूध

भी पथ्य है।

७. मदात्यय—अति मदसे संज्ञा हीनता को मदात्ययकी संज्ञा दी गई है। मद्य और विष में निम्नांकित दस गुण समान होते हैं। १ दोनों लघु होते हैं। २. दोनों ही उष्ण हैं और कृशता पैदा करते हैं। ३. दोनों ही तीक्ष्ण व दाही हैं। ४. दोनों सूक्ष्म अर्थात् मूर्च्छा लाने वाले हैं। ५. दोनों अम्ल अर्थात् तृषा वर्धक हैं। ६. दोनों व्यव्यापी अर्थात् शीघ्र व्याप्त होने वाले हैं। ७. दोनों आशु अर्थात् स्रोतोंमें शीघ्र प्रवेश करने वाले हैं। ८. दोनों ही कक्ष होनेसे ओजका शोषण करने वाले हैं। ९. दोनों विकाशि अर्थात् पाचनशील हैं और १०. विशद अर्थात् संधियोंको शिथिल करने वाले हैं।

इनका असर शरीर पर तीन अवस्थाओं में होता है :—

प्रथमावस्था सात्विकी होनेसे बुद्धि स्मृति प्रीति सुखवृद्धि आहारेच्छा और स्वरशक्तिकी वृद्धि करती है।

द्वितीयावस्थाका प्रभाव राजसिक है, इसमें बुद्धि व स्मृति अस्पष्ट हो जाती है, आलस्य, निद्रा, उन्मत्तता, अगम्यागम्य, दुष्ट सवारी, अभक्ष्याभक्ष्य, नामोल्लेखन हीनता, और गुप्त रहस्य प्रकाशनकी प्रवृति हो जाती है। तृतीयावस्था तामसिक प्रभावकी है, इसमें कार्याकार्य ज्ञान हीनता, व निष्क्रियता आ जाती है। ऐसी अवस्थामें नशेके फौरन बाद दो दो तोला शक्कर (चीनी) घी देना लाभकारी है। या गरम दूधसे एलाद्य मोदक, मधु से महाकल्याणवटी उष्ण जलसे अष्टांग लवण एक माशा, या मधुसे ५ रती मदात्यय मञ्जन रस देना लाभप्रद है।

८. इन्द्रियोंका मस्तिष्कसे संबन्ध :—

स्थूल शरीर लिङ्ग शरीरके आधीन है, लिङ्ग शरीर अन्तःकरण चतुष्टय (मन बुद्धि चित्त अहंकार) से बना है। अतः चित्त त्रिगुणात्मक संस्कारोंसे बुद्धिको प्रेरणा देता है और मन सहित पांचों ज्ञानेन्द्रियोंसे भोगता है अन्तःकरणके चारों वर्ग एक ही तत्वके हैं जो इन्द्रियों के द्वारा कार्य करता है। कार्यसे कारण सूक्ष्म होता है इस नियममें ज्ञानकी अपेक्षा बुद्धि सूक्ष्म है इनका उत्पत्तिक्रम निम्न है :—

(१) अन्तःकरण चतुष्टय = मन बुद्धि चित्त अहंकार।
(२) पंचतन्मात्रायें = शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध।
(३) पंचमहाभूत = आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी।
(४) पंच ज्ञानेन्द्रियां = कान त्वचा नेत्र जिह्वा नासिका।

जिस धारणाको मनुष्य मनसा वाचा कर्मणा स्वीकार कर लेता है वही स्मृतिका स्थायी अंश बन जाता है और संस्कार रूपसे जन्म-जन्मान्तरोंमें साथ-साथ जाता है। लौकिक भाषामें "बात गले उतरनी चाहिये।" महाभारतके शांति पर्वमें इसका सुन्दर विवेचन निम्न प्रकारसे किया गया है :— (क्रमशः)

भारत-दर्शन—

गिरिनार (२)

[लेखक :—डॉ० वेद प्रकाश शास्त्री]

कहा जाता है कि—भगवती पार्वतीके विवाहके अवसर पर उनके ज्येष्ठ भाई गिरिनारने बरातका सुन्दर सत्कार किया था जिस से सन्तुष्ट होकर भगवान् विष्णुने उसे पर्वतों में मुख्य माना जानेका आशीर्वाद दिया था। और यह आशीर्वाद दिया था कि जो तुझ पर आकर तपस्या करेंगे उन्हें सहज सिद्धि प्राप्त होगी। उस समय भगवान् नारायणने इसका नाम भी अपने नामके साथ समवेत कर 'गिरी नारायण' रखा था जो काल-क्रमसे विकृत होकर 'गिरनार' हो गया।

कालान्तरमें जब इन्द्र पर्वतोंके पंख काटने लगे तब यह समुद्रमें जा छिपा। भगवती पार्वती को जब भाईके दर्शनकी इच्छा हुई और उन्हें पता चला कि वह समुद्रमें जा छिपा है, इससे पार्वतीजीको बड़ा क्रोध आया जिसे देख भगवान् शंकर और विष्णु गिरिनारको ढूंढने निकले और उसका पता लगाकर उन्होंने समुद्रसे उसे छोड़कर अलग हट जानेकी प्रार्थना की। परिणाम स्वरूप समुद्र उसे छोड़कर पांच योजन हट गया। अब भगवती पार्वती अपने भाईकी रक्षाके लिए अम्बाजी (शक्ति) रूपमें वहां निवास करने लगी जिससे भविष्यमें कोई उसका अनिष्ट न कर सके।

गिरिनार माहात्म्यके अनुसार जो भी व्यक्ति यहां आकर भगवती पराम्बाका पूजन-दर्शन करता है वह सब पापोंसे मुक्त हो परम-पदका अधिकारी बनता है।

मन्दिरके उत्तरमें एक सुन्दर झरना है जो माताके खप्परके नामसे प्रसिद्ध है। मन्दिरके निकट नारियल प्रसाद-पूजन सामग्रीकी दुकानें हैं और प्याऊका उत्तम प्रबन्ध है।

यहांसे कुछ नीचे उतर कर पुनः ऊपरकी ओर अग्रसर होते हुए यात्री योगी गोरखनाथ की टूंक पर पहुंचते हैं। यह देखनेमें गिरिनार की दूसरी चोटीकी तरह दिखाई देती है। यहां गोरखनाथजीका धूना है जहां उन्होंने हजारों वर्ष तप किया था और आज भी जहां अप्रत्यक्ष रूपमें वे निवास करते हैं। धूनेके नीचे 'धर्मबारी' नामक स्थान है जिसे चौरासीका फेरा भी कहते हैं। इसमेंसे निकल कर गोरखनाथजीकी चरण पादुकाओंके दर्शन होते हैं। कहा जाता है कि योगीराज गोरखनाथजी यहीं बैठकर नवनाथ चौरासी सिद्धों, गोपीचन्द्र भर्तृ आदिको उपदेश दिया करते थे। यह चोटी गिरिनारकी सबसे ऊँची चोटी है। समुद्रतलसे इसकी ऊँचाई चार हजार फीट है।

गिरिनारकी तीसरी चोटी अथवा टोंक है—श्री दत्त महाराजकी टूंक। अत्रि-अनुसूया की तपस्या पर रीझकर ब्रह्मा विष्णु और महेशके अंशसे दत्तात्रयका प्राकट्य हुआ था और उसी समय उनके सम्बन्धमें कहा गया था कि ये जन्म-मरणसे रहित, प्राणियोंका कल्याण करने वाले होंगे और जो भी इनकी

चरणसेवा करेगा वह मोक्षका भागी होगा।

उसी समय यह भी बतलाया गया था कि ये (दत्तात्रय) गिरिनार पर निवास और तप करेंगे और इन्हींके निवासके कारण गिरिनार सिद्ध भूमि कहलायेगी। ये गिरिनारमें वास करने वाले महात्माओंको किसी न किसी रूप में दर्शन देंगे और जो भी व्यक्ति गिरिनारमें शरीर छोड़ेगा इनके प्रभावसे नरकका भागी नहीं बनेगा।

इस चोटी पर जिसे गुरु दत्तात्रेयकी टेकरी कहा जाता है दत्तात्रेयकी चरण पादुकाएँ हैं और उनके पीछे ही—जैनतीर्थङ्कर नेमीनाथ की प्रतिमा तथा प्राचीन विशाल सिन्दूरलिप्त घण्टा है।

गिरिनारकी यात्रामें इस टेकरीकी यात्रा सबसे कठिन और उबा देने वाली है, क्योंकि गोरखनाथ टूंकसे लगभग ७०० सीढी नीचे उतरकर फिर उतनी ही सीढ़ियां चढ़कर दत्तटूंक पर पहुंचना पड़ता है। उपर चोटी पर स्थान बहुत संकीर्ण है। नारियलका प्रसाद यहां चढ़ाया और दिया जाता है। यहां आते समय एक नागा बाबाके दर्शन हुए। वे मौन रहकर अहर्निश 'ॐ नमः शिवाय' लेखनमें संलग्न थे। उनके पास सोनेकी मूठकी एक तलवार थी जो उनके स्वरूपमें विरोधाभासके दर्शन कराती थी। उनसे लिखकर वार्तालाप हुआ। पता चला वे बिहारके किसी जागीरदार परिवारसे सम्बन्धित हैं और विगत ८ वर्षसे वहीं मौन रहकर साधना कर रहे हैं।

गिरिनारकी अन्तिम चोटी है महाकाली टूंक। दत्तात्रेय टूंक पर जाते समय-गोरखनाथसे नीचे आने वाले सोपान मार्ग पर दो मार्ग फट जाते हैं। दाईं ओरका मार्ग सीधा कमण्डल कुण्ड पर जाता है। कमण्डल-कुण्ड जैसा कि नामसे ही स्पष्ट है एक कमण्डलुकी आकृतिका कुण्ड है, जहां यात्री स्नान करते हैं। यहां सभी को भोजन भी करानेकी व्यवस्था है।

यहांसे एक ऊबड़-खावड़ पगदण्डी महाकाली टूंक पर जाती है, जहां गुफामें माँ काली प्रतिष्ठित हैं और ऊपर माँका खप्पर है। ऊपर एक ध्वज सतत फहराता रहता है।

कमण्डलु कुण्डके नीचेके भागमें शेरबाग और रतनबाग नामक वन है, जहां अलभ्य बनौषधियां प्रचुरतासे होती हैं।

कमण्डलु कुण्डसे एक विकट मार्ग द्वारा आगे बढ़ने पर 'पाण्डव गुफा' पर पहुंचते हैं, जहां गुफाके अतिरिक्त एक धूना भी है। कहा जाता है यहां पाण्डवोंने कुछ दिन निवास किया था।

गोमुखी गंगासे बाईं ओर जाने वाले मार्ग पर आगे बढ़ने पर सेवादासजीका स्थान तथा पत्थर चट्टी नामक स्थान मिलते हैं जहां छोटे-छोटे दर्शनीय मन्दिर हैं। यहां आवास की व्यवस्था है। यहांसे नीचेकी ओर 'सेसावत' है जहां नेमिनाथजीकी चरणपादुकाएं हैं।

यहांसे आगे बढ़ने पर 'सीतामढ़ी' नामक स्थान आता है जहां भगवान् रामका मन्दिर रामकुण्ड, सीताकुण्ड आदि जलाशय हैं, स्थान अतीव सुन्दर एवं आकर्षक है। यहां भी निवास की व्यवस्था है।

यहांसे आगे बढ़ने पर मार्गसे कुछ हटकर एक पोला (रिक्त) आमका वृक्ष मिलता हैजो

प्रकृतिके अनूठे कौशलका परिचायक है। इसकी जड़में सदा जल भरा रहता है। यह जल श्वास और क्षयरोगके लिए अमोघ माना जाता है—

सेसावनसे आगे भरतवन नामका दर्शनीय स्थल है। यहां श्रीरामचन्द्रजीका मन्दिर और सुन्दर जलाशय है। वनस्पतियोंसे भी परिपूर्ण हरी-भरी उपत्यका सी स्थलीमें अवस्थित यह स्थान सचमुच दर्शनीय है।

यहांसे थोड़ा सा आगे बढ़ने पर 'हनुमान धारा' नामक स्थान पर पहुँचते हैं। यहां एक जलधारा श्री हनुमानजीके मुखसे बारहों मास सतत प्रवाहित होती रहती है, जिसके कारण ही इसे हनुमान धारा कहते हैं। यहां हनुमान जीका छोटा सा दर्शनीय मन्दिर है। भरतवन के दोराहेसे बाईं ओर फटने वाले मार्ग पर ही हनुमान धारा अवस्थित हैं।

दो स्थान और भी हैं जिनके वर्णन बिना यह लेख अधूरा ही कहा जाएगा। गिरिनारके इस धार्मिक क्षेत्रमें राणक देवीका चिता स्थल भी दर्शनीय है, जहां प्राकृतिक कोटर सी पत्थरों में बन गई है और आज भी ज्वलनके चिह्न वहां विद्यमान हैं। राणक देवी खंगारकी पत्नी थीं परन्तु जयसिंहकी कुदृष्टिके कारण तथा अपने ही व्यक्तियोंके धोखा देनेके कारण उसे सती होने पर बाध्य होना पड़ा था।

गिरिनारके दूसरे भागमें सिंहोंका खुला दल है जहां मुक्त वातावरणमें सिंहोंके निवास, विचरण आदिकी व्यवस्था है। इस वनके रक्षकों से सिंह भली भांति परिचित हैं। दर्शकोंको दिखानेके लिए जब वे वहां बने हुए भवनके ऊपर खड़े होकर नामसे उन्हें पुकारते हैं तब उन्हें आते हुए देखकर दर्शकोंको अजीबसा लगता है। खूंखार पशु भी अपने हित-अनहित को भली प्रकार पहचानता है इसके परिचायक गिरिनारके सिंहवनको आदर्श स्थल कहा जा सकता है। यात्री जीप आदि द्वारा जहां सिंहों के पास तक जाते हैं और उनके दैनन्दिनीय प्राकृतिक जीवनके दर्शन कर प्रसन्नता प्राप्त करते हैं और इन मधुर क्षणोंको कंजूसके धनकी तरह अपनी स्मृति और कैमरेमें बन्द कर अपनी यात्राको सफल बनाते हैं। यहांके सिंह धूसर-वर्णके, बलिष्ठ और भयावह होते हैं। संभवतः इन सिंहों अर्थात् मृगराजोंकी अधिकताके ही कारण गिरिनारकी तलहटीमें व्याघ्रारूढ़ भगवती बाघेश्वरीका मन्दिर इस दृष्टिसे स्थापित किया गया है कि उनकी शक्तिसे ये अपने क्षेत्रमें नियन्त्रित रहें। गिरनार पर चढ़नेके लिए कोई साधन नहीं है, पैदल ही चढ़ना पड़ता है, केवल सम्पन्न व्यक्ति १६०) देकर मनुष्यों द्वारा कांवरमें बिठाकर ऊपर ले जाए जाते हैं। लगभग १२ घण्टेमें यह यात्रा पूर्ण कर हम नीचे उतरने लगे तब पांवोंने जवाबसा दे दिया था। इतना दर्द हो रहा था कि लाठीका सहारा लेने पर भी शक्ति और साहस साथ छोड़ रहे थे, परन्तु नीचे आना ही था, अन्यथा आत्मीयजन न जाने क्या-क्या शंकाएं करते, अतः यन्त्रवत् दौड़ते हुए उतरना आरम्भ किया और दो स्थानों पर विराम कर जब नीचे हनुमान्जीको प्रणाम कर बाहर निकले तो पाया कि सचमुच दो व्यक्ति जीपके साथ हमारी प्रतीक्षामें खड़े थे। दो दिन तक चलने-फिरनेसे लाचार रहे और फिर जरा संभलते ही चल पड़े दिल्लीकी यात्रा पर।

२१-१-१६८ गांधी बाजार,
हाईकोर्टके सामने, हैदराबाद ५०००२,

ग्रहोंका मानव पर प्रभाव

भारतके प्राचीन शास्त्रोंमें ज्योतिष विज्ञान का विशिष्ट स्थान है क्योंकि अथर्ववेदके अनुसार ज्योतिष माता आद्यादेवीका स्वरूप है "अहं ग्रह नक्षत्र ज्योतिषी"—वेदमंत्र इसका प्रमाण है। सभी शास्त्रोंका ज्ञान हो लेकिन ज्योतिषका ज्ञान न हो तो "चक्षुषाङ्गेन हीनो न किंचित्करः" अर्थात् प्राणी अन्धे सदृश हो जाता है। इसीलिए ज्योतिष वह विज्ञान है जो मानवके जन्मकालीन ग्रहोंके अनुसार उसकी अच्छाइयां, बुराइयां समझकर अच्छा-बुरा काल प्रदर्शित कर मानवको वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दिशा बोध कराता है। ज्योतिष शास्त्रका सम्बन्ध आयुर्वेद, दर्शनशास्त्र, तन्त्र शास्त्र योग-शास्त्र मनोविज्ञान, यौन मनोविज्ञान, वाणिज्यादि अनेकानेक शास्त्रोंसे है। और सभी इहलौकिक बातोंका ज्ञान ज्योतिषसे प्राप्त किया जाता है, इसलिए इस दैवज्ञ विद्याको ज्योति यानि नेत्र, नज़र, दृष्टिकी संज्ञा दी गई है।

हाल ही में किया गया एक अमरीकी खगोलविद्‌का यह दावा है "कि ग्रहोंका मनुष्य जीवन पर कोई असर नहीं पड़ता" अनर्गल प्रलापके सिवाय और कुछ नहीं कहा जा सकता। ज्योतिष विज्ञानके विषयमें अनेकानेक विश्वस्तरीय सुप्रसिद्ध विद्वानोंके अनेकानेक मत अभिमत हैं। मिस्टर मारिया ग्राहमकी सम्मति है कि समस्त मानवीय परिष्कृत विज्ञानोंमें ज्योतिष मनुष्यको ऊंचा उठा देता है—इसका प्रारम्भिक इतिहास संसारकी मानवताके उत्थानका इतिहास है। भारतमें इसके आदिम अस्तित्वके बहुतसे प्रमाण मौजूद हैं। मिस्टर सी. बी. क्लार्क एफ. जी. एफ. का मत है कि अभी बहुत वर्ष पीछे तक हम सुदूर स्थानोंके अक्षांश रेखांशके विषयमें निश्चयात्मक रूपसे ज्ञान नहीं रखते थे, किन्तु प्राचीन भारतीयोंने ग्रहण ज्ञानके समयसे ही इन्हें जान लिया था। इनकी यह अक्षांशों रेखांशों वाली प्रणाली वैज्ञानिक ही नहीं अचूक है। प्रो० मैक्समूलरने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि भारतवासी आकाश-मण्डल और नक्षत्र-मण्डल आदिके बारेमें अन्य देशोंके ऋणी नहीं है। मूल आविष्कर्ता वे ही इन वस्तुओंके हैं।

फ्रान्सीसी पर्यटक फ्राक्वीस-वर्नियरने भी भारतीय ज्योतिषज्ञानकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए लिखा है कि भारतीय अपनी गणना द्वारा चन्द्र और सूर्यग्रहणकी बिल्कुल ठीक भविष्यवाणी करते हैं, इनका ज्योतिषज्ञान प्राचीन व मौलिक है। अलबैरूनीने कहा है—"ज्योतिषशास्त्रमें हिन्दु संसारके सभी जातियों से बढ़कर है। मैंने अनेक भाषाओंके अंकोंके नाम सीखे पर किसी भी जातिमें हजारसे आगे संख्याके लिए मुझे कोई नाम नहीं मिला। हिन्दुओंमें अठारह अंकों तककी संख्याके लिए नाम है जिसमें अन्तिम संख्याका नाम परार्द्ध बताया गया है।"

इतिहास साक्षी है कि जब महमूद गजनवी सोमनाथ महालयका विध्वंस कर भारतसे वापिस लौटकर जाने लगा तो अलबैरूनी जो उसका गुप्त परामर्श दाता सन्यासी वेषमें

भारतमें आकर भारतीय ज्योतिषका ज्ञान प्राप्त किया था। और प्रश्न कुण्डली बनाकर महमूद गजनवीको उसने स्पष्टतः कह दिया था कि—"आलीजाह! भारतसे अब जीवित लौटना आपके लिए संभव नहीं है (यह सुनकर महमूद गजनवी बौखलाकर चिल्ला उठा था कि तुम काफिरों–हिन्दुओं–के इल्म ज्योतिष के आधार पर मुझे निराश कर रहे हो, तो अलबैरूनीने उत्तर दिया था कि "इल्म इल्म ही है, इल्मका कोई ईमान नहीं होता और भारतियों का ज्योतिष एक विलक्षण विज्ञान है।" महमूद गजनवी चुपचाप उठकर चल दिया था—अपनी मौतकी भविष्यवाणी अलबैरूनीसे सुनकर।

प्रो० कोलब्रुक और बेवरने लिखा है कि भारतको ही सर्वप्रथम ग्रह चन्द्र नक्षत्रोंका ज्ञान था। चीन और अरबके ज्योतिषका विकास भारतसे ही हुआ है। उनका क्रांतिमण्डल हिन्दुओंका ही है। निःसन्देह अरब वालोंने इसे लिया था। प्लेफसरका मत है कि ज्योतिष ज्ञानके बिना बीजगणितकी रचना कठिन है। विद्वान् विल्सनका मत है कि ज्योतिष और गणितके तत्वोंका भारतका आविष्कार अति-प्राचीनकालमें हुआ था तथा भारतीय ज्योतिषियोंको (प्राचीन खलिफों विशेषकर हारूरशीद और अलमायनको) बगदाद आमन्त्रित किया गया था।

अमरीकी महाभाग नोर्टेज बोक जरा बतायें कि क्या सूर्य चन्द्रमा आदिका मानव जीवन पर प्रभाव नहीं पड़ता है? आधुनिक वैज्ञानिक प्रत्येक वस्तुकी रचना सौर मण्डलसे मिलती-जुलती बतलाते हैं। वैज्ञानिकोंका मत है कि प्रत्येक पदार्थकी सूक्ष्म रचनाका आधार परमाणु है। अनन्त परमाणुओंके समाहारका एकत्र स्वरूप हमारा शरीर है इसलिए हमारे ऋषियोंने 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' का सिद्धान्त हमें बताया। अतः सौर जगत्में सूर्य चन्द्र आदि ग्रहोंके भ्रमण करनेके जो नियम कार्य करते हैं वे ही नियम प्राणीमात्रके शरीर में स्थित सौर मण्डलके ग्रहोंके भ्रमण करनेके भी काम करते हैं और प्रभाव डालते हैं। अतः स्वतः प्रमाणित है कि आकाशस्थित ग्रह, शरीरस्थित ग्रहोंके प्रतीक हैं और हमारे महर्षियोंने स्वात्मज्ञानकी अनुभूतिके आधार पर जो नक्षत्र ग्रहों आदिकी कल्पना कर सहस्रों वर्षों पूर्व जो सिद्धान्त बनाये हैं उन्हें न तो कोई वैज्ञानिक आज तक बदल सका है और न ही भविष्यमें बदल सकेगा। आकाशीय २७ नक्षत्र जो ज्योतिष विज्ञानका आधार स्तम्भ रीढ़की हड्डीमें २७ हड्डियोंके जोड़ हैं, जो प्रत्येक नक्षत्र हैं तथा जिस नक्षत्र पर जिस ग्रहका प्रभाव पड़ता है, शरीरका वही भाग उससे प्रभावित हो अच्छा अथवा विकृत हो जाता है। ज्योतिष विज्ञान अखिल ब्रह्माण्डके रहस्यको प्रकट एवं व्यक्त करता है। ज्योतिष शास्त्रके ज्ञानसे ही मानव ज्योतिस्वरूप पर-ब्रह्मकी प्राप्ति करता है, क्योंकि मानवके जन्म लेते वक्त जो ग्रहोंकी गति आकाशमें होती है उन्हींकी गणना कर ज्योतिर्विज्ञ जातककी जन्म-कुण्डली बनाकर उसके जीवनका वृतान्त माता-पिताको प्रकट कर देता है और यह भी प्रकट कर देता है कि बालारिष्ट तो नहीं है, अर्थात् बच्चा दीर्घायु होगा अथवा अल्पायु। ज्योतिषमें काल (समय) को ही परब्रह्म माना है। जन्मके समय जिन ग्रहोंकी प्रधानता होती

है जातकका स्वभाव गुण, भविष्य वैसा ही होता है।

"एते ग्रहा बलिष्ठा, प्रसूतिकाले/नृणां स्वमूर्ति समम्।
कुर्युं देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम्।"

अत: स्वत: प्रमाणित है कि संसारको प्रत्येक वस्तु पर ग्रहोंका प्रभाव पड़ता है।

जन्मकुण्डलीमें बारह घर होते हैं जिन्हें भाव कहते हैं। प्रथम भाव सिर, दूसरा मुख, तीसरा छाती, चौथा हृदय, पांचवां उदर, छठा कटिप्रदेश (कमर) सातवां नाभिसे लिंग तक बस्ती, आठवां गुप्तेन्द्रिय, नवां जाघें, दसवां घुटने, ग्यारहवां पिण्डलियां, बारहवां पैर हैं। जिस भाव पर शुभ ग्रहकी दृष्टि हो शरीरका वह भाग पुष्ट व सुन्दर होता है। जन्मकालीन सूर्यसे आत्मा पिता, शक्ति, लक्ष्मी का। चन्द्रसे मन, बुद्धि माता, राज्य-कृपाका। मंगलसे साहस, रोग, गुप्त शत्रु भ्राताका। बुधसे विद्या, व्यापार विवेक वाणीका। गुरुसे ज्ञान, पुत्र, धन, शरीरका। शुक्रसे पत्नी प्रेम, वाहनका। शनिसे आयु, जीविका, नौकरी, मृत्युका। राहुसे दादाका व केतुसे नानाका विचार किया जाता है। यह बारह भाव बारह राशियोंके अनुसार हैं। जातकके जन्म-लग्न यानि प्रथम भावसे शरीर एवं व्यक्तित्वका। दूसरे भावसे धनका। तीसरे भावसे पराक्रम का। चौथे भावसे माता व सुखका। पांचवें भावसे विद्या व पूर्वजन्मका। छठे भावसे शत्रु का। सातवें भावसे पत्नीका। आठवें भावसे मृत्युका विचार किया जाता है। तुलसीदासने कहा है—"दारुण बैरी मीतके बीच बिराजति नारि।" नवें भावसे धर्म-भाग्यका। दसवें भाव से कर्म व पिताका, ग्यारहवें भावसे लाभका तथा बारहवें भावसे व्ययका विचार किया जाता है। जब जलीय ग्रहोंका योग दूसरे ग्रहों की अपेक्षा लग्नसे अधिक होता है तो मनुष्य स्थूल शरीरका होता है। सर्वार्थ चिन्तामणिकार ने लिखा है—

लग्ने जल ऋक्षौ शुभ खेचरेन्दुयुक्ते,
तनुस्थौल्यमुदाहरन्ति।
लग्नाधिपस्तोयखगो बलाढयः
सौम्यान्वितश्चेत्तनुपुष्टिमाहुः॥

वराहमिहिरने बालारिष्ट अध्यायमें बृहज्जातकमें कहा है :—क्षीणे हिमगौ व्ययगे पापैरुदयाष्टमगैः केन्द्रेषु शुभाश्च न चेत् क्षिप्रं निधनं प्रवदेत्।

अर्थात् जब व्यय स्थानमें चन्द्र हो लग्न तथा अष्टम स्थानमें पाप ग्रह हो केन्द्र स्थानोंमें कोई शुभ ग्रह न हो तो बालक शिशु अवस्थामें ही मर जाता है। चन्द्र लग्न होनेसे जब व्यय स्थानमें होता है तो शरीरका नाश होता है।

अमेरिकामें प्राचीन सम्माननीय ज्योतिष संघ लल्लवेलिन है जिसके सम्पादक निदेशक कार्ल वेस्चेक हैं। सूर्यकी सायन पद्धतिसे प्रत्येक वर्ष प्रत्येक राशि वालेके भविष्यफलकी पुस्तकें प्रकाशित करते हैं, जो करोड़ोंकी संख्यामें विश्व भरमें बिकती हैं और उनमें भविष्यफल सत्य होता है। श्रीमती इंदिरा गांधीके लग्नसे द्वितीय स्थानमें शनि राहु शत्रु क्षेत्रीय चला तो कष्टका हेतु हुआ, किन्तु कन्या राशिका शनि लग्नसे तीसरे स्थानमें आते ही विजयका हेतु हुआ और इतिहासमें श्रीमती इन्दिरा गांधीका नाम इन्द्रा + आग—आंधी = इन्दिरा गांधी

लिखवानेका कारण बना। कर्क राशिका शनि प्रत्येक तीस वर्ष बाद इतिहासको बदलता है। सन् १९४७ में बदला, सन् १९७७ में बदला। अतः कैसे माना जाय कि ग्रहोंका मानव जीवन पर प्रभाव नही पड़ता।

लग्नेश, चन्द्र, सूर्य, शनि, अष्टम तृतीय आदि भावोंमें तथा उनके स्वामियोंके बली होनेसे शरीर बली होता है, और जातक दीर्घायु होता है। जब लग्नभावका स्वामी धन भावमें हो, धनभावका स्वामी लाभ या ग्यारहवें भाव में हो या लाभ भावका स्वामी लग्नमें हो तो जातक धनवान् होता है। जिसके चन्द्रमाके आगे-पीछे कोई ग्रह न हो तो वह केमद्रुमयोग वाला जातक दरिद्री होता है, जिसका चन्द्रमा वृश्चिक राशिमें नीच हो तो जातक पापी व मनका मैला होता है, जिसके चौथे स्थानमें मंगल हो उसका जीवन चित्त पर हाथ धरे हाय हाय करते बीतता है। जिस कन्याके सप्तम भवनमें मंगल हो वह पतिघातिनी होती है। जिसके दसवें भवनमें राहु हो वह कुलकलंकिनी होती है। जिस जातकके दसवें मंगल हो वह कुलदीपक होता है। जिस कन्याके चन्द्रमासे सातवें भावमें मंगल शनि या राहु हो वह विधवा होती है। जिसके सातवे भवनमें सूर्य हो तथा शुभ ग्रहोंकी दृष्टि उस पर न हो तो वह परित्यक्ता उपेक्षिता होती है। जिस वर-वधुके योनि बैर नाड़ी दोष आदि रहते हैं और विवाह कर दिया जाता है तो उन्हें दाम्पत्य जीवनका आनन्द पूर्णतः नहीं होता और पूर्णतः यौन संतुष्टि नहीं होती। जिस कन्याके कालसर्प योग होता है वह विधवा हो जाती है। जिसके शुक्र, गुरु या बुध चन्द्रमासे सातवें स्थानमें हो वह गजकेसरी योग वाला सुखी, धनी एवं सम्माननीय होगा। जिसके केन्द्र में गुरु हो वह राजा तुल्य जीवन व्यतीत करता है। जिसके धनु या मीन राशिमें शनि होता है अथवा इन राशियोंको शनि देखता हो जन्म कुण्डलीमें तो वे ऐतिहासिक महापुरुष होते हैं। महारानी विक्टोरिया, महर्षि अरविन्द, रामानुजाचार्य, स्वामी विवेकानन्द आदि जितने भी ऐतिहासिक पुरुष हुए हैं उनके यह योग था। जातक संग्रहमें लिखा है—

तुला कोदण्ड मीनस्थो लग्नस्थोऽपि शनैश्चरः।
करोति नृपतेर्जन्म वंशे च नृपतिर्भवेत्॥

अर्थात्

सनि कज्जल चख झख लगन,
उपज्यो सुदिन सनेह।
क्यों न नृपति ह्वे भोगिवो,
लहि सुदेस सब देह॥
(बिहारी)

नरपति-जयचर्या ग्रथकारने एक योगका वर्णन करते हुए कहा है—

एक नाड़ी समारूढ़ो चन्द्रमाधरणीसुतौ।
यदि तत्र भवेज्जीवस्तदा ह्यकार्णवा मही॥

बिहारीने भी ज्योतिषके ग्रहोंका श्लेषालंकार युक्त क्या खूब वर्णन किया है :—

मंगल बिन्दु सुरंग मुख सनि केसर आड गुरु।
इकनारी लहि संग, रसमय किय लोचन लगत॥

भक्त शिरोमणि तुलसीदासजी, अब्दुल रहीम, खानखाना, सूरदासजी आदिने भी ज्योतिषका वर्णन काव्यमें किया है। सूरदासजी ने तो ज्योतिषका वर्णन काव्यमें किया है। उन्होंने सूरसागरमें तो भविष्यका वर्णन

भी किया है—

एक सहस्त्र नौ सौ से ऊपर ऐसा योग परे।
सहस्त्र वर्ष लौ सतयुग बीते, धर्मकी बेलि बढ़े।

भक्त कवि सूरदासजीके उक्त दोहेसे स्पष्ट है कि कुछ महान् परिवर्तन होने वाला है और आगामी समय विश्वके लिए विनाशकारी होगा, जिसका श्रीगणेश सन् १९८० में हो जायेगा। भयंकर प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प अकाल, अथाह वृष्टि, अनावृष्टि आदि होंगे। पाश्चात्य पण्डित कीरो जो अपने समयका विश्वका श्रेष्ठ सुप्रसिद्ध ज्योतिषी था, ने भी कहा है कि सन् १९८१ में भयंकर प्राकृतिक प्रकोप होंगे। जुलाई १९८४ एवं सन् १९८७ में करोड़ों लोग एक दिनमें मर जायेंगे।

—पं० प्रह्लाद राय व्यास
साहित्य सुधाकर
(राजस्थान सरकार द्वारा पुरस्कृत लेखक)
९१—बी, दिव्य कुटिर, तनेजा ब्लाक
आदर्श नगर, जयपुर—४

विष-कन्या योग

[लेखक :—वैद्य पं० श्री नागेश्वरप्रसाद पाठक, खजूरी देवड़ा म० प्र०]

'ज्योतिष्मती'के विगत अंकोंमें विष-कन्या योगके जो लेख छपे थे—वे स्थावर जङ्गम विषोंको गर्भकालमें माताको सेवन करा कर राजा महाराजओंसे वैर विरोधका बदला लिया जाता था। किन्तु प्रकृतिने स्वयं ही विष-कन्या योग नक्षत्रोंमें जन्म लेने वाली कन्याओंमें निहित कर दिये हैं। जैसे ज्योतिष एवं आयुर्वेदमें मनोवाञ्छित सन्तान हेतु ऋतुकालके बादमें सम-विषम राशियों नक्षत्रों आदिका ध्यान रखकर सम्भोग करनेसे लड़का या लड़कीकी उत्पत्ति का विधान शाश्वत सत्य है। वैसे विषकन्या योगका शतशः स्वानुभूत योग है। इस पर मेरी अपनी सन्तान संख्या दूसरी कन्याका जन्म विष-कन्या योगमें हुआ, ऐसी करीब दस कन्याओंका अध्ययन किया जिनमेंसे आठकी तो मृत्यु हो गई। बाकी दोके लिये शेष फलकी घटनाएं हुई।

अश्विनी-अश्लेष मघा जाये, ते नारी विष-कन्या होये।

फल :—

आप मरे मन्दर जाये थानकवासो निश्चय टारे।
बन्द पड़े परदेशां जाय, चवरी चड़तां वरने खाय॥

अब लग्न मेलापक आदिकी शोधके लिये लोग इस युगमें फोकटमें पण्डितोंकी भलाई-बुराई करते हुए, लड़के लड़कियोंकी जन्म-कुण्डलीमें तो ठीक जन्म तकके अक्षर कई राशियोंके अन्तराल पर बतलाकर गारंटीकी बातें करते हैं। मैं ऐसे लोगोंको अब साफ शब्दोंमें समझा देता हूँ, पर कई एक अनभिज्ञ हां करते हैं। फिर कुछ विघ्न उपस्थित होने पर पूर्ण दोष पण्डितका निकाल देते हैं। जबकि पूछी गई बातका जड़ पेड़ कुछ नहीं होता है।

अब उपर्युक्त योगमें अस्सी प्रतिशतका मरण, बीस प्रतिशत जो कन्याएं जीवित हैं, उनके अगली घटनाएं घटित होती है। मूर्ख लोग दोष वर्तमान वालेको देते हैं। जबकि इसकी जड़में क्या खराबी थी इसको वे

क्या जाने।

अब आगे कुछ पद इसी प्रकार हेर-फेरसे प्रस्तुत हैं—

ज्योतिषके पांच तत्वोंकी उत्पति

पूर्व तिथि और पश्चिम वार,
नक्षत्रको घर उत्तर सार।
दक्षिण योग करण आकाश,
पांचों तत्वों का करो विचार॥

वारोंका दिशाशूल

पूर्व सोम शनिश्चर वार,
दक्षिण गुरू एक लो वार।
पश्चिम शुकर-अर्कारूदि,
उत्तर मंगल बुध वरौदि॥

नक्षत्र दिशाशूल

उत्तरा उत्तर गमन नहीं कीजे,
पूर्व पश्चिम पांव नहीं दीजे।
पूर्व दिशा धनिष्ठा अनेक दुःख,
दक्षिण भरणी महा वियोगी॥

फल :—
चार नक्षत्रे चतुर्दिशा वर्जे
वणिज करे तो मूलमें टोटो।
खेती करे तो बीज नहीं आवे,
गांव बसावे तो सिरपर हानि॥
युद्ध चढ़े तो जीत घर आवे,
व्यासमुनि यूं फरमावे।

भारतीय संस्कृतिमें ऐसे पद असंख्य होने चाहिए जो यत्र-तत्र सर्वत्र विखरे पड़े हैं। ऐसे पद्य संस्कृत श्लोकोंके ही भावार्थ हैं। अथवा आप्त पुरुषों द्वारा अनुभूत विचार सरल पदोंमें व्यक्त हैं। जो भी हो प्रत्यक्ष फलित हैं। ऐसे पद कइयोंके पास होंगे उनको एकत्रित करके प्रकाशित होवे तो वर्तमानके अल्पज्ञोंको सरलता हो जावे।

'ज्योतिष्मती' में प्रकाशित योगमें और मैंने लिखे इनमें कुछ शब्दोंका हेरफेर रहता है। तथा और भी अपभ्रंशमें काफी अन्तर आता है। मैंने अपनी एकसे चार तक मृतमेंसे दूसरी सन्तानको विषकन्या योग एवं पांचवीं सन्तान को जो जीवित है ज्वालामुखी योग पाया ऐसे गण्ड-मूल एवं अन्य योग तो अनेकों होंगे। जिनसे इनका कांट-छांट होता है। इससे दृश्य-अदृश्य जगत्का गणित-फलित और दृश्य जगत् अलग-अलग ही होते हैं।

विष कन्याका जन्म समय मिति आश्विन शुक्ल पक्ष चतुर्दशी शुक्रवार सं० २०२३ की १८ घ० ३ प० रेवती नक्षत्र २४ घ० ४७ प० उपरान्त अश्विनीके द्वितीय चरणका जन्म समय रात्रि ३॥ बजेका र० उ० ६ बजकर ३० मिनिट दिनांक २८ अक्टूबर १९६६ ई०।

कन्याका मृत्युकाल मिति माघ कृष्णा नवमी शुक्रवार सं० २०२३ समय दिनको ३॥ बजे दिनाँक ३ फरवरी १९६७ ई०।

गर्भाधान :—मिति माघ कृष्णपक्ष तृतीया रविवार सं० २०२२ की अगली रात्रिका।

उक्त कन्याका जन्म अश्विनी नक्षत्रके द्वितीय चरणका होनेसे गण्ड-मूलके साथ विष-कन्या योग भी पड़ा था। इसलिये शास्त्रोक्त शान्ति आदिके बाद भी उसकी मृत्यु हुई।

विशेष :—मेरे जीवनमें शुक्रवारको ही सैंकड़ों शुभाशुभ योग आये हैं। शुभ कम और अशुभ अधिक उक्त योग अनायास आते हैं।

त्रैमासिक राशि भविष्य

नवम्बर-दिसम्बर १९८०, जनवरी १९८१ ई०

[लेखक—श्री पं० ओंकारनाथ त्रिवेदी, बाराबंकी (उ० प्र०)]

मेष

नवम्बर—यह मास अनेक शुभ फलोंसे युक्त होने पर भी संघर्षपूर्ण ही प्रतीत होगा। घर-बाहर कलह-विवादके अवसर आवेंगे जिन से किसी स्त्रीका सम्बन्ध हो सकता है। अप्रिय श्रम करना पड़ेगा। जो प्रयत्न करेंगे उसमें आंशिक सफलता मिल कर रह जायगी। सम्भव हैं परिस्थितियोंके सुधारके लिये कोई बड़ा कदम उठावें। सफलता पानेके लिये ४ या ५-१४-२३ ता० अनुकूल हैं। धन लाभके लिये ६-१५-२३ या २४ ता० अच्छी हैं। कष्टप्रद व्यय होगा और आर्थिक दबाव बना रहेगा। टैक्स विभाग वालोंसे सावधानी अपेक्षित है। बीच-बीच पारिवारिक समस्याएँ आवेंगी। सामान्य गृहस्थ सुख प्राप्त हो जायेंगे। चोट-चपेट सम्भाव्य। ९-१८-२६ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास जीवनमें सुख-सुविधा की वृद्धि और प्रगतिकी सूचना देता है। यदि धैर्य और विवेकसे काम लें तो अपने उज्जवल भविष्यकी नींव रख सकते हैं। कुछ थोड़े दिनोंके लिये जीवन आनन्द-विनोदसे भर उठेगा। उत्तरार्द्धमें एक नया उत्साह और आत्मविश्वास उत्पन्न होगा और प्रयासोंमें सफलता मिलेगी, यह ध्यान रखें कि जोश-क्रोध या जल्दबाजी में कोई ऐसा काम न कर बैठें कि बादमें पछताना पड़े। सहयोग देने वाले दो व्यक्ति मिल जायंगे। धन लाभ के लिये २-३-१२-१३-२०-२१-२९-३० ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ७-१६-१८-२७ भी अच्छी रहेंगी, प्राचीन धन या बकाया रकम की प्राप्ति। १५-१६ ता० विशेष व्यय या हानि। नौकरीमें पदोन्नति की सम्भावना है। ता.५-६-२३-२४ नेष्ट।

जनवरी—जीवनमें शुभ और वांछित परिवर्तनोंके योग आरम्भ हो रहे हैं जो आपकी व्यस्तता को बढ़ा देंगे। प्रारम्भमें सफलताके मार्गमें कुछ बाधाएं रहेंगी जो आपकी प्रगति को रोकनेमें समर्थ न हो सकेंगी और वे भी उत्तरार्द्धमें समाप्त हो जायेंगी। इस बात का विश्वास किया जा सकता है कि मास समाप्त होते-होते आप हर्ष और आत्म सन्तोष की स्थितिमें होंगे। नयी आशाओं-महत्वाकांक्षाओंके साथ उद्योग करेंगे। स्वजन-परिजन और बड़े-बड़े आदमी सहयोग देंगे। इसी (या

मेरे समीपवर्ती विज्ञजन भी इसे कई बार देख कर आश्चर्य चकित हैं। मेरी कोई सही जन्म-कुण्डली नहीं है।

मुर्दोंका नहीं जिन्दोंका अनुसंधान कर संसारके सामने अपनी शिक्षाका प्रकाश करें तो मन आश्चर्यमय होगा। जीवितोंकी समस्त गतिविधियोंका प्रत्यक्ष प्रमाण मिल सकता है। मुर्दोंका प्रमाण मिलना शतशः असम्भव है। इसमें फलितकर्ता भी प्रत्यक्षमें यश अर्जन कर सकता है। जिसका प्रत्यक्ष फल भी मिलता है।

अगले) मास किसी महत्त्वपूर्ण सफलता या विजयके मिलनेकी आशा है। कामनाएं पूर्ण होंगी। आपके पास नयी व्यापारिक योजनाएं हों तो उन्हें कार्यान्वित कर सकते हैं। नौकरी में पदोन्नतिकी आशा है।

वृष

नवम्बर—यह मास अनेक शुभ फलोंसे युक्त है किन्तु अधिकांश समय अवांछनीन, श्रम, संघर्षों और विलासपूर्ण प्रवृत्तियोंमें व्यतीत होगा। उद्योग करनेमें मन न लगेगा। सम्भव है कि उत्तरार्द्धमें अपने ही लिए अहितकर कोई काम कर बैठें। यह अवश्य है कि उत्साहपूर्वक परिस्थितियोंका सामना करेंगे। प्रयासोंमें सफलता पानेके लिए ७-१६-२४ ता० अनुकूल हैं। धन लाभके लिए २-८ १२-१७-२१-२५-३० ता० श्रेष्ठ हैं। सम्भव है कि ६-१०-१८-१६-२६ २७ भी अच्छी रहें। आर्थिक दबाव बना रहेगा और ऋण लेनेकी सोचेंगे। २० ता० सावधान रहने योग्य है। पत्नी से विवाद-वमनस्य, उदर विकार। चोट-चपेटसे कष्ट सम्भाव्य। दौड़धूप। ६ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास मिश्रित फल वाला है। सघष भी आवेंगे और आनन्द-विनोदके अवसर भी। पूरे महिने आपकी रुचि व्यसनों-विलासोंमें रहेगी जो उत्तरार्द्धमें मर्यादाकी सीमा का उल्लंघन कर सकती है। श्रम और उद्योगमें आपका मन न लगेगा। फिर भी प्रयासोंमें सफलता मिलनेके योग चलते रहेंगे। इस दृष्टिसे ४-५-१४-१५-२२-२३-३१ ता० अनुकूल हैं। एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति सहयोग देगा। धन लाभ के लिए ४-५-६ या १०-१४-१५-१८-२३-२४ २७ ता० अच्छी हैं। सम्भव है कि ७-१६-२५ भी अच्छी रहें। उत्तरार्द्धमें प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति। विशेष व्ययसे बच पाना कठिन है। उत्सवादिमें सम्मिलन, दिनचर्या अस्तव्यस्त। ३०-३१ ता० नेष्ट।

जनवरी—जीवनमें कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आने वाले हैं और उनकी सम्भावनाएं प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेंगी। वे परिवर्तन इस मासमें भी हो सकते हैं और अगले मासमें भी। इस राशी वाले कुछ व्यक्तियोंको वे असुविधाजनक प्रतीत हो सकते हैं किन्तु उनका अन्तिम परिणाम निश्चित रूप से अच्छा है। प्रारम्भिक दिनोंमें कुछ निराशसे रहेंगे। किन्तु उत्तरार्द्धमें आत्मविश्वास बढ़ने लगेगा और मास समाप्त होते-२ आपमें नया उत्साह जाग उठेगा। चाहे जितनी बाधाएं दिखाई देती हों पर आपके लिए, जीवन को समुन्नत बनाने वाली, योजनाएं इसी मास आरम्भ कर देना हितकर रहेगा। नौकरीमें पदोन्नति, पर स्थानान्तरणकी सम्भावनाएं जन्म लेंगी। १-२-६-११-१४ या १५-१६-२३-२६ श्रेष्ठ। २७ नेष्ट।

मिथुन

नवम्बर—संघर्षों, बौद्धिक उलझनों और पारिवारिक समस्याओंसे युक्त होने पर भी यह मास सुधारों की सूचना देता है। कई समस्याएं सुलझ जाएंगी। शत्रुओं-बाधाओं पर विजय मिलेगी। उत्तरार्द्धमें परिस्थितियां अनुकूल रूप ग्रहण करेंगी। कलह विवादके अवसर आवेंगे किन्तु प्रयत्न करके उनसे बचा भी जा सकता है। सहयोगी मिल जाएंगे। एक अतिप्रिय व्यक्ति से भेंट। उन्नतिके अवसर मिलेंगे जिन्हें

आप व्यसनों-विलासोंमें खो सकते हैं। धन लाभ के लिए २-१०-१२-१६-२१-२७ या २८-३० ता० श्रेष्ठ हैं। सम्भव है कि १-११-२०-२८ या २९ भी अच्छी रहें। उत्सवादिमें सम्मिलन। सगे-सम्बन्धियों से वैमनस्य होगा। पत्नीसे विवाद। दौड़-धूप अवश्य। ३-१३-२२ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास संघर्षपूर्ण है। विभिन्न प्रकारकी समस्याएं आवेंगी और कुछ समयके लिए अव्यवस्थित हो उठेंगे। असावधान होने पर कलह-विवाद उत्पन्न हो जाएगा। श्रम और उद्योगमें मन न लगेगा। कष्टप्रद व्ययसे बच न सकेंगे। धन लाभके लिए ७-१६-२५ ता० अच्छी हैं। सम्भव है कि ९ या १०-१८-२७ भी अच्छी रहें। व्यापारकी स्थिति सुधारनेके लिए नकद या मालके रूपमें ऋण लेने की सोचेंगे। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधानी अपेक्षित है। प्रतिष्ठा बनी रहेगी। तुलनात्मक दृष्टिसे देखें तो प्रथमार्द्ध अधिक अच्छा है। अपने महत्त्वपूर्ण काम प्रथमार्द्धमें ही बना लेनेका प्रयत्न करना चाहिए। मित्रोंसे सहयोग की आशा नहीं है। २८ ता० नेष्ट।

जनवरी—अनेक शुभ फलोंसे युक्त होने पर भी इस मासको आपके लिए अच्छा नहीं कह सकते हैं। जीवनमें जमकर कोई काम कर पाना सम्भव न होगा। समस्याओं और मानसिक अशान्तिके कारण व्यसनों-विलासोंका सहारा लेनेका प्रयत्न करेंगे, किन्तु वहां भी तृप्ति और शान्तिकी आशा नहीं है। स्वजनोंसे वैमनस्य होगा और घर बाहर कलह-विवादके अवसर आ जाएंगे। नारी वर्गके झगड़ेसे सावधान रहनेकी आवश्यकता है। आर्थिक दबाव का अनुभव बार-बार होता रहेगा। १५-१६-१७ ता० में विशेष व्ययसे सावधान रहना चाहिए। लाभके स्थाई स्रोतसे लाभकी आशाएं दिखाई देंगी किन्तु उन आशाओंका पूर्णहो पाना कठिन है। एक नए रास्तेसे रकम मिल जाएगी। नौकरीमें कुछ दिनोंका अवकाश लेंगे। व्यापार में कोई मौलिक सुधार करेंगे।

कर्क

नवम्बर—यह मास परिस्थितियोंमें सामयिक सुधारोंकी सूचना देता है उत्तरार्द्धमें एक समाधानपूर्ण स्थितिमें पहुंच जाएंगे। अपनेको बदली हुई परिस्थितियोंके अनुकूल बनानेका प्रयत्न करेंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। सहयोगी मिल जाएंगे। उलझनें घटेंगी। कार्यकारी जीवन व्यवस्थित रूप ग्रहण करेगा। कामनाएं पूर्ण होंगी। धन लाभके लिए २-४ या ५-१२-१४ २१-२३ ता० श्रेष्ठ हैं। सम्भव है कि १-११-२०-२८ या २९ भी अच्छी रहें। व्यापारको बढ़ाने या सुधारनेके लिए ऋण लेने की सोचेंगे। पत्नीसे सेवा-सहयोगकी प्राप्ति। पारिवारिक सुखोंमें वृद्धि। घरमें उत्सव। एक अप्रत्यक्ष प्रेम सम्बन्ध चलता रहेगा। समाजमें मान और जनप्रियता। छोटी छोटी यात्राएं। १ और २८ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास अच्छा है। मूल परिस्थितियां यथा पूर्व रहेंगी किन्तु कई छोटी-२ समस्याओं का समाधान हो जाएगा। आपके चारों ओर उल्लासपूर्ण वातावरण होगा। श्रम और उद्योग करनेमें रुचि उत्तरार्द्धमें बढ़ जाएगी और प्रयासोंमें सफलता मिलने लगेगी। कामनाएं पूर्ण होंगी। उन्नति-प्रगति करने

योग्य इस समयमें आपका पर्याप्त समय व्यसनों और मनोरंजनोंमें नष्ट होगा। घर-बाहर कलह विवादके अवसर आ सकते हैं। धन लाभके लिए २-१२-२०-२९ ता० श्रेष्ठ हैं; आशाहै कि २-६ या १०-११-१८-१९-२८ भी अच्छी रहेंगी; आकस्मिक लाभ सम्भाव्य। किसी शुभ कार्यके कारण ऋण लेना पड़ सकता है। व्यापारमें प्रगति। हर्षदायक समाचार। वैवाहिक-पारिवारिक सुखोंकी प्राप्ति, घरमें एक छोटा मंगल कार्य। यात्राएं और दौड़-धूप। २६ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास आपके लिए संघर्षपूर्ण है। अपने कठिन और महत्वपूर्ण काम प्रथमार्द्धमें बना लेना चाहिए। धीरे-धीरे आपकी रुचि अस्वाभाविक विलासोंकी ओर बढ़ती जाएगी। इस अवधिमें अनैतिक आकर्षण चलते रहेंगे। इनके कारण या अन्य सामाजिक-पारिवारिक कारणोंसे घर-बाहर कलह-विवादके अवसर आवेंगे। नारी वर्गके झगड़ेसे सावधान रहना चाहिए। कभी चाहते हुए और कभी न चाहते हुए दौड़-धूप करनी पड़ेगी। समस्याओंको सुलझाने का जितना ही प्रयास करेंगे वे उतनी ही उलझती जाएंगी। स्थिर होकर श्रम और उद्योग न कर सकेंगे। फिर भी आप विवेक-पूर्वक उद्योग करें तो प्रयासमें सफलता अवश्य मिलेगी। नौकरीमें अनायास स्थानान्तरणकी सम्भावना सामने आ जाएगी। व्यापारमें मौलिक सुधार होंगे। २२ ता० नेष्ट।

सिंह

नवम्बर—यह मास महत्वहीन जैसा है। शुभाशुभ फल प्रायः समान मात्रामें प्राप्त होंगे। तुलनात्मक दृष्टिसे प्रथमार्द्ध कुछ अधिक अच्छा है। उत्तरार्द्धमें व्यसनों और मनोरंजनोंमें फंस सकते हैं। प्रयासोंमें सफलता पानेके लिए ४-१४-२३ ता० अनुकूल हैं। एक नीच व्यक्ति गुप्त शत्रुता करता रहेगा। कुछ रहस्यपूर्ण चिन्ताएं अशान्त बनावेंगी। धन लाभके लिए २-३-४-५ १२-१३-१४-२१-२२-२३-३० ता० अच्छी हैं। आशा है कि ८-१७-२५ भी अच्छी रहेंगी। २६-२७-२८ ता० में सावधान रहें। व्यापारको व्यवस्थित बनानेका प्रयत्न करेंगे। उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन; सुसमाचार। उत्तरार्द्धमें स्वजनोंसे वैमनस्य। मासान्तमें अप्रिय समाचार। १७ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास सुधारोंकी सूचना देता है। पहली तारीखसे जैसे जैसे समय आगे बढ़ेगा, शुभ फलोंकी वृद्धि होती चली जाएगी और मासान्त तक समाधानपूर्ण स्थितिमें पहुंच जाएंगे। मनमें शान्ति-संतोषका अनुभव करेंगे। तृतीय सप्ताहमें बौद्धिक उलझनें और पत्नी-पुत्रादिसे कलह। बीच बीच अनिद्रा और दुःस्वप्नोंसे असुविधा। उद्योग करनेका जी चाहेगा, किन्तु व्यसनोंमें फंसे होनेके कारण वैसा न कर सकेंगे। व्यापारको बढ़ाने हेतु नकद या मालके रुपमें ऋण लेंगे। टैक्स विभाग वालोंसे सावधानी अपेक्षित है। धन लाभके लिए १-२ ११-१२-१९-२०-२८-२९ ता० श्रेष्ठ हैं; आशा है कि ५-७-९ या १०-१४ या १५-१६-१८-२३ २७ भी अच्छी रहेंगी; दो छोटे आकस्मिक लाभ। घरमें उत्सव या मंगल कार्य। २४-२५ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास आपके लिए परिस्थितियोंमें सुधारकी सूचना देता है। कई समस्याएं

सुलझ जाएंगी । व्यक्तिगत सुख-सुविधाकी परवाह किए बिना उद्योग करेंगे । शत्रुओं-बाधाओं पर विजय मिलेगी । एक अप्रिय घटना के भी योग हैं। हो सकता है कि इस अनुकूल ग्रहस्थितिमें आप अस्वाभाविक व्यसनों-विलासोंमें फंस जाएं और समयका सदुपयोग न कर सकें। संघर्षोंके न होते हुए भी उनका अनुभव अकारण होता रहेगा । कुछेक गुप्त चिन्ताएं मनको व्यथित किए रहेंगी । धन लाभ की तुलनामें व्ययके योग कहीं प्रबल हैं । बहुत सम्भव है कि ऋण या संचित धनका सहारा लेना पड़े । २०-२१ ता० सावधान रहने योग्य हैं । धन लाभके लिए ६-७-८-१४-१५-१६-२३ २४-२५-२६ ता० श्रेष्ठ हैं । यह ता० प्रयासों में सफलता देने वाली भी हैं । ६ ता० श्रेष्ठ।

कन्या

नवम्बर—इस मासमें अस्थाई सुधार होंगे और वातावरण अनुकूल रहेगा । एक डेढ़ महीने रहने वाली इस ग्रहस्थितिका अधिकसे अधिक लाभ उठाना चाहिए। प्रयासोंमें सफलता औरशत्रुओं-बाधाओं पर विजय। कामनाएं पूर्ण होंगी । धन लाभके लिए २-७-१० १२-१६-१९-२१-२४-२७ या २८-३० ता० श्रेष्ठ है; लाभ स्रोतका विकास; दो रकमें हाथ आवेंगी । व्यापारको सुव्यवस्थित करके बढ़ावेंगे समाजमें प्रभाव वृद्धि; उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, भ्रमण-मनोरंजनके अवसर; हर्षदायक समाचार। एक रहस्यमय प्रेमाकर्षण चलता रहेगा । पत्नी से सहयोग और वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति । उत्तरार्द्धमें कुछ थोड़ी पारिवारिक समस्याएं आएंगी । स्वास्थ्य संतोषजनक । छोटी छोटी यात्राएं । ३ ता० नेष्ट ।

दिसम्बर—यह मास महत्वहीन जैसा है। अल्पाधिकरूपमें वैसी ही परिस्थितियां रहेंगी जैसी गत माससे चली आ रहीं हैं । धन लाभमें कमी आती जाएगी और उत्तरार्द्धमें आर्थिक दवाबके साथ ऐसा अनुभव होगा कि लाभके स्रोत सूखने लगे हैं । वैसे तो धन लाभके लिए ७-१६-२५ ता० श्रेष्ठ है; आशा है कि ४-९ या १०-१४-१८-२२-२७-३१ भी अच्छी रहेंगी। प्रथमार्द्धमें उत्साह और स्वबाहु बल पर विश्वासके साथ उद्योग करेंगे किन्तु १५ या १६ ता० से शिथिल पड़ जाएंगे । व्यसनों-विलासों में रुचि बढ़ेगी । असावधान रहने पर घर-बाहर कलह-विवादके अवसर आ जाएंगे । व्यापारकी स्थिति प्रायः असंतोषपूर्ण रहेगी । भ्रमण-मनोरंजनके अवसर; उत्सवादिमें सम्मिलन; सुसमाचार; कुछेक बाधाओंके साथ पारिवारिक सुख । २१ ता० नेष्ट ।

जनवरी—जीवनका तालमेल जब बिगड़ जाता है तो उसके बननेमें कुछ समय लगता ही है। यह भी हो सकता है कि आप तो स्थिति सुधारना चाहें और वह अकारण और भी उलझ जाए। यह मास संघर्षपूर्ण ही कहा जा सकता है। विभिन्न प्रकारकी बौद्धिक उलझनें आपके सामने आएंगी जिनके कारण पत्नी-पुत्र आदि स्वजनोंसे विवाद उत्पन्न हो जाएगा। सम्भव है कि इन सबसे छुटकारा पानेके लिए आप व्यसनों और मनोरंजनोंका सहारा लें। श्रम और उद्योग करनेमें मन न लगेगा और जो प्रयत्न करेंगे भी उनमें आंशिक सफलता मिलकर रह जाएगी। एक प्रतिष्ठित मित्र या पड़ौसी आपको भरपूर सहयोग देगा यह संतोष का विषय है कि मास समाप्त होते होते अर्थात्

३१ ता० को आपको आगामी शुभ परिवर्तनों की झलक मिल जाएगी। धन लाभके लिए ३ ४-१२-१३-२०-२१-३०-३१ ता० श्रेष्ठ हैं। १७ या १८ ता० नेष्ट।

तुला

नवम्बर—यह मास मिश्रित फल वाला है। स्थाई समस्याओंमें तो कमी न होगी किन्तु २१ ता० से अपनेको प्रतिकूल परिस्थितियोंका सामना करनेमें समर्थ अनुभव करने लगेंगे। कई समस्याओंका समाधान निकल आवेगा। उद्योग करनेमें रुचि बढ़ेगी। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी, धन लाभके लिए २-१२-२१-३० ता० श्रेष्ठ हैं। विशेष व्यय और हानिसे बच न सकेंगे, ३ से ६ ता० चिन्तनीय है। ऋण लेना पड़ सकता है। शीघ्र धनी बनाने वाली योजनाओं और कपटी व्यक्तियोंसे सावधान रहना चाहिए। व्यापार में पूंजी लगावेंगे। निकट सम्पर्क वालोंसे कलह वैमनस्यके अवसर आवेंगे। किसी शुभ या मंगल कार्यके भी योग हैं। सुखोपभोग और भ्रमण-मनोरंजनके अवसर प्राप्त होंगे। गिरती हुई प्रतिष्ठा संभल जाएगी। २२ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—जो एक दो स्थाई जैसी चिंताएं समस्याएं चल रही हैं, उनमें कमी न होगी। आर्थिक दबाव, गुप्त शत्रुओंकी सक्रियता, अनिद्रा और दुःस्वप्न, आशंकित मन आदि पूर्ववत् रहेंगे। फिर भी यह मास व्यापक सुधारोंकी सूचना देता है जो ३ ता० की दोपहर से प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेंगे। १६ ता० से आप में नया उत्साह जाग उठेगा और कठिनाइयोंका सामना करनेको कटिबद्ध हो जाएंगे। प्रयासों में सफलता मिलेगी। सहयोग देने वाले स्वतः पास आ जाएंगे। यह शुभ समय बहुत थोड़े दिनोंके लिए है और आपको चाहिए कि अपने महत्त्वपूर्ण काम जल्दीसे जल्दी बना लें। कई आर्थिक और सामाजिक समस्याओंका समाधान हो जाएगा। स्थायी साधन और विशेषकर कुछेक अन्य रास्तोंसे अच्छा धन लाभ होगा। उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, सुसमाचार, छोटी छोटी यात्राएं। १६ ता० नेष्ट।

जनवरी—इस मासको आपके लिए अच्छा नहीं कह सकते हैं। कुछ जटिल समस्याएं और आशंकाएं आपको व्यथित किए रहेंगी जिनका कोई संतोषजनक समाधान दिखाई न देगा। बीच-बीच अनिद्रा और दुःस्वप्न। मासके प्रथमार्द्ध में दृढ़ता और उत्साहपूर्वक कठिनाइयों का सामना करेंगे। मासान्त होते होते शिथिल पड़ जाएंगे और ठीक उसी समय कुछ बौद्धिक उलझनें भी उत्पन्न हो जाएंगी। किसी नए कारोबारमें यदि पूंजी लगा रहे हैं तो धन घटता चला जाएगा और आपकी योजना जैसी की तैसी रहेगी। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधान रहना चाहिए। नौकरीमें कुछेक दिनोंका अवकाश लेकर कहीं जाएंगे। पारिवारिक वातावरण आपको नाममात्र सुख व शान्ति दे सकेगा। यह अवश्य है कि पत्नीसे सहयोग मिल जाएगा। छोटी-बड़ी दोनों प्रकार की यात्राओंके योग हैं। १५ ता० नेष्ट।

वृश्चिक

नवम्बर—यह मास प्रगतिकी सूचना देता है। उत्साह पूर्वक उद्योग करेंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। दो तीन मित्र और परिजन सहयोग देंगे। व्यसनों-विलासोंमें रुचि बढ़ेगी। आपकी असावधानीसे घर-बाहर कलह-विवाद

के अवसर आवेंगे । धन लाभके लिए ४ या ५-१४-२३ ता० नेष्ट है, आशा है कि २-८-९-१२ १७-१८-२५-२६ भी अच्छी रहेंगी, आकस्मिक लाभ सम्भाव्य, लाभ स्रोतका विकास । विशेष व्यय और हानिसे बच न सकेंगे । किसी शुभ कार्यमें भी व्यय होगा । व्यापार बढ़ेगा । समाज में प्रतिष्ठा वृद्धि । कार्यकारी और सामाजिक जीवनमें गति आ जाएगी । पत्नीसे सहयोग और वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति । छोटी छोटी यात्राएं और दौड़धूप । २० ता० नेष्ट ।

दिसम्बर—प्रत्येक मनुष्यके जीवनमें अच्छे और बुरे समयके दौर आया करते हैं । ज्योतिष का उपयोग यही है कि उन समयोंकी जानकारी करके अनुकूल ग्रहस्थितिमें अपने जीवनके लक्ष्य की ओर बढ़नेकी चेष्टा प्राणपणसे की जाए और बुरे समयमें सावधान रहा जाए । आपके लिए उन्नति-सफलता-धन लाभ देने वाला दौर विगत कई मासोंसे चल रहा है, यह मास उसी की एक कड़ी है । जीवनमें आपका जो भी प्राप्तव्य हो उसके लिए निरालस्य होकर प्रयत्न करना चाहिए । विलासों और व्यर्थके सुखोप-भोगोंमें समय नष्ट करने पर बादमें पछताना पड़ेगा । उत्तरार्द्धमें आपमें एक चमत्कारिक उत्साह जाग उठेगा । सहयोगी आपके आसपास इकट्ठे रहेंगे । कोई महत्त्वपूर्ण सफलता या विजय भी मिल सकती है । नौकरी और व्यापार दोनोंमें उन्नित और विकासके योग हैं । अनेक प्रकारसे धन लाभ ।

जनवरी—जिस शुभ समयकी प्रतिक्षा आप बहुत लम्बे समयसे कर रहे थे वह समय लगा-तार चल रहा है । आप कितनी उन्नति करेंगे और कितने धनी बनेंगे, इसका निर्णय इस मास होना है । जिस उत्साहसे आप उद्योग कर रहें हैं उसमें मध्य माससे वृद्धि होगी । प्रयासोंमें निश्चित सफलता मिलेगी । कोई महत्त्वपूर्ण सफलता या विजय भी मिल सकती है । सहयोग देने वाले मिलेंगे । नौकरीमें अभी तक पदोन्नति नहीं हुई है तो इस मास हो जाएगी । व्यापार बढ़ेगा । कोई नई योजना आरम्भ करेंगे । उत्सवों और अन्य कार्यक्रमोंमें सम्मिलित होंगे जिनसे आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी । दावतोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार, छोटी मोटी यात्राएं । विपुल धन लाभ, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा । कोष की वृद्धि ।

धनुः

नवम्बर—यह मास अस्थाई सुधारोंकी सूचना देता है । प्रयासोंमें सफलता मिलेगी । इस दृष्टिसे ४ या ५-१४-२३ ता० अनुकूल हैं । कामनाएं पूर्ण होंगी । कुछ रहस्यपूर्ण चिन्ताएं बराबर रहेंगी । उत्तरार्द्धमें क्रोधमें वृद्धि । धन लाभके लिए ३-४-५-१४-२१-२३ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ८-१०-१७-१९-२५-२७ भी अच्छी रहेंगी, एक दो छोटे आकस्मिक लाभ, नवीन वस्त्र-वैभव । विशेष व्ययके योग पूर्ववत् चलते रहेंगे । व्यापारको सुव्यवस्थित करनेका प्रयत्न बार बार करेंगे । भ्रमण-मनोरंजनके अवसर, उत्सवों-कार्यक्रमोंमें सम्मिलन, हर्ष-दायक समाचार । पत्नीसे सेवा-सहयोगकी प्राप्ति । साथ ही छुट-पुट पारिवारिक समस्याएं, एक प्रिय जनसे विछोह । ९-१८-२६ ता० नेष्ट ।

दिसम्बर—यह मास आपके लिए कुछ नई समस्याएं और कुछ उतार चढ़ाव लेकर आया

है तुलनात्मक दृष्टिसे देखें तो प्रथमार्द्ध और उसमें भी प्रथम सप्ताह अधिक अच्छा है। १५ ता० पहुंचनेके पहले ही कोई समस्या उठ खड़ी होगी और आप आशंकाओंसे ग्रस्त हो जाएंगे। एकाएक यह समझ पाना कठिन होगा कि क्या करें और क्या न करें। यह भी सम्भावनाएं हैं कि निकट सम्पर्क वालोंसे कलह विवाद हो और उस समय क्रोधमें आपके मुखसे कटु शब्द निकलने लगें। कुछ व्यक्ति अकारण शत्रुता कर बैठेंगे। परिस्थितियों को नियन्त्रणमें लानेके लिए प्रयत्न करेंगे किन्तु उन प्रयत्नोंके थोड़े ही सुपरिणाम मिलकर रह जाएंगे। धन लाभके योग सीमित मात्रामें हैं। विशेष व्यय और हानिसे शायद ही बच सकें। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधान रहें।

जनवरी—यह मास आपके लिए अच्छा है, जीवन और दिनचर्यामें अव्यवस्थामें भी दृढ़ता के साथ उद्योग करेंगे। समस्याओंका समाधान होगा और उज्जवल भविष्यकी सम्भावनाएं जन्म लेंगी। चारों ओर का वातावरण भी बदलने लगेगा। ६ ता० को प्रफुल्लित करने वाली कोई घटना हो सकती है। समाजमें मान, सुखोपभोग और खान पानके अवसर, उत्सवादिमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार आदि शुभ फल प्राप्त होंगे, पत्नीसे सेवा-सहयोग की प्राप्ति। नौकरीमें पदोन्नितिकी एक क्षीण आशा है। नई व्यवस्थाके साथ व्यापार बढ़ेगा। धन लाभके लिए १ या २-६-८-११-१३-१४ १५-१६-१९-२१-२३-२५ या २६-२९ ता० अच्छी हैं। मासान्तमें विशेष व्यय। दौड़ धूप अवश्य।

मकर

नवम्बर—यह मास सुधारोंकी सूचना देता है। २ ता० से शुभ फलोंमें वृद्धि होने लगेगी। सहयोग देने वाले मिल जाएंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। धन लाभके लिए ८-९-१०-१८-१९-२५-२६-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, सम्भव है कि ३-६-१३-२२ भी अच्छी रहें, आकस्मिक लाभ सम्भाव्य। विशेष व्यय या हानिकी सम्भावना भी है। व्यापार बढ़ेगा उसमें पूंजी भी लगावेंगे। समाजमें प्रतिष्ठाकी वृद्धि, भ्रमण मनोरंजनके अवसर, उत्सवादिमें सम्मिलन, एक अति प्रिय व्यक्तिसे भेंट, हर्षदायक समाचार। पारिवारिक सुखोंमें छुट फुट बाधाएं आती रहेंगी। एक अवांछनीय प्रेम संबन्धके योग चल रहे हैं। पत्नीसे सेवा-सहयोगकी प्राप्ति। दौड़ धूप अवश्य। १५ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—इस मासको पर्याप्त अच्छा कह सकते हैं। कुछेक छोटी-छोटी शुभ और हर्षदायक घटनाएं घटित होंगी। मन उल्लसित हो उठेगा और नई महत्वकांक्षाएं जन्म लेंगी। श्रम और उद्योग करनेमें उत्साह रहेगा। प्रयासों में सफलता मिलेगी। ऐसा प्रतीत होगा कि भाग्योदय होने वाला है। धर्म पर आस्था बढ़ेगी। बहुत सम्भव हैं कि किसी धार्मिकोत्सव या मंगल कार्यमें भाग लें। अन्तिम सप्ताहमें अकारण क्रोध की मात्रा बढ़ सकती है और छुट फुट कलह विवादके अवसर आ सकते हैं। व्यसनोंमें अस्वाभाविक वृद्धि होगी। अपने कठिन और महत्वपूर्ण कामों को इसी मासमें बना लेना हितकर रहेगा। धन लाभके लिए ५-६-१४-१५-१६-२३-२४ ता० श्रेष्ठ हैं। १३ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास विशेष व्यय और उतार-चढ़ाव लेकर आया है। कुछ नई छोटी समस्याएं जन्म ले सकती हैं। प्रथम तीन दिन लाभ और सफलताके रहेंगे। ४ या ५ ता० से अनायास व्यय बढ़ जाएंगे और एक नई चिंता उत्पन्न हो जाएगी। अन्य ग्रहोंकी स्थिति सबल और अनुकूल होनेसे अप्रिय परिस्थितियोंको सहज ही नियन्त्रणमें रख सकेंगे। क्रोध और खीझसे बचते रहनेमें ही कल्याण है। नौकरीमें स्थानान्तरणकी सम्भावनाएं सामने आ जाएंगी व्यापारमें पूंजी लगावेंगे। धन लाभके लिए १-२-३-११-१२-१३-१६-२०-२१-२८-२६ ता० श्रेष्ठ हैं। किन्तु लाभसे अधिक व्यय होगा जो हानिकी सीमा तक पहुंच जाएगा। समाजमें प्रतिष्ठा बनी रहेगी। किसी सामाजिक या धार्मिक कार्यक्रममें भाग लेंगे। राहुके अष्टम स्थानमें होनेसे जीवनकी गहराईमें कुछ रहस्य-मय चिंताएं चलती रहेंगी। ९ ता० नेष्ट।

कुम्भ

नवम्बर—यह मास सुधारोंकी सूचना देता है। मूल समस्याएं पूर्ववत् रहेंगी किन्तु बाहरी वातावरण अनुकूल हो जाएगा और उत्साह पूर्वक श्रम करनेकी स्थितिमें होंगे। यह अनुकूल समय प्रायः दो मास रहेगा और आप को अपने अधूरे या बिगड़े काम इसी अवधिमें बना लेने चाहिए। धन लाभके लिए २-६-१२-१८-२१-२६-३० ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ६-१५-२३ या २४ भी अच्छी रहेंगी। लाभ स्रोतका विकास, विशेष व्यय और हानिके योग उत्तरार्द्धमें मध्यम पड़ जाएंगे। व्यापार को व्यवस्थित रूप देंगे। समाजमें मान, उत्सव आदिमें सम्मिलन, सुसमाचार, ११ से १३ ता० के बीच एक अति प्रिय व्यक्तिसे भेंट। पारिवारिक सुखोंमें वृद्धि। एक छोटा मंगल कार्य सम्भाव्य। दिनचर्या अस्त-व्यस्त रहेगी।

दिसम्बर—जो समस्याएं और असुविधाएं विगत कई मासोंसे चली आ रही हैं वे जैसीकी तैसी रहेंगी। उनके रहते हुए आप उत्साह और आत्मविश्वासके साथ उद्योग करेंगे और आशा है कि बिगड़ी परिस्थितियोंको अस्थाई रूपमें सुधार सवांर लेंगे। आपका एक साथी साथ छोड़ देगा किन्तु उसके साथ छोड़नेके एक सप्ताह पूर्व ही एक दूसरा सहयोगी मिल जाएगा। व्यसनोंमें रुचि रखते हुए भी कार्य-कारी जीवनमें प्रगति की ओर बढ़ने का प्रयत्न करेंगे। निकट सम्पर्क वालोंसे वैमनस्य होनेके योग भी हैं किन्तु सावधान रहने पर उनसे बचा जा सकता है। उत्तरार्द्धमें अधिक आर्थिक दवाब बढ़ जाएगा। अवश्यकताओंको पूर्ति भरको धन लाभ होता रहेगा, इस सम्बन्धमें ६-७-६ या १०-१५-१६-१८-२४-२५-२७ ता० श्रेष्ठ हैं। नौकरी और व्यापारमें सुधार। दिनचर्या अव्यवस्थित।

जनवरी—आप नौकरी करते हैं तो इसी या अगले मास आपका स्थानान्तरण हो जाएगा, व्यापार करते हैं तो व्यवसाय बदलने या चल रहे कारोबारके साथ कोई नयी योजना आरम्भ करने और उसमें पूंजी लगाने का निश्चय कर लेंगे। आप कोई भी काम करते हों आपको पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधान रहना चाहिए। जीवनमें कुछ मौलिक परिवर्तन होनेके योग आ गए हैं जिन्हें टाल पाना बहुत ही कठिन होगा। वैसे यह मास अच्छा है और

प्रयासोंमें सफलता की सूचना देता है। आवश्य-क्ताओंकी पूर्ति भरको धन लाभ हो जाएगा। धन लाभ और सामाजिक दृष्टिसे ६ ता० महत्वपूर्ण है। आपकी लापरवाही से आपके सहयोगी साथ छोड़ने लगेंगे। ऊपर जिन परिवर्तनोंका उल्लेख है वे मासान्तमें या फरवरी के प्रथम सप्ताहमें घटित होंगे। अपने उलझे हुए काम शीघ्र से शीघ्र बना लेनेका प्रयत्न करना चाहिए।

मीन

नवम्बर—यह मास अच्छा है। लेकिन ऐसा लगता है कि आपकी रुचि व्यसनों-विलासोंमें रहेगी, समुचित श्रम और उद्योग न कर सकेंगे। हो सकता है कि उत्तरार्द्ध में जोश क्रोध या जल्दबाजीमें कोई ऐसा काम कर बैठें कि बादमें पछताना पड़े। सहयोग देने वाले मिलेंगे पर वे अधिकांशमें समय नष्ट करेंगे। कुछ मूलभूत उलझनें चलती रहेंगी जो ६-१५-२३ या २४ ता० में बढ़ सकती हैं फिर भी प्रयत्न करें तो सफलता अवश्य मिलेगी। धन लाभके लिए १-२-४ या ५-११-१२-१४-२०-२१-२३ ता. श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ८-१७-२५ भी अच्छी रहेंगी, प्राचीन धन या बकाया रकम की प्राप्ति। उत्तरार्द्ध में व्यापारमें थोड़ी प्रगति होगी। समाजमें मान। उत्सवादिमें सम्मिलन पत्नीसे सेवा-सहयोगकी प्राप्ति। ११ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास अपके लिए चतुर्मुखी सुधारोंकी सूचना देता है। सम्भव है कि प्रथम तीन सप्ताहोंमें सफलताके मार्गमें अकारण बाधाएं उत्पन्न होती रहें। किन्तु आप कठिनाइयोंसे हार न मानकर पूरे मनोयोगसे श्रम और उद्योग करते रहेंगे। प्रयासोंमें निश्चित सफलता मिलेगी। आपके पास उन्नति और प्रगतिकी योजनाएं हो और उन्हें आपने गत मास आरम्भ न किया हो तो इस मास शुरू कर देना चाहिए। सहयोग देने वाले मिलते रहेंगे, किन्तु यह भी ही सकता है कि जीवन सुधारने-संवारने योग्य इन दिनोंमें आपकी रुचि व्यसनों विलासोंमें बढ़ जाए और आप उसीमें अपनी प्रतिभा और समय का अपव्यय करते रहें। आवश्यकताओं की पूर्तिके लिए पर्याप्त धन मिलने लगेगा। ८ ता. नेष्ट।

जनवरी—यदि आप जीवनमें कोई महत्व पूर्ण काम करना या बड़े आदमी बनना चाहते हैं तो इससे अधिक अनुकूल ग्रहस्थिति मिल पानी कठिन हो जाएगी। चतुर्मुखी शुभ फल देने वाले योग आ गए हैं और अब क्या उपलब्धियां होती हैं यह आपके निजी भाग्य पर निर्भर है। अपने महत्वपूर्ण काम इस मासके भीतर ही और यथासम्भव प्रथम तीन सप्ताहों में ही बना लेनेका प्रयत्न करना चाहिए। कामनाएं पूर्ण होंगी। बड़े २ पुरुष सहायता देने आ जाएंगे। कुछ समयके लिए शत्रु भी मित्र बन जाएंगे। लेकिन आपके सगे-सम्बन्धी आप से ईर्ष्या करेंगे। नौकरीमें पदोन्नति होगी। व्यापार बढ़ेगा और फैलेगा। बेकार हैं तो काम धन्धे से लग जाएंगे। इस राशि वाले बहुतोंके विवाह होंगे। विपुल धन लाभ। नवीन वस्त्र वैभव की प्राप्ति। समाजमें मान प्रतिष्ठा की वृद्धि। उत्सवों और कार्य-क्रमोंमें सम्मिलन।

★

मुहूर्त्तका शुभ-अशुभ प्रभाव अवश्यंभावी है

[लेखक—श्री पं० कालीचरण शर्मा, सनावद (म०प्र०)]

ज्योतिश्शास्त्रमें मुहूर्त्तोंका बहुत विस्तार से वर्णन मिलता है, जिसमें विवाह-यात्रा (अर्थ यात्रा, समरविजय यात्रा, तीर्थ यात्रा) के साथ नूतन गृहनिर्माण एवं प्रवेशके लिए भी विस्तृत विचार किया गया है। मुहूर्त्त महिमाके सम्बन्ध में—

शुभ क्षण क्रियारंभजनिता पूर्वसंभवाः।
सम्पदः सर्वलोकानां ज्योतिस्तत्र प्रयोजनम् ॥

शुभ क्षण (मुहूर्त्त)में जिस कार्यका आरंभ होता है, वहां सभी प्रकारकी सिद्धियां सुविधाएं प्राप्त होती हैं एवं अशुभ वेलामें आरंभ हुए कर्मोंमें विघ्न बाधा उपद्रव, अशान्तियां होती ही रहती हैं। इसी महत्त्व को समझ कर जन-साधारण शुद्ध मुहूर्त्तकी जानकारीके लिए किसी दैवज्ञके पास जाता है। भगवान् श्री रामचन्द्र जीने वायुपुत्र अंजनीकुमारके द्वारा संहार्य शत्रु के दुर्गसे नारीकी जानकारी ली और लंकानगर प्राकार दुर्ग सेना गुप्ति आदि सभी युद्ध विषयक ज्ञातव्य विषय समझ कर "विजय मुहूर्त्त"में वानर सेनाके साथ प्रस्थान किया था। आशय यह कि शुभ मुहूर्त्तका परिणाम शुभ होता है, अशुभ मुहूर्त्तका परिणाम अशुभ होता है। "**चिकित्सितं ज्योतिष मंत्रवादाः पदे पदे प्रत्यय-मावहन्ति**" चिकित्सा, ज्योतिष और मंत्र विद्या प्रतिपद पर विश्वास उत्पन्न करने वाले शास्त्र में यदि कोई ज्ञान या अज्ञानवश केवल पृच्छक की इच्छा एवं अपना हित सम्पादन के हेतु शास्त्रविरुद्ध कालमें मुहूर्त्त बतलाते रहते हैं जिस का कुपरिणाम अन्ध श्रद्धालु व्यक्तियोंको भोगना ही पड़ता है—साथ ही शास्त्र-विरुद्ध अशुभ समयमें मुहूर्त्त निर्देश करने वाले पंडितम्मन्य को—

प्रायश्चित्तं चिकित्सां च ज्यौतिषं धर्मनिर्णयम्।
विनाशास्त्रेण यो ब्रूयात् तमाहु ब्रह्मघातकम् ॥

श्लोकोक्त दोषका भागी बनना पड़ता है। ज्योतिषशास्त्रके मुहूर्त्त नियमोंके विरुद्ध किए गए क्षणोंमें जो घटनाएं हुई हैं उनका संक्षिप्त वर्णन लिखता हूं—

इस वर्ष खंडवाके एक सम्पन्न गृहस्थको वैशाख शुक्ला १३ सोमवार हस्तनक्षत्र स्थिर लग्नमें मुहूर्त्त दिया गया जो 'श्रीविश्व-विजय पंचांग' पृष्ठ २१ पर छपा है, इसमें सभी अयन मास तिथि वार नक्षत्र कुंभचक्र शुद्ध ही छपे हैं, इसको गलत बतला कर द्वि. ज्येष्ठ शुदी १३ गुरु वार अनुराधा नक्षत्रमें बहुत शुद्ध बतलाया और नूतन गृहप्रवेश कराया। इस मुहूर्त्तमें शुद्धता के तत्त्व इस प्रकार हैं:—

नूतनगृह-प्रवेशमें उत्तरायण अच्छा माना है जो मुहूर्त्तके कई दिन पूर्व दक्षिणायन आ चुका है। गृहप्रवेशमें सौर चान्द्रमासमें फलाफल में विरोध होनेसे वृषभार्क तक ज्येष्ठ ग्राह्य है। मुहूर्त्तमें मिथुनार्क है जो मिथुनार्क युक्त ज्येष्ठ वर्ज्य है। मध्यप्रदेश गंगा गोदावरीके अन्तरालमें सिंहस्थ गुरु "**अथ गोदोत्तरतश्च यावत् भागीरथी याम्यतटे दोषो नान्यत्र**। गोदावरी नदी तस्या उत्तरतीरमारम्य भागीरथीयाम्यतटं मर्यादि-कृत्य यो देशस्तत्र सिंहस्थ गुरुर्वर्ज्यो नान्यदेशे।"

अनुराधा नक्षत्र है जिसको राहुका वेध है इस का फल—

उत्पातभं ग्रहणभं क्रूरविद्धस्थितं च यत्।
दहत्येव शुभंकर्म राघवाग्निशरोम्बुधिम् ॥

उत्पातभ, ग्रहण नक्षत्र, क्रूरविद्ध, पाप स्थित नक्षत्रशुभकर्ममें वर्ज्य कह कर उसका फल भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके अग्नि-वाणसे समुद्र शोषणकी तरह समस्त शुभ कर्म दग्ध हो जाते हैं। ऐसा एक दोष ही दुःखदायी माना है जहां अनेक महादोष हों वहां पर शुभ शुद्ध मुहूर्त्त बतलाना विद्वत्समाजका काम नहीं, यह तो स्वार्थान्ध व्यक्ति ही कर सकते हैं।

(१) मैं सर्व प्रथम ज्योतिष-शिक्षा पा कर आया ही था, यहां सनावदमें एक श्रीमन्तके घर पर नूतन गृहप्रवेश था, उस वास्तुकर्ममें मैं भी था। आचार्य बाहरसे आए थे। मैंने उनसे निवेदन किया आपके निर्णयमें त्रुटी रही है, यदि यही मुहूर्त्त रहा तो मकान परहस्त-गत होगा। आचार्य बोले—भाई अब तो सब तय्यारी हो गई यही मुहूर्त्त रहेगा। परिणाम उस गृहस्थकी स्थिति निर्बल हो गई। (२) नर्मदाजीके दक्षिण तट पर एक धर्मशाला थी, वह जीर्ण थी, खंडवाके एक भक्तने उसके चारों ओर परकोटा बनवाया, कूप खुदवाया, सनावदके एक अग्रवालने दो कमरे बनवाए, वहीं पर बनारसके रामानुजसंप्रदायाचार्य स्वामी सालिगरामाचार्य एक मंदिरकी नींव खुदवा रहें थे, मैं भी पहुंच गया, खंडवाके प्रसिद्ध वैद्य ब्रजमोहनजीने पूछा आज मुहूर्त्त कैसा है ? मैंने कहा मुहूर्त्त ठीक नहीं, नींव नहीं खुदेगी, खुद जाएगी तो नींव भरेगी नहीं, नींव भर दी गई तो मंदिर नहीं बनेगा। आज वहां न धर्मशाला है, कूपमें मिट्टी भर गई जो कुछ था वह भी नष्ट हो गया। वैद्यजी अभी भी मौजूद हैं, पूछा जा सकता हैं। ३) उक्त स्थानके सामने एक बृहत्काय शिवजीकी स्थापना दुर्मुहूर्त्तमें हुई जो यजमान बनाया; एक मास में काल-कवलित हुआ। (४) सनावदमें ही गौशालामें एक शिवमंदिर बना, उसका निर्माण प्रतिष्ठा हमारे पड़ोसी अग्रवालने कराई; मुहूर्त्त अशुद्ध था, परिणाम गृहस्वामी एक वर्षके अन्दर परलोक यात्रा कर गये। (५) सनावद में ही मुरली-मनोहरजीके मंदिरका जीर्णोद्धार हुआ, अमावस्यासे आरंभ हुआ कार्य बुधवारके अभिजिन्मुहूर्त्तमें स्थापना हुई; अभिजित् मुहूर्त्त बुधवार को निषेध है, मध्यास्त लग्न गण्डान्त था, जिसका परिणाम यजमान बने थे उनके यहां मुहूर्त्त पाक काल ज्ञान के अनुसार अवधि के अन्दर ४०-५० तोला सोना चोरी हो गया, आज तो बहुत विशेष मूल्यका होता, वह चोरी आज तक नहीं मिली। (६) धामनोदमें श्री व्यंकटेश्वरके मन्दिरकी प्रतिष्ठा हुई, उसमें शास्त्रीय नियमोंके उल्लंघन हुए, परिणाम उस यजमानकी आर्थिक स्थिति धीरे-धीरे बहुत निर्बल हुई। (७) गत मकरके गुरुमें एक सज्जन तीर्थ यात्रा मुहूर्त्त पूछने आए, तीर्थ यात्रा मुहूर्त्तकी चर्चा तीर्थ प्रघट्टमें है, हमने कहा मुहूर्त्त नहीं बनता. कहते हुए भी कुछ व्यक्तियोंने यात्रार्थ प्रस्थान कर दिया। यह घटना २००५ संवत्की है,परिणाम एक व्यक्तिका मोटर की टक्करसे सिर फटा, १० टांके लगे, कई घंटे पश्चात् चैतन्यता आई, यह आज भी जीवित है। एक खो गया, जिसका पता बहुत समय बाद मिला। एक सज्जनके चोरी हुई ७००-८०० रु०की हानि हुई। यात्रासे लौट

कर यात्रा सफलताकी प्रसन्नतामें श्रीक्षेत्र ओंकारेश्वरमें ब्रह्म-भोजकी व्यवस्था हुई, किसी ब्राह्मणको अपशब्द कह देनेसे एक भी ब्राह्मण जीमने नहीं आया। और तो ठीक भोजनका सामान मच्छियों को नर्मदाजीमें डाला गया, वह अन्न मच्छियों ने भी नहीं खाया। यह यात्रा कैसी रही पाठक स्वयं निर्णय करें। (८) सनावद में एक किराणाकी दुकान थी, उस जमानेमें केवल २५ हजारकी पूंजीसे काम होता था। हमसे अर्थ यात्राका मुहूर्त्त पूछा, वराहमिहिराचार्यकी योग यात्राके अनुसार, नक्षत्र यात्रा को छोड़ कर योग यात्राका मुहूर्त्त दिया, २० दिनों मेंही उसको १० हजारका लाभ हुआ, उस दुकानके मुनीम बस्तीमलजी जैन आज कलकत्ते में किसी बड़े फर्म पर काम कर रहे हैं, ऐसे और भी कई अनुभव हुए हैं।

हमने मुहूर्त्त शास्त्रकी सत्यताका कई बार अनुभव किया है। जो लोग अपने निर्णय के परिणाम पर ध्यान नहीं देते उन्हें अपने दिये मुहूर्त्तों पर घटित घटनाओंके ऊपर विचार करनेसे शास्त्रकी सत्यता समझमें आ जाएगी।

त्रैमासिक अचूक चांस—सोना चांदी

[लेखक—श्री पं० नरोत्तमदेव दीक्षित, हाथरस (उ०प्र०)]

कार्तिक मास

दि. २५ से २८ अक्टूबर तक चांदी व सोना पर तेजी जरूर आवेगी। घटावढ़ीसे तेजी आनेकी गारंटी होगी। ३० व ३१ अक्टूबरमें चांदी पर मंदी आवेगी। ६ व ७ नवम्बरमें चांदी तेज रहेगी। १२ नवम्बरमें सोना व चांदीमें मंदी फलेगी। १९ व २० नवम्बरमें चांदी व सोना पर मंदी जरूर आवेगी। २१ व २२ नवम्बरमें चांदी तेज होगी।

मार्गशीर्ष मास

दि. २६ से २८ नवम्बरके दोपहर तक चांदी पर मंदी आवेगी। २९-३० नवम्बरमें चांदी व सोना तेज रहेंगे। ३ दिसम्बरमें चांदी की मंदी फलेगी। ५-६ दिसम्बरमें चांदी तेज रहेगी। ७ से १० दिसम्बर तक भी चांदी पर मंदी आवेगी। १० से १२ दिसम्बर तक चांदी पर तेजी आवेगी। १५ से १९ दिसम्बर तक चांदी व सोना पर तेजी जरूर आवेगी। घटा बढ़ीसे तेजी आनेकी गारंटी होगी।

पौष मास

दि. २२ दिसम्बर को चांदी व सोनाकी तेजी फलेगी, २३ दिसम्बरकी शामसे २४ तक चांदी कुछ मंदी होगी। २८ दिसम्बरमें सोना व चांदीकी तेजी फलेगी। ५ जनवरीमें चांदी मंदी होगी। ८ जनवरीमें सोना व चांदीकी तेजी फलेगी। १२ जनवरीमें चांदी मंदी होगी। १५ जनवरीमें चांदीकी मंदी फलेगी। १६ जनवरीकी शामसे १८ तक चांदी पर तेजी आती रहेगी। १९ जनवरीमें चांदी मंदी हो जायगी।

आकाशी कौन्सिलका त्रैमासिक कमर्शियल जजमेंट

[ले०—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन पर्जन्य एवं अर्घकाण्ड-वाचस्पति, मैंनपुरी (उ०प्र०)]

कार्तिक मास

इस मासमें ५ शुक्रवार होनेसे सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी, २४ अक्टूबर कृष्णा १ को उ.प्र. हरयाना पंजाब राजस्थान म.प्र.में सूर्य-चन्द्र पर कुण्डल देख कर अथवा विश्वस्त सूचना पा कर तिलहन-दलहन खरीदनेसे महान् लाभ होता है। ता. २५ को कन्यामें शुक्र होते ही शी. शनि+गुरु+शुक्र योगसे बादल वर्षा या वायुवेग। सोना चांदी सर्वधातु तिलहन दलहन गुआरमें कोई जबर्दस्त चाल. गुड़ खांडमें मन्दा, २४ अक्टोबर या २१ को इसी योगसे सभी वस्तुएं मन्दी। ता.२६ को सायं ज्येष्ठामें भौमसे सोना चांदी सर्वधातु रुईके साथकी वस्तुएं सूत पाट रेशम ऊन कालीमिर्च कपड़ा कागज़ तथा तिलहन-दलहन गुआर गुड़ खांड तेज। ता. २८ को चन्द्र-शनि केन्द्रसे शेयर्स तिलहन गुआर तेज, गुड़ मन्दा, ११।४० बजे पश्चिमास्तो बुधसे बादल वर्षा वायुवेग या शीत वृद्धि। (कुम्भांशे गुरु-शुक्र भी समर्थक) किराना सोना तेज, ता. २३ को वस्तुओंकी चली लाइन आजसे बदलेगी। ता. ३० को गुरु-पुष्यामृत योगसे सभी वायदे तेज, २ बजेसे अच्छी तेजी, ता० ३१ को गुरु-शुक्र युति (मीनांशे गुरु-शुक्र) रातसे २ नवम्बर तक कहीं बादल चालसे वर्षा, गुड़ खांडके साथ तिलहन-दलहन गुआरमें मन्दा, सोना-चांदीमें कोई तूफानी चाल, ता. २५ को वस्तुओंकी चली लाइन आज बदलेगी। ज्येष्ठामें शीघ्री भौम को सूर्यका चरणात्मक वेध ता. ५ तक सोना चांदी सर्व धातु रुईके साथकी वस्तुयें तेज, खाद्य वस्तुयें मन्दी भी सम्भव, क्योंकि मकरांशे राहु भौमसे ता. २ तक तिलहन मन्दे, दलहन गुआर तेज होंगे। १ नवम्बर को गुरु-शुक्र क्रान्तिसाम्य (युति)से सभी वायदे मन्दे, ता० २ को ३।३४ बजे हस्ते शुक्र (मेषांशे शनि-बुध-शुक्र कल तक बादल चाल)से सोना चांदी सर्व धातु रुईके साथकी वस्तुएं तथा अन्य सभी वस्तुएं मन्दी, ता. ४ को चन्द्र-गुरु युतिसे सभी वायदे मन्दे, ता. ५ तेजी, चन्द्रमा पृथ्वीसे अति दूर, चांदीके साथ हर वस्तु तेज, ता. ६ को विशाखामें रवि (मेषांशे) शनि-सूर्य ता. ८ तक शेयर्स तिलहन गुआर तेज, सोना चांदीके साथ सभी वस्तुयें तेज। ता. ७ को चन्द्र बु. युतिसे गुड़ तिलहन गुआर वायदे मन्दे शेयर्स चांदी तेज, आज ही स्वाती नक्षत्रमें शुक्रवारा दीपोत्सव विशाखामें गोवर्धन पूजा होगी यथाफल— **"स्वातिमें दीवा जलै विशाखा खेलै गाय। घना गयन्दा रण चढ़ै उपजी शाख नसाय।।"** तदनुसार उपजका नाश तथा आसाममें प्रकृतिप्रकोप और साम्प्रदायिक उत्पात, गृहयुद्ध। कार्तिक शुक्ला १ शनिवारी होनेसे आगे आषाढ़ी पूर्णिमासे अनाज तेज, श्रावण मासमें बेचना, अथवा आश्विन मास तक डयौढे दोगुने भाव। विक्रम संवत् २००४/७ में गुड़ (गोल) अनाजमें भयानक तेजी आई थी। १० नवम्बर ८० को वैधृतपात योग शुक्ला ३ की वृद्धिसे देशी घी मूंग (मग) दलहन उड़द रमास (लोबिया) मन्दे।

आज ही पूर्वोदयी बुधसे सभी वस्तुओंमें भयानक चाल, बादल वर्षा वागुवेग तो कहीं शीतवृद्धि होगी। सोना चांदी सर्व धातुके साथ सभी वस्तुएं तेज। खुलते मार्केट चन्द्र-शुक्र त्रिरेकादशसे चना कपासियामें तेजी। १ बजे भौम नेपच्यून युतिसे सभी वायदे तेज होंगे। आज सोमवारसे मुसलमानी सन् १४०१ हिजरीका प्रारम्भ, अत: यवन क्षेत्रोंमें वर्षा श्रेष्ठ, अन्नादि १ वर्षमें मन्दे, वृद्ध नेताओंकी मृत्यु, दूध-दही-घीकी अधिकता, रुई कपास तिल गन्ना और फलोंकी उपज उत्तम। स्त्री पुरुषों में रोग प्रकोप, वायुके जोरसे वृक्षोंका नाश होगा। ता. ११ शुक्ला ४ मंगलवारी शुक्ला ७ शुक्रवारीसे चांदी गुआर दलहन (कठोल) तेज। ता. १२ शुक्ला ५ बुधवारीसे गुजरातमें खलवली उधर सभी खाद्य वस्तुएं विशेष तेज, सायं ४।३७ बजे बुध मार्गी से कहीं कहीं बादल तो कहीं वायुवेग, ता. १० को चली वस्तुओं की लाइन ता. १२ सायंसे ता. १३ को बड़े हो जोर-शोरसे बदलेगी। ता. १३ को ३ बजे चित्रा शुक्रसे सभी वस्तुएं मन्दी, किन्तु रात को ६।४१ बजे शी० धनुषि भौम, शनि-भौम केन्द्र से कहीं बादल वर्षा तो कहीं वायुवेग शीत वृद्धि मूल द्रव्य आलू प्याज लहसुन अदरख सोंठ हल्दी शेयर्स लकड़ी फर्नीचर देशी घी सोना चांदी तांबा जस्ता पीतल सर्वधातु दालचीनी लोंग सुपारी कत्था जावित्री जायफल लाल व काली मिर्ची, एरण्डा तिलहन-दलहन गुआर गुड़ खांड खली तेज, रंग रोगन रसायन तिल केड़ियम हाइड्रो क्षार द्रव्य कैमीकल्सके चलते रुखमें परिवर्तन अथवा तेजी होगी। ता. १५ को सभी वायदे तेज, आज ही रातको हस्ते-गुरु (मेषांशे) सभी वस्तुओंके साथ किराना में भी मन्दा ला सकेगा। चलते रुखका उपयोग करना बुद्धिमानी होगी। ता. १६ को शनिवारकी रात को १२।३७ बजे श्री सूर्यदेव गत संक्रान्तिसे बारात् ३ नक्षत्रात् ४ (३० मुहूर्ता -बैठी अवस्थामें) शनिसे तृतीयस्थ माहेन्द्र-मण्डलान्तर्गत वृश्चिक राशिमें पधारेंगे, फलत: सोना चांदी सर्वधातु तिलहन-दलहन खार, रुई पाट ऊन तुरन्त मन्दे होंगे। ता. १७ शुक्ला १० के क्षयसे देशी घीमें तेजी, ता. १८ को सूर्य-हर्षल युतिसे चांदी मन्दी, अन्य वायदे तेज। ता. १९ को तुला शुक्र होते ही बुध+शी० शुक्र योगसे बादल वर्षा, साथ ही कन्या राशि में शी० शनि+गुरु योगसे रुई पाट रेशम ऊन कालीमिर्च कागज सोना चांदी सर्वधातु गुड़ खांड मन्दे, यहीं अनुभे रविसे चांदी शेयर्स मन्दे, गुआर तिलहन-दलहन एरण्डा बिनौलामें तेजीकी भी आशा है, चलते रुखका उपयोग करें। ता. २९ शुक्ला १२ को उ.प्र. हरयाना पंजाब राजस्थान म.प्र.में जहां भी बादल चाल वर्षा हो तो वहां आगामी वर्षाकाल भी निश्चित रूपसे श्रेष्ठ होगी। ता. २१ को चन्द्रमा पृथ्वीके सन्निकट आ जानेसे चांदीमें कोई चाल अथवा अच्छा मन्दा होगा। कार्तिकी पूर्णिमा कृतिका संयोगीसे आगामी शीतकालीन उपज व वर्षा भी समय पर होती रहेगी। कन्यामें गुरुके प्रभावसे मार्गशीर्ष मासमें रुई पाट रेशम ऊन सूत कपड़ा कागजमें मन्दा, ता. २२ को सायन मकरे भौम चनाके साथ गुआर अन्य खाद्य वस्तुएं भी मन्दी करेगा। ता. २४ को १२ बजे स्वात्यां शुक्र ३।५१ बजे विशाखायां बुध (मेषांशे गुरु बुध ता.२६ तक बादल वर्षा वायुवेग या शीत वृद्धि) से सभी खाद्य वस्तुएं गुआर बिनौला मन्दी, कृष्णा ४ मंगलवारी, सप्तमी-

शुक्रवारीसे मन्दी वस्तुएं खरीदो। ता. २६ कृष्णा ५ बुधवारीसे गुड़ खांड तेज, ता. २७ कर्कांशे केतु-भौम ता. ३० तक तिलहन मन्दे, शेयर्स तेज, ता. २६ चन्द्र-शुक्र त्रिरेकादशसे चना कपासिया (बिनौला)एरण्डा वायदा १।५० से तेज, रात को सूर्य-शनि त्रिरेकादश, मंगल-गुरु केन्द्रसे १ दिसम्वर को सभी वस्तुएं मन्दी में खरीदो, शीघ्री पूषायां भौम (हस्ते शनि कालान्तर्गत) से कहीं-कहीं बादल वर्षा ओला-पात उपज श्रेष्ठ होने पर भी तेजी का दौर, शेयर्समें अचानक तेजी, चावल बिनौला एरण्डा तिल तेल खोपरा सींगदाना कपासिया अलसी सरसों महुआ पाम आयल गुआर मटर (बटला) उड़द मूंग मोठ रमास (लोबिया) खेसारी तेवड़ा तुअर (अरहर) सोना चांदी सर्व धातु गुड़ खांड रुई पाट रेशम ऊन सूत कपड़ा कागज कालीमिर्च समस्त किरानामें आसमानी सुलतानी (आकाशी कौन्सिल) आर्डरसे तेजीका चमत्कार होनेकी आशा है। रात को ६।३५ बृश्चिकके बुध होते ही शनि दृष्ट सूर्य+बुध योग संवत् २००७ की भांति गुड़ खांड गुआर दलहनमें मन्दा, तिलहनमें तेजीकी ही आशा करें किन्तु ता. २ को भौम-शनि केन्द्र २।४४ बजेसे महोत्पात, अनेकानेक वस्तुएं मन्दी अथवा १४ नवम्बरसे विपरीत चाल, ता. ३ चन्द्रमा पृथ्वीसे अति दूर अस्तु। सोना चांदी सर्वधातु में कोई चाल या तेजी भी हो सकेगी। ता ४ बुध-हर्षल युतिसे आज सोना चांदीके साथ अन्य वायदे भी प्रभावित होंगे। किन्तु आज ही अनुभे बुधसे यान दुर्घटना गुण्डोंके उत्पातों में कमी सभी वस्तुओंमें मन्दा भी सम्भव। ता. ५ को विशाखायां शुक्र (मेषांशे गुरु-शुक्र) ता. ७ को डेढ बजे तक बादल वर्षा वायुवेग तो कहीं शीत वृद्धि, गुड़ खांड तिलहन एरण्डा गुआर दलहन मन्दे, सोना चांदी सर्वधातुमें कोई चाल। कृष्णा १३ को पहाड़ों पर बर्फ गिरे तो पृथ्वी धन धान्यसे पूर्ण होगी। कृष्णा १४-३० को उ.प्र. हरयाना पंजाब राजस्थान म.प्र.में जहां भी सूर्य-चन्द्रमा बादलोंमें रहेंगे, वहां तुरन्त उपज श्रेष्ठ, साथ ही आगामी वर्षाकाल भी वहां श्रेष्ठ रहेगा। ता. ७ कृष्णा ३० रविवारी आगे तेजी कारक, आज ही बुधास्त पूर्वसे बादल वर्षा वायुवेग या शीत-वृद्धि, सोना चांदी सर्वधातु रुई पाट रेशम ऊन सूत कपड़ा कागज कालीमिर्च तेज, देशी घी ज्वार बाजरा मक्का गुआर तिलहन-दलहन गुड़ खांड मन्दे। रातसे वृषांशे गुरु-शुक्र ता. १० तक समर्थक है। ता. ८ को चली वस्तुओंकी लाइन ता. १२ को सायं ३।३८ बजे या ता. १३ से बड़े ही जोर-शोरसे बदलेगी। ता. ८ को प्लूटो (बेंकटेश) तुला राशिमें आ कर तेजी लावे तो आश्चर्य नहीं, बाजार का रुख देखिए।

मार्गशीर्ष मास

इस मासमें ५ सोमवारसे आंखके रोग, सूत कपास तेज, दक्षिणी हिन्द गुजरातमें उत्पात होंगे। ता. १० दिसम्बर को १।४६ बजे चन्द्र-शुक्र त्रिरेकादशसे चना एरण्डा कपासिया वायदे तेज। ता. ११ को २।३५ बजे बुध-शनि त्रिरेकादशसे सभी वायदे तेज, आज ही रात को सार्पे १ राहु, श्रवणे ३ केतुसे २ मासमें घोड़ा (साईकिल-स्कूटर-मोटर साइकिल व इस के पुर्जे) दुधारु पशु सुगन्धित वस्तुएं, किराना देशी घी एरण्डा बिनौला तिलहन-दलहन गेहूँ ज्वार बाजरा मक्का धान चावल कपड़ा तेज होंगे। कलिंग गौड़ मथुराके चतुर्दिक क्षेत्र,

समुद्र तटीय देशोंमें हड़ताल आन्दोलन जन-विग्रह होंगे। ता. १२ को सायं ६ बजे ज्येष्ठा में बुधसे रसादि चावल देशी घी चांदी सोना मन्दे, तिलहन-दलहन गुआर ज्वार बाजरा मक्का गेहूं गुड़ तेज। ता. १३ को शीघ्री वृश्चिके शुक्र होते ही शनि दृष्ट सूर्य+बुध+शुक्र योगसे प्रायः सभी वस्तुएं मन्दी, ता. १५ को सोमवारमें सूर्यदेव गत संक्रान्तिसे बारात् ३ नक्षत्रात् ४ माहेन्द्र-मण्डलान्तर्गत (४५ मुहूर्ता बैठी अवस्था) आते ही धनु राशि पर सूर्य+भौम योगका गुरु+शनिसे राश्यात्मक केन्द्र योग साथ ही वृश्चिक राशिस्थ शुक्र+बुधसे अगली राशि पर मंगल वर्षा नाशक किन्तु जहां कहीं सौभाग्यसे ७ दिनमें वर्षा हो जाएगी वहां उपज श्रेष्ठ, सभी खाद्य वस्तुएं मन्दी, केवल सोनामें अच्छी तेजी आवेगी। ता. १६ को १ बजे शुक्र हर्षल युतिसे सभी वायदे तेज, मन्दी में ता. १५ को खरीदें। ता. १८ को शीघ्री उषायां भौम सायंसे सभी वस्तुओं को तेजीकी ओर ले जावेगा। ता. १६ को शुक्ला १३ के क्षयसे देशी घीके साथ अन्य वस्तुएं भी तेज, चांदी मन्दी। यहांसे आगामी पौष-माघ-फाल्गुन चैत्र मासके शुक्ल पक्षमें बराबर तिथि क्षय संवत् २०२६ की भांति ३ मास तक लगातार सभी खाद्य वस्तुएं तेज होंगी। मन्दी आ जाने पर इच्छित वस्तुओंका स्टाक करना चाहिये। चन्द्रमा पृथ्वीके सन्निकट आ जानेसे सोना चांदीमें कोई भी इकतरफा चाल या मन्दा होगा। ता. २१ को सवेरे धनुषि बुध होते ही शी. मंगल+सूर्य+बुध योग (बुध-गुरुका राशि परिवर्तन) ४ जनवरी १९७६ की भांति सोना चांदी सर्वधातु तेज, जूट पाट एरण्डा विनौला तिलहन-दलहन गुआर गुड़ खांड ज्वार बाजरा मक्कामें मन्दा सम्भव, अथवा विपरीत चाल भी बड़े जोर-शोरसे निकलेगी। मार्गशीर्ष पूर्णिमा को मृगशिरा नक्षत्र चांदीमें भी मन्दी कारक है।

पौष मास

इस मासमें ५ सोमवार होनेसे सोना चांदी सर्वधातुके साथ अन्य सभी वस्तुओंमें अकल्पित तेजी-मन्दा ऐसा चलेगा कि जिससे कोई व्यापारी निहाल तो कोई पामाल होगा। ता. २२ की रात को गुरु दृष्ट शीघ्री मकरे भौमसे (सूर्य+बुधयोग) बादल वर्षा वायुवेग, शीत-वृद्धि, रुई पाट रेशम ऊन सूत कपड़ा कागज हौजरी का सामान कालीमिर्च सोना चांदी सर्वधातु तिलहन-दलहन चना गुआर ज्वार बाजरा मक्का धान चावल (चोखा) लोंग सुपारी जावित्री जायफल दालचीनी केसर किरानामें लालमिर्च लाल रंग कत्था कैमीकल्स हिल केडियम-हाईड्रो क्षार मन्दे होनेकी आशा है। सोना चांदी सर्व धातुमें तेजी भी सम्भव है, रुख देख कर व्यापार करें। ता. २३ को भौम-प्लूटो केन्द्रसे महोत्पात। ता. २५ से मिथुनांशे केतु-बुधसे सोना चांदी मन्दे, एरण्डा बिनौला गुआर खाद्य वस्तुएं ता. २७ तक तेज होंगी। ता. २५ कृष्णा ४ को आश्लेषा, कृष्णा ५ को मघा, कृष्णा ६ को पू०फा० नक्षत्र होने से आगामी आषाढ़ मासमें शुक्ला ४।५।६ को सार्वत्रिक उत्तम वर्षा होनेकी आशा करें। कृष्णा ४ गुरुवारी मूंग मोठ गुआर उड़द ज्वार बाजरा मक्का को मन्दा करेगी। कृष्णा ५ शुक्रवारी, षष्ठी शनिवारी, सप्तमी रविवारी होनेसे कहीं युद्ध हो अथवा आगे भाद्रपद मासमें देशी घी गुआर गेहूँ मूंगमें तेजी होगी। ता.२६ को तेजी।

सायं शीघ्री शुक्र (धनांशे राहु-शुक्र ता. २८ तक) से वृद्ध-नेताओं को कष्ट, सोना चांदी सर्व धातु तिलहन-दलहन गुड़ खांड चावल फल मन्दे, ता. २७ को मन्दा, ता. २८ को मन्दी वस्तुएं खरीदो, सायं पूषायां सूर्यसे तेजी, ता. २९ को सायं पूषायां बुध (सूर्य-बुधका नक्षत्र योग) से ता. ३१ तक गुआर दलहन मन्दे, ता. ३० को कृष्णा ९ को चित्रा नक्षत्र आगामी आषाढ़ मासमें उ.प्र. हरयाना, पंजाब राजस्थान म.प्र.में नित्य वर्षा करते रहेगा, परीक्षित है। चन्द्रमा पृथ्वीसे अति दूर, चांदीमें कभी अच्छी तेजी करता है। ता. ३१ को ३।४७ बजे सूर्य-बुधकी बहिर्युति वस्तुओंकी चलती लाइन को एकदम बदल देगी या तेजी होगी। कृष्णा या आगे शुक्ला ९।११ को उपर्युक्त क्षेत्रोंमें जहां भी प्रातः पूर्वमें मेघ गर्जना हो तो वर्षाका नाश, संवत् २०१० की भांति तुरन्त तेजी, वर्षा न हो कर पश्चिमी वायु जोर से चले तो संवत् २०१८ की भान्ति सभी खाद्य वस्तुओंमें अच्छी तेजी होगी। कृष्णा १० बुधवारी होनेसे मूंग गुआर दलहन तेज होंगे। १ जनवरी ८१ का प्रारम्भ बुधवारकी रात को १२ बजे होनेसे विद्यार्थियोंकी पठन-पाठन परीक्षा प्रणालीमें विचित्र परिवर्तन करा सकेगा। आज ही २० वर्ष बाद गुरु-शनिकी अंशात्मक युति (युद्ध) से गुड़ खांड चीनी मुनक्का किशमिस अंजीर खूबानी खजूर सन्तरा मौसम्मीकी श्रेष्ठ उत्पत्तिसे अच्छा मन्दा, अन्य सभी वस्तुओंमें भयानक तेजी या मन्दा १५ मार्च तक, अमेरिकाके प्रेसीडेण्ट पर घोर सङ्कट, पैरिस स्विटजरलैण्डमें उत्पात, भारतमें मालवा पूना नागपुर भी प्रभावित होंगे। ता. ४ को सायं शी० श्रवणे भौमसे हिमपात, शेयर्स सोना चांदीके साथ सभी खाद्य वस्तुएं तेज, ता. ६ को शी० धनुषि शुक्र हो कर सूर्य+बुध+शुक्र योग, शुक्र-नेपच्यून युतिसे शीत वृद्धि और मन्दी होगी।

गुजराती पौष मास

इस मासमें (माघ कृष्णा ३० तक) ५ बुधवार होनेसे दक्षिणी हिन्दमें रस-कस अन्नादि मन्दे, ७ जनवरी को उषायां बुधवारा (४५ मुहूर्त्ता) चन्द्रोदयसे शीतकी वृद्धि, रुई पाट रेशम ऊन कालीमिर्च सभी खाद्य वस्तुएं सोना चांदी सर्वधातुमें खुलते बाजारसे मन्दी की इक तरफा चाल। ता. ९ को गुरुसे संदृष्ट मकरे बुध होते ही केतु+भौम+बुध (शनि-बुधका राशि परिवर्तन) साथ ही सूर्य+शुक्र योग धनु राशिमें वायु वेग कारक, सोना तेज, गुड़ खांडके साथ अन्य वस्तुओंमें अच्छी तेजी, अथवा केवल गुड़ खांड ही तेज, सभी खाद्य वस्तुएं मन्दी, शुक्ला ४ पश्चात् पंचमी को शततारा नक्षत्र होनेसे उ.प्र. हरयाना पंजाब राजस्थान म.प्र.में जहां भी चारों ओरकी वायु चलेगी तो वहां हिमपातसे खेतीका नाश होनेसे एक दम तेजी। पौष-माघ मासके शुक्ल पक्षमें दिनभर वायु चल कर शाम को बन्द होते ही उसी रात को पाला (तुषार) पड़नेसे खेतीकी हानिके साथ तुरन्त ही तेजी आती है। कृष्णा ११ की वृद्धिके पश्चात् शुक्ला ६ रविवारीके क्षयसे रुई पाट रेशम सूत ऊन कपड़ा कागज़ कालीमिर्चके साथ खाद्य वस्तुएं भी तेज, ता. १० को सायं ३।४७ बजे बुध-शुक्र क्रान्तिसाम्यसे वर्षा, रात को उषायां रविसे शीत प्रकोप, सभी वस्तुएं तेज, शुक्ला ८

को रेवती नक्षत्र दक्षिणी वायु सहित उपर्युक्त क्षेत्रोंमें बादल सहित हो तो अन्नादिका स्टाक नहीं करें या नहीं रखें। ता. ११-१२ तेजी, ता. १३ को मन्दा, ता. १४ को श्री सूर्यदेव गत संक्रान्तिसे बारात् २ नक्षत्रात् ३ मंगलवारकी रात को (३० मुहूर्त्ता - बैठी अवस्था) वायुमण्डलके नक्षत्रमें केतु+शी० भौमसे युक्त गुरु से संदृष्ट होकर मकर राशिस्थ होंगे। पिछले वर्ष कर्क-संक्रान्ति और यह संक्रान्ति दोनोंमंगलवारी होनेसे घोर तेजी, पशुओं और मनुष्योंकी मृत्यु संख्या बहुत ही अधिक बढ़ेगी। किन्तु पौष शुक्लामें मकरसंक्रान्ति कभी-कभी अच्छा मन्दा भी लाती है। मार्किटकी पोजीशन देख कर लम्बे रुखका काम करें। यहां सोना चांदी सर्वधातुसे तिलहन-दलहन गुड़ खांड विपरीत दिशामें वड़े जोर-शोरसे चलेंगे। खाद्य वस्तुओं में तेजीकी आशा है। ता. १५ चन्द्रमा पृथ्वी के सन्निकट आ जानेसे सोना चांदीमें कोई चाल अथवा मन्दी होगी। मंगल को युतिका प्रभाव सभी वायदोंमें मन्दीका होगा। आज ही श्रवणे बुधसे किसी नेताके पुत्रका नाश, पूर्वी पश्चिमी हिन्दमें हिन्सक आन्दोलन, प्रजा-विग्रह, हिमपात होते ही खाद्य वस्तुएं मिलना दुर्लभ अथवा शांत वातावरण रहे तो अन्दा। साज ही सायं पश्चिमास्त भौमसे बादल वर्षा वायुवेग या हिमपात अथवा ओलापातसे घोर वर्षा सम्भव। एरण्डा बिनौला तिलहन-दलहन गुआर ज्वार बाजरा मक्का धान चावलमें भयानक तेजी, रुई पाट रेशम सूत कपड़ा ऊन कागज़ कालीमिर्च सोना चांदी सर्वधातुमें अच्छा मन्दा, अथवा कोई चाल। ता. १६ धनुषि नेपच्यून (गुरुके समान फल) सोना चांदी सर्वधातु एरण्डा बिनौला तिलहन-दलहन गुड़ खांड गुआर ज्वार बाजरा मक्का विशेष मन्दे, गेहूं तेज होंगे। आज ही शीघ्री पूषायां (शुक्र भी समर्थक है।) ता. १८ की रात को हस्ते वक्री शनिसे तूफानी चाल, बादल वर्षा वायुवेग, २५ जनवरी सन् ५२ को भयानक मन्दा, ६ फरवरी सन् ५२ को ब्रिटेन नरेशकी मृत्यु होने पर चला था। जब किसी महान् नेताकी मृत्यु होती है, तो उसके स्वभावानुसार भयानक तेजी या मन्दा होता है जैसे ११ मार्च ८० को श्री चन्द्रभानु गुप्त मुख्यमन्त्री उ.प्र.की मृत्यु होते ही मन्दी का दौर चला था, साथ ही मिथुनांशे केतु-गुरु-बुध ता. २० तक बादल वर्षा वायुवेग सोना चांदी तेज, ता. २० को पश्चिमोदयी बुध बादल वर्षा वायुवेग। पौषी पूर्णिमा पुष्य संयोगी उपर्युक्त क्षेत्रोंमें बादल वर्षा हो तो उपजकी श्रेष्टता पर सभी खाद्य वस्तुओंमें अच्छा मन्दा, सोना चांदी सर्वधातुमें तेजीकी आशा है। अन्य वस्तुओंकी चलती लाइन बदल भी सकेगी। लाभ हानि का पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता महोदय अपने ही ऊपर जान कर बाजारकी स्थिति को भी देखते हुये अपनी शक्तिके ही अनुकूल कार्य करें।

स्वप्नप्रद मन्त्र विधानम्

शयनविधिः—तत्र कुश निर्मितायां शय्यायां प्रक्षालितां क्षाराद्भिः प्रक्षालितं वस्त्रमास्तीर्य शय्यां मूलमंत्रेण सप्तवाराभिमंत्र्य यज्जाग्रत इति सूक्तस्य शिव संकल्पऋषिर्मनोदेवता त्रिष्टुप्छन्दः सूक्त जपे विनियोगः ।।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदुसुप्तस्य तथैवेति, दूरङ्गमञ्ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिव सङ्कल्पमस्तु ।।१।। येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्तिरेकं तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु ।।२।। यत्प्रज्ञान मुतचेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरंतरमृतं प्रजासु यस्मान्नृते किंच कर्म न क्रियते तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ।।३।। येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् । येन यज्ञस्तायते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।४।। यस्मिन्नृचः सामयजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः यस्मिंश्चित्तँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।५।। सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्ने नीयतेभी शुभि वाजिन इव ।।६।। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्टं तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ।।७।।

विधिः

इति मंत्रास्त्रिः पठित्वा ॐ भगवन् देव देवेश ! शूलभृद् वृषवाहन ! इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतः ।।१।। स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः । क्रिया सिद्धि विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ।। ॐ हिलि हिलि मातंगिनि माहेश्वर शूलपाणये दुःस्वप्नं हन हन शुभं दर्शय-दर्शय फट् स्वाहा ।।२।। नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने । वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः।। इति मंत्राश्च सकृत्पठित्वा प्राक्शिरो दक्षिण पार्श्वशायी स्वप्नं परिक्षेत् । ततः प्रातरुत्थाय गुरुचरणारविंद युगलं प्रणम्य पुष्पहस्तः स्वप्नं तस्मै निवेदयेत् । गुरोरन्यत्र न प्रकाशयेत् । इत्थं नियमेन प्रत्यहं जपं विधाय समस्तजपं समाप्यानन्तरं तज्जप दशांशतः उक्तविधिना तत्कल्पोक्त द्रव्येण हवनं विधाय होमाशक्तौ यथोक्त संख्यं जपमेव विधाय चन्दनागुरु कर्पूरादि वासित जलेन होमसंख्या दशांशतज्जले देवं ध्यात्वा संपूज्य संतर्प्य स्वात्मानं देवत-रूपं ध्यायन् कुम्भमुद्रया मूलमन्त्रान्ते आत्मानमभिषिञ्चामि नमः । इति तर्पण संख्यादशांशतः स्वमूर्ध्निन्यभिषिञ्च्यभिषेक संख्या दशांश संख्याकान् सदाचारात् प्रभाते निमंत्र्याहूयाभ्यंगादिना स्नापयित्वा वस्त्रगंधादि दत्व नाना विधैर्भक्ष्य भोज्यैः स्वदेवताधिया भोजयित्वा तांबूल दक्षिणादिभिः संतोष्य विसृजेदिति । प्रतिदिनं लक्षान्तं समस्तसंख्या समाप्तौ भक्ति पूर्वकं कुर्यात् । जाप्यमंत्रः — ॐ हिलि हिलि मातेगिनि महेश्वर शूलपाणये, दुःस्वप्नं हन हन शुभं दर्शय शुभं दर्शय हुंफट् स्वाहा ।।

नोट :—इस प्रयोग को हमने किया और २-४ जगह कराया मंत्र इष्टफलप्रद है, आवश्यकता श्रद्धा विश्वास की है ।

—कालीचरण शर्मा शास्त्री
ज्योतिषी,
सनावद (मध्य प्रदेश)

शिक्षाप्रद कहानी—

आदर्श-मिलन

[भारतमें ब्रह्मचर्यके ह्राससे दिनोंदिन अनैतिकता—अनाचार—आदि अनेक दुर्गुणोंकी वृद्धि होती जा रही है। पाश्चात्योंका अन्धानुकरण, धार्मिक शिक्षाका अभाव, कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधन—फैशन—सिनेमा और सहशिक्षा भी चरित्रहीनताको प्रश्रय दे रहे हैं। सुकुमार नवयुवतियोंको पथभ्रष्ट करनेमें नवयुवकोंका विशेष हाथ रहता है। यदि आजका नवयुवक अपने कर्तव्यको समझकर चरित्रबल—ब्रह्मचर्यव्रत—पर आरूढ़ रहे तो युवतियां कभी पथभ्रष्ट हो नहीं सकतीं। जो युवक और धर्मध्वजी लोग अपनी माता बहनों एवं पत्नीको सीता सावित्री मदालसाके रूपमें सती साध्वी पतिव्रता बननेका उपदेश बघारते हैं वे अपने हृदयको टटोलें कि क्या कभी उन्होंने भी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम, लक्ष्मण, भीष्मपितामह और अर्जुनादि वीर-पुंगवोंके आदर्शपर चलते हुए एक पत्नीव्रत धर्मका पालन किया है? यदि पुरुष ब्रह्मचर्यके बलसे अपने चरित्रको ऊंचा उठा लें तो स्त्रियां अपने आप ही पुरुषोंसे अधिक दृढ़व्रता होकर वास्तवमें गृहलक्ष्मी—देवियां बन सकेंगी। एक नैतिकबल सम्पन्न—नवयुवक अपने पर आसक्त नवयुवति कन्याको किस प्रकार सुमार्गमें लगा सकता है, वह आपको इस कहानीमें प्रो० देवेन्द्रके चरित्रसे विदित होगा। —सम्पादक]

स्नेहलता श्री बद्रीनाथजीकी षोडष वर्षीया सुकुमारी कन्या है, इस वर्ष उसने एफ०ए० के द्वितीय वर्ष (2nd year) की परीक्षा देनी है, उसे अपनी योग्यताके साथ-साथ अपनी सुन्दरता पर भी गर्व है। जब वह कालिज जाती है, तो उसकी चालसे स्पष्ट प्रतीत होता है, कि वह अपने जैसा संसारमें किसीको नहीं समझती। कई युवक उसकी ओर टकटकी लगाए निःश्वास छोड़ते ही रह जाते हैं। पर उससे दृष्टि-मेल होनेका सुअवसर उन्हें प्राप्त नहीं होता। अपनी भ्रूभंगियों द्वारा सहस्त्रों युवकोंको उसने घायल किया, पर किसी भी भाग्यवान्‌को उसके हृदय-मन्दिरमें स्थान प्राप्त करनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ।

एक दिन कुमारी लता कालिजसे साईकल पर आ रही थी, जब साईकल चौकमें मोड़ी, तो अकस्मात् एक युवककी साईकलसे उसकी टक्कर हो गई।

"क्षमा करना आपको चोट तो नहीं आई" प्रोफेसर साहबने कहा। "बेवकूफ अन्धे होकर साईकल चलाते हैं, गोअवे (Go Away) लताने झल्लाते हुए उत्तर दिया। "क्या हुआ लता?" मालतीने साइकलसे उतरते हुए पूछा। "इस नेत्रहीन महोदयकी कृपासे यह दशा हुई बहन"—चलो लताने कहा।

कूपररोड परसे जाते हुए मालतीने व्यंगात्मक शकल बनाकर पूछा "आज फिर लताकी टक्कर प्रोफैसर देवेन्द्रसे हो गई। बहन, कहीं हृदयको आघात तो नहीं पहुंचा" Shutup "मालती! ऐसी बातें मुझे नहीं भाती" लताने क्रोधपूर्ण उत्तर दिया।

"समझ नहीं आता प्रोफैसर देवेन्द्र मेरे हृदयसे क्यों नहीं उतरते। उनकी छवि चित्तमें बस रही है। उनसे पुनर्मिलनकी इच्छा बलवती होती जा रही है—न जाने वे कहां मिलेंगे। यदि मिले भी तो मैंने उनके लिये कटुवचन... क्या करूं, समझ नहीं आता क्या होगा?

"वही होगा जो मैं समझ रही हूँ" लता चौंक पड़ी, उसकी विचारधारा अचानक टूट गई। "कौन मालती?" हां मालती! चलो

सैरको चलें" मालतीने लताका कन्धा दबाते हुए कहा ।

जब सैरसे लौट रहे थे, तो देवेन्द्र महोदय अकस्मात् मार्गमें मिल गए। मालतीने नमस्ते की और साइकलसे उतरकर कहा "प्रोफैसर साहब परसों बहन लताका जन्मदिन है। क्या आप इस मंगल अवसर पर पधारनेका कष्ट करेंगे ?"

"प्रोफैसर देवेन्द्र ! मेरे मुखसे जो उस दिन कटुशब्द आपके प्रति निकले थे मैं उसके लिए क्षमा मांगती हूं" लताने विनय पूर्वक कहा । प्रोफेसरने कहा—"दैट्सआलराइट मुझे वह बुरा नहीं लगा । क्रोधवश ऐसे शब्द निकल ही जाया करते हैं ।"

अगले ही दिन फिर लता-देवेन्द्र मिलन चर्च गार्डनमें हो गया। दोनों एकान्तमें बैठ गए । "प्रोफैसर साहब ! आपसे मिलनेसे चित्त को बड़ी शान्ति मिलती है, अच्छा हो यदि ... ... "मैं समझ गया लता, परन्तु ऐसा होना उचित नहीं, मैं एक निर्धन पिताका पुत्र हूँ। अभी मैंने २५००) रु०का ऋण चुकाना है। यह ऋण चुक जाने पर ही ऐसा होना सम्भव है। दूसरे श्री बद्रीनाथजी कभी मुझ जैसे निर्धनके साथ आपके विवाहकी स्वीकृति नहीं देंगे। इससे उनकी शानको बट्टा लगेगा । अच्छा हो यदि आप इस प्रकारका विचार त्याग दें ।"

"मैं सब बातें पिताजीसे मनवा लूंगी, आप चिन्ता न करें ।"

"परन्तु, लता ! ऐसा काम करना ठीक नहीं, जिससे श्री बद्रीनाथजीकी मान प्रतिष्ठाकी हानि हो ।"

"अच्छा समय अधिक हो गया । कल वर्षगांठके अवसर पर अवश्य पधारिये ।"

लताका मुख कुम्हलाया हुआ है, वर्षगांठकी प्रसन्नता उसे रुचती नहीं । "अच्छा है आप इस प्रकारके विचार त्याग दें" यह वाक्य उसके चित्तमें अशान्तिकी लहर दौड़ा देता है और वह व्याकुल हो उठती है। उत्सव समाप्त हुआ । बागमें फिर मिलन हुआ "प्रोफैसर साहब ! चित्तमें शान्ति नहीं। अशान्तिका साम्राज्य है।"

"शान्ति, सांसारिक विषयोंमें शान्ति ढूंढती हो लता ! नहीं मिल सकती । अशान्ति बढ़ती ही जायेगी ।"

"तो शान्ति कहां मिलेगी ।"

"प्रभु शरणमें लता ! जितनी उत्सुक मेरे प्रेमके लिये आप हो रही हो, उतना प्रेम उस प्रभुमें ही लगा दीजिये । प्रेमका कोण ही बदलना है। मेरे साथ अशान्ति मिलेगी और प्रभुके प्रेम करनेमें ··" मैं समझ गई शान्ति ।

कुछ देर लताके हृदयमें हलचल मची रही। व्याकुल होकर बोली "हे दीनानाथ ! यदि अपना प्रेम ही अभीष्ट है तो प्रभु मुझे अपनी ओर ही लगा लीजिये ।"

शुद्ध हृदयकी प्रार्थनाने जादूका काम किया। शान्त होकर लता बोली "तो प्रोफैसर साहब, प्रभु प्रेम किस प्रकार करूं ? मार्ग प्रदर्शन कीजिये ।"

"एकान्त समयमें प्रभु मिलनके लिये व्याकुल होना इस मार्गका पहला पाठ है । प्रभुकी शक्तियों प्रभुकी मधुर लीलाओं और प्रभुके गुणोंका स्मरण करना और शास्त्रोक्त प्रभुके

रूपका मनन करना चाहिये इससे चित्तको शान्ति मिलेगी।"

"तो प्रभुको किस भावसे भजना चाहिये?"
"मीरांने प्रभुको किस भावसे भजा था?"
"पति रूपसे।"

"स्त्रीके लिये पति रूपमें ईश्वरका भजन ही कल्याणकारी है। कारण यह है कि पति भावमें भजनेसे वात्सल्य भाव, सखाभाव, गुरु भावादि अनेक भावोंका सम्मिश्रण हो जाता है। और इसे माधुर्य भाव कहते हैं। नवधा भक्तिमें इसे ही श्रेष्ठ समझा जाता है। व्रज-गोपियोंने इसीके द्वारा अमरपद प्राप्त किया। लता! तू भी अपने हृदयमें प्रेमलताको प्रभु भजन रूपी जलसे सींच और जो फल उससे लगें उनका आस्वादन कर। भगवान् बांके-विहारीकी रूप माधुरीका उसी प्रेमवाटिकामें पान करना। फिर क्या है! तेरा एक नया संसार बन जायेगा। उस जगन्नियन्ता परम पितासे तेरा अटूट सम्बन्ध स्थापित हो जायेगा। और जीवनका ध्येय तुझे प्राप्त हो जायेगा। तू अपने प्राणप्रिय मोहनमें समा जायेगी। जैसे समुद्रमें नदियां लय हो जाती हैं।"

प्रोफैसर साहब! आपने मुझे यथार्थ मार्ग दिखा दिया, पर समय-समय पर मेरी सहायता करते रहिये। ऐसा न हो मैं कहीं भटक न जाऊं।"

"लता प्रभुकी इच्छासे ही हमारा मिलन हुआ, उसीकी प्रेरणासे यह सब कुछ हुआ। प्रभु स्वयं तुम्हारी सहायता करेंगे। चिन्ता न करो। अच्छा, जय श्रीकृष्ण।

[यह कहानी हमने आजसे ३० वर्ष पहले सं० २००७ वि० आश्विनमास (अक्टूबर १९५०) के 'श्रीस्वाध्याय' के दशम वर्षके नव-वर्षाङ्कमें पृष्ठ २१-२२ पर प्रकाशित की थी।

—सम्पादक]

अनुभूत योगमाला

[लेखक :—श्री वैद्य वाचस्पति शर्मा]

[इस लेखमालामें सुयोग्य विद्वान् लेखक चि० श्री वाचस्पति शर्मा संस्कृत हिन्दीके सुकवि एवं अनुभवी पीयूषपाणि वैद्य हैं। विगत कई वर्षोंसे 'ज्योतिष्मती' के प्रत्येक अंकमें 'मुष्टिक योगमाला' शीर्षकसे शताधिक 'अनुभवसिद्ध' योग प्रकाशित हो चुके हैं। अब २४वें वर्षके प्रथमांकसे इनकी दूसरी 'अनुभूत योगमाला' प्रारम्भ की जा रही है। —सम्पादक]

नारायणीं नमस्कृत्य मंगलेश्वर पूजिताम् ।
आयुर्वेद प्रसाराय योगमालां करोम्यहम् ॥

(१) श्वित्र (सफेद कुष्ठ)

यशो यशस्विनां शुद्धं श्लाघ्या ये गुणिनां गुणाः ।
लोभः स्वल्पोऽपि तान् हन्ति श्वित्री रूपमिवेप्सितम् ॥

(भागवत ११।२३।१६)

यशस्वी पुरुषोंके शुद्ध यशको, गुणीजनोंके श्लाघनीय गुणोंको थोड़ा सा लोभ उसी प्रकार नष्ट कर देता है जिस प्रकार स्वल्प मात्र श्वित्र रूपवानोंके अभीष्ट रूपको नष्ट कर देता है, इससे इस रोगकी प्रभुता स्पष्टतया सिद्ध होती है, किमधिकं। जो लोग समाजमें सुतरां वन्दनीय हैं, इस रोगसे ग्रस्त होने पर नितरां निन्दनीय हो जाते हैं।

आज 'ज्योतिष्मती' वाचकवृन्दके समक्ष हम इस महाव्याधिके उन्मूलन-योगको लेकर उपस्थित हुए हैं। यह योग अत्यन्त सरल एवं शतशोऽनुभूत एवं रामबाण है।

सत्यानाशी जो संस्कृत भाषाके श्वित्रनाशी अर्थात् श्वित्रकी सत्ताका नाशी शब्दसे निष्पन्न है। इसे संस्कृतमें स्वर्णक्षीरी कहते हैं। क्योंकि इसमें स्वर्णके समान पीला रस निकलता है। इसके पुष्प पीले होते हैं, यह क्षुप (पौधा) वर्षा-ऋतुको छोड़कर शेष सभी ऋतुओंमें प्रचुरमात्रा में उपलब्ध होता है। इसके मूलको जो इस रोगमें उपादेय है—संस्कृतमें **चोक** कहते हैं। **'तन्मूलं चोक उच्यते'**

चोक—स्वर्णक्षीरीकी जड़को सायं २० ग्रामकी मात्राको २५० ग्राम पानीमें भिगो देवें। स्मरण रहे जड़को तत्काल उत्पाटन कर जलसे शुद्ध कर लेवें। यदि यह सम्भव न हो तो सायं उखाड़ कर लावें, रात्रिको २५० ग्राम पानीमें मट्टीके वर्तनमें भिगो देवें। प्रातः शिला पर भङ्गके समान पीसकर उसी पानी में मिलाकर शुद्ध मधुसे मधुर कर सूर्योदयसे पूर्व पी जावें। इस प्रकार चालीस दिन तक बराबर पीता रहे। साथ ही सन्तोष, सदाचार, सत्सङ्ग, स्मरण, सेवाके आध्यात्मिक पंच सकार चूर्णको प्रयोग करते रहनेसे एवं सात्विक भोजन करनेसे यह महाव्याधि सर्वथा निर्मूल हो जाती है। कुछ ही दिनोंके सतत प्रयोगसे देह कुन्दनके समान दैदीप्य मान हो जाती है। अत्र सन्देहो नास्ति।

(२) मुख कार्ष्ण्य (चेहरेका कालापन)

अपने मुखकी कालिमा भला कौन दूर करना न चाहेगा? प्रायः देखा जाता है कि मनुष्यकी मुखाकृति काली हो जाती है, तब उसके परिजन और वह स्वयं अत्यन्त उद्विग्न

हो जाता है। भला कालिमासे कोन उद्वेलित न होगा ? यह रोग ऋतु विपर्यय-अंशुवात किम्वा अन्यान्य व्याधि विशेषसे हो जाता है। तब ग्लेसरीनमें निम्बुका रस डालकर चेहरे पर मलना चाहिये उससे लाभ न हो तो :—

हल्दी १० ग्राम, आकका दूध १० ग्राम दोनों को मिलाकर मर्दन करें। एकजीव होने पर मुख पर सात दिन तक लेप करें। इस लेपसे कितना ही पुराना कालापन क्यों न हो दूर हो जाता है उक्तञ्च—

अर्कक्षीरं हरिद्रायां मर्दयित्वा विलेपनात्।
मुख काष्ण्यं शमं याति चिरकालोत्थितं ध्रुवम्।

(क्रमशः)

रमलोत्पति रहस्य (१)

[लेखक :—श्री पं० शंकरलालजी जोशी ज्योतिषाचार्य, जोधपुर राजस्थान]

नमन करू गणनाथको पुनि सद्गुरू वनराज।
प्रश्न शुभाशुभ मानसिक बतलाबनेके काज॥
लिखूं ग्रन्थ रमलेन्दुशुभ सरल सुखद आबाल।
मितज्ञानी पंडित सभी तोड़े संशय जाल॥
लाभहानि जीवन-मरण हार जीत दुःहर्ष।
स्त्री संतान धनाप्ति मन अभिलाषा उत्कर्ष॥
वर्तमान भवितव्यता भूतकालके भेद।
जाके द्वारा हो सकल मन संशय विच्छेद॥
रसना सोभासे नहीं मनमें रखे लुकाय।
लखे भेद उस प्रश्नको यातें रमल कहाय॥

रमलोत्पत्तिका इतिहास

एक समय कैलाश पर शंकर दीन दयाल।
बैठे परमाह्लादयुत चन्द्रसुशोभित भाल॥
मन प्रसन्न लखि शंभुका गिरिजा जगहित काज।
प्रेम सहित पूछन लगी हे शिव ! सुरसरसाज॥
प्रश्नकला जानन चहूं सकल शुभाशुभ भेद।
भूतकाल भवितव्यता वर्तमान सुखखेद॥
कृपानाथ जल्दी कहो तुम हो परम सुजान।
पारवतीके वचन सुन हर्षित कृपानिधान॥
शिव प्रसन्न मुख होत ही भालचन्द्रसे चार।
सुधा बिन्दुचारों दिशा गिरी चतुष्क प्रकार॥
बिन्दु चार शिवभालते गिरत ही प्रकटे तत्त्व।
अग्नि वायु जल मेदिनी चारों सहित महत्त्व॥
सुधा बिन्दुकी चाह से नवग्रह प्रकटे आय।
यह सब कौतुक देख शिव यों बोले मुसकाय॥
हे देवी ! सुन वाक्य मम मुनि दुर्लभ वह ज्ञान।
उत्तम सब विद्यानमें फल प्रत्यक्ष प्रमान॥
जब तुमने पूछा मुझे तब मैंने तत्काल।
किया ध्यान देखे तुरत, पंचतत्त्व निजभाल॥
शून्य रूप आकाशमें प्रकटे चारों तत्त्व।
अनल पवन जल मेदिनी चाहत निज स्वत्त्व॥
प्रभा रूप सबसे प्रथम प्रकटचो तत्त्व कृशानु।
सर्वोपरि आसनमिल्यो जैसे नभमें भानु॥
अग्नि बाद प्रकटचो पवन मिल्यो दूसरो स्थान।
पवन तले जल, जल तले अचला-अचल महान॥
विधु तनसों बिन्दु सुधा गिरे चार जिंहि धाम।
जो आकृति तासों बनी ⁞ भयो अमावस नाम॥
कला हीन विधु दर्श दिन हीन प्रभा निस्तेज।
तातें चव कण फिर गिरे पुरुषाकृति सतेज ⁞⁞ ॥

दोनोंके संयोगसे पूर्ण कला भई सोम।
अष्ट बिन्दुकी पूर्णिमा संज्ञा दी शिव ओम् ॥
कला हीन विधु दर्श दिन पूनम पूर्ण होय।
बीच चतुर्दश दिननमें कला वृद्धि नित जोय ॥

चार शून्य संज्ञक अमा (○/○/○/○) अष्ट (○○/○○/○○/○○) पूर्णिमा जान।
दोनों मिल चवदह शकल और बनी तिथि मान ॥

चार शून्यकी शून्यमय अष्ट शून्य चवरेख (—/—/—/—)।
रेख शून्य के मेल से बनी शकल सब देख ॥
चन्द्रकला संसारमें षोडश है विख्यात।
चन्द्रोद्भव षोडश शकल रमल शास्त्र प्रख्यात ॥

सोलह तिथियोंकी सोहल शकलोंका क्रम इस प्रकार है जैसे–

१	○	—	—	—	○	—	○	—
२	—	○	—	—	—	○	○	—
४	—	—	—	○	○	○	○	—
८	—	—	—	—	—	—	—	○

१	○	—	○	—	○	—	○	—
२	—	○	○	—	—	○	○	—
४	—	—	—	○	○	○	○	—
८	○	○	○	○	○	○	○	—

(○/—/—/—) वाग्मी, (—/○/—/—) लोहित, (○/○/—/—) उष्णगु, (—/—/○/—) विचु, (○/—/○/—) राहु, (—/○/○/—) बोधन, (○/○/○/—) केतु, (—/—/—/○) शनैश्चर, (○/—/—/○) सौरी, (—/○/—/○) तीक्ष्णांशु, (○/○/—/○) दैत्यार्चित, (—/—/○/○) सूरी, (○/—/○/○) आर, (—/○/○/○) कवी, (○/○/○/○) शीतांशु, (—/—/—/—) सौम्य। रमल रहस्य संस्कृतके प्राचीन ग्रंथके श्लोकोंका यह हिन्दीमें छन्दबद्ध अनुवाद है। चूंकि शंभु गिरिजाके खेल ही खेल में इस विद्याका आविर्भाव हुआ अतः इसका नाम रमल पड़ा। (क्रमशः)

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार-भविष्य

नवम्बर १९८० से जनवरी १९८१ तक

[लेखक :—श्री प्रेमचन्द्र जैन, पोरसा म० प्र०]

बुधग्रह वक्रीकालका प्रभाव थोड़े समयमें तीक्ष्ण रूपसे बाजारोंकी तेजी मंदी पर पड़ता है। यदि आप फटाफट तेज़ी-मंदी निकालना चाहते हैं—तो आधी लाइन बताए देते हैं—आप भी परीक्षण कर लीजिये। जिस वर्षकी तेजी मंदी परिणाम चाहते हैं—उसके पिछले वर्षकी इकतरफा लाइनें जब बनी हैं बस १५ दिनसे १७ दिन करीब घटा दीजिये उन दिनोंमें वैसे ही बाजार ७५% अगले वर्ष चलेंगे। जैसे पिछले वर्ष, और यह भविष्य २ वर्ष या तीसरे वर्ष बाद फिर फैल हो जावेगा, क्यों, इसलिये यह आधार बुध ग्रहसे था, सूर्य बुध शुक्र चन्द्र की स्थिति तीसरे वर्ष बेहद भिन्न हो जावेगी। स्वाभाविक है, परिणाम भी भिन्न होंगे। इसी प्रकार ग्रहोंकी गति (रफ्तार) का प्रभाव बाजारों पर पड़ता है। मंगल ग्रह लगभग ३-४ महीने तीव्र गतिसे चलता है, तो चांदीमें डेढ़ महीनेमें तेजी तो डेढ़ महीनेमें मंदी भयंकर रूपसे आती है। तिलहन-दलहनमें २०-२५ दिनमें एक भयंकर मंदी आकर पुनः तेजी चालू हो जाती है। २४ दिसम्बर १९८० से १५ अप्रेल १९८१ तक मंगल फास्ट गतिसे चलेगा। फलतः तेल-तिलहन सरसों अलसी चना-मटर-अरहर गुड़में भयंकर आधे भाव कर देने वाली मंदी आ सकती है। दिसम्बरसे अप्रेलके मध्य तक चांदीमें भयंकर तेजी चलकर भयंकर मंदी आवेगी, ऐसी उम्मीद है। लाभ हानिमें जिम्मेदारी नहीं होगी। इसी प्रकार सूर्य-ग्रहण-चन्द्र-ग्रहणका प्रभाव बाजारों पर पड़ता है, परन्तु ग्रहणोंके नामसे नहीं, बल्कि ग्रहण समय राहु या केतुसे सूर्य-चन्द्र शुक्र-बुध मंगल ग्रह कितने दूर-नजदीकी स्थितिका भयंकर प्रभाव बाजारों पर पड़ता है। एक और चुटकला जब ऊँचे बाजार बने, तब उसके बाद मंदी आती है तब उस मंदीमें अधिक धन जल्दी कमाया जा सकता है, क्योंकि बाजारोंको ऊँचा (Highest) होनेमें ४-६ महीने लगते हैं, उतनी मंदी ५-७ दिनमें आजाती है।

अक्टूबर १९८०

२३ अक्टूबर १९८० को आश्विन पूर्णिमा हैं। आज बुध वक्री होगा। ३ नवम्बरको वक्री बुधकी सूर्यसे युति, ता० ४ को चन्द्र शुक्र युति, ता० ७ को चन्द्रबुध युति व दीपावलीकी अमावस्या हैं। फलतः ता० १ से ५-७ तारीख तक तिलहन तेज, तो चांदी सोनामें मंदी। ६ नवम्बर से १२ नवम्बर तक मंदीका धमाका होगा। तिलहन व तेलमें चांदीमें ५-६ नवम्बरसे १५-१६ नवम्बर तक चांदी तेज सोनामें मंदी आवेगी। यदि तिलहनमें १२-१३ नवम्बर तक नहीं आई, तो २०-२२ नवम्बरसे ३० नवम्बर तक अच्छी मंदी आवेगी। १२ नवम्बरको मार्गी बुध होने पर चांदीमें १०-१२ दिनको लाइन मिलेगी।

नवम्बर १९८०

४ दिसम्बर चन्द्र शुक्र युति। ६ दिसम्बर चन्द्र बुध युति। ७ दिसम्बर अगहन अमावस्या

मंगल बुध ग्रह फास्ट गतिकी ओर होनेसे बाजार तीव्र रूपसे चलेंगे, तेजी मंदी लगाना लाभदायक सिद्ध होगा। फलतः ३ दिसम्बर से ८ दिसम्बर तक सरसों अलसी चांदी, राजकोटा वायदा मंदीका झटका, फिर भी जिधर बाजार चले उधरका व्यापार करें। इसके बाद सोना चांदीमें तेजी चालू हो जावेगी।

दिसम्बर १९८० ई०

यहां पर गुड़के बाजार भी तीव्र चलेंगे। १० दिसम्बरसे १५ दिसम्बर चांदी तेज, तेल फली बम्बई राजकोट तेलिया सरसों अलसी वायदे बाजारोंमें अच्छी मंदी आवेगी। कुछ भी हो, बाजार तेज चले या मंदा चले, बाजार चलेंगे जोरदार। ३१ दिसम्बर १९८० को सूर्य बुधकी सुपीरियर युति होगी जो चलते बाजारोंको तीव्र तेजी या मंदी चलनेमें सहायक होगी। युतिके ७ दिन पहले ५ दिन बाद तक सरसों अलसी तेल फली मूंग-मसूर-अरहर-चना गुड़-शक्करमें अच्छी भयंकर तेजी नजर आती हैं।

जनवरी १९८१

१ जनवरी १९८१ गुरुवारको प्रारम्भ होता है। ६ जनवरी १९८१ पौष अमावस्या मंगलवारकी है। ४ जनवरी चन्द्रशुक्रयुति ६ जनवरी अमावस्याको 'चन्द्र बुध' युति व सूर्य जन्द्र बुध शुक्र चार ग्रह धनुराशिमें है। २७ दिसम्बर १९८० को बड़े ग्रह 'शनि गुरु' की युति होनेसे लम्बे दिनों तक प्रभाव पड़ेगा। मंगल ग्रह फास्ट चलनेके कारण व्यापारियोंको झकझोर वाली तेजी मंदी चलेगी। हमारा विचार कुछ दिन बाद मंदीका है। फलतः २ से ७ जनवरी चांदी मंदी। सरसों अलसी अरण्ड बिनौलामें एकाएक बड़ी तेजी होकर बड़ी मंदी। २३ जनवरी १९८१से २० फरवरी या २० मार्च तक मंदीका धमाका आधे भाव कर देने वाली मंदी नजर आती हैं। २१ से २७ जनवरी तक चांदी मंदी १००) ३००) की सोनामें तेजी होगी। २७ जनवरी ८१ को मंगल ग्रह पश्चिम दिशामें अस्त होगा जिसका प्रभाव मौसम वर्षा ठण्ड व बाजारों पर पड़ेगा। १७ जनवरी १९८१ शनि वक्री, २४ जनवरी गुरु वक्री (लगभग एक साथ वक्री होना) एक खास मतलब रखते हैं। ४ फरवरी ८१ रात अमावस्याको सूर्यग्रहण विदेशोंमें सूर्य से केतु ५ अंश पीछे, सूर्यसे बुध १८ अंश आगे है। इसका विस्तृत विवेचन 'ज्योतिष्मती' अगली पत्रिकामें करनेकी कोशिश करेंगे।

प्रणवका मारकत्व

(नवार्णमन्त्रके साथ लगाने पर प्रणव (ॐ) भी मारक बन सकता है ?)

[लेखक :—सिद्धसच्चिदानन्द नाथ, कुल-सेवक एडवोकेट श्याम कसेरा]
(M.A., B. Com., LL.B.)

आपको यह पढ़कर आश्चर्य होगा कि जिस प्रणव (ओंकार) को ब्रह्माण्डका सृष्टि-कर्ता माना गया है, जिसकी महिमासे सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय भरा पड़ा है, जिसको ऋषि-मुनि सिद्ध-महात्माओंने नाद, शब्द ब्रह्म, अनाहत या अनहद, ओंकार, सत्नाम, सत्-शब्द, आदि विभिन्न नामोंसे पुकारा है, साधक जिसका साधन कर त्रिकालज्ञ हो जाता है, जिस के द्वारा अनिष्टकी कल्पना भी नहीं की जा सकती, उससे अनिष्ट भी हो सकता है।

साधारणत: यह प्रचलित धारणा मात्र नहीं, मन्त्र-शास्त्रमें ऐसे प्रमाण भी मिलते हैं कि मन्त्र वैदिक हों या तान्त्रिक, पौराणिक हों या लौकिक, शाबर हों या ऐन्द्रजालिक, साधक को साध्यके साधनार्थ मंत्रशक्तिको बढ़ानेके लिए प्रणव (ओंकार) अवश्य लगाना चाहिए। प्रणव युक्त मंत्र शीघ्र सिद्धि प्रदान करता है। उपर्युक्त विभिन्न हिन्दू मन्त्रोंके साथ ही नहीं, जैन-बौद्ध यहां तक कि बहुतसे मुस्लिम मंत्रोंके साथ भी प्रणवका संयोग देखने को मिलता है।

मन्त्रशास्त्रके नियमानुसार मंत्र जपके समय सर्वप्रथम इष्टमन्त्रसे विभिन्न न्यास करने होते हैं। न्यास मंत्रके प्रणव और नम: लगाकर ही किया जाता है, प्रणव और नम: रहित मन्त्र से न्यास हो नहीं सकते। यह एक सामान्य नियम है जो सर्वत्र प्रचलित ही नहीं सर्वमान्य भी है।

जब प्रणवका मन्त्र-शास्त्रमें इतना महत्व-पूर्ण स्थान है तब उससे अनिष्ट हो सकता है ? यह प्रश्न क्यों उठता है ? आइए इस पर विचार करें।

श्री श्री दुर्गासप्तशती जिसको भारतीय पूर्वाञ्चलोंमें "चण्डी पाठ" के नामसे जाना जाता है। हिन्दू धर्मकी पौराणिक एवं तान्त्रिक दोनों शाखाओंका एक सर्वमान्य पूजनीय ग्रन्थ है। तन्त्र जगत्का तो यह 'पञ्चम वेद' माना जाता है। इसी चण्डी-पाठको करने वालेके लिए पाठके आदि-अन्तमें "नवार्ण मन्त्र" जपने का विधान है। विभिन्न भाषाओंमें विभिन्न प्रकाशकोंके द्वारा प्रकाशित यहां तक कि हस्त-लिखित चण्डीपाठकी पुस्तकोंमें भी पाठके आदि अन्तमें नवार्ण मन्त्रका प्रणवयुक्त—"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"—यही रूप देखनेको मिलता है।

नवार्ण मन्त्र दो प्रकारके हैं। एक मेरु-तन्त्रानुसार जो सर्वत्र प्रचलित है, एवं दूसरा वाराही तंत्रका। वाराही तंत्रानुसार नवार्ण-मन्त्रोद्धार निम्न प्रकार है। यथा :—

"वेदादिर्वाग्भवं चैव माया कामस्तथैव च।
पृथ्वीरेको वामनेत्रं नादबिन्दु विभूषितम्॥
माया कामो नम: पश्चान्मूल मन्त्र उदाहृत:।"

प्रस्तुत मन्त्रोद्धारसे नवार्ण मन्त्रका स्वरूप —"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं ह्रीं क्लीं नमः"—यह बनता है जोकि वाराहीका मंत्र है। इस मंत्रका श्रीदुर्गा पाठसे किसी भी प्रकारका सम्बन्ध देखनेमें नहीं आया है। इस वाराही तन्त्रोक्त नवार्ण मन्त्रमें प्रणव (ओंकार) सन्निहित है। इस नवार्ण मंत्रका प्रत्तुत लेखसे विशेष सम्बन्ध नहीं होनेके कारण सन्दर्भान्तर्गत इसका उल्लेख मात्र ही ज्ञानार्थ यहां पर्याप्त है।

जिस दूसरे नवार्ण-मन्त्रका इस लेखसे सम्बन्ध है वह है मेरु-तन्त्रोक्त। जिसका कि चण्डीपाठ करनेके समय आदि अन्तमें जप करनेका विधान सर्वत्र देखनेको मिलता है। मेरु तन्त्रमें सम्बन्धित नवार्ण मन्त्रका उद्धार निम्न प्रकार होता है। यथा :—

"वाक् लज्जा कामबीजान्ते चामुण्डायै पदं वदेत्।
विच्चे नवार्ण मन्त्रोयं शक्तिमन्त्रोत्तमोत्तमः॥"

अर्थ स्पष्ट है—वाक् बीज (ऐं), लज्जा जिसे माया बीज भी कहा जाता है (ह्रीं) एवं काम बीज (क्लीं) के अन्तमें चामुण्डायै पद बोले, तदुपरान्त 'विच्चे' लगानेसे यह नवार्ण मन्त्र बनता है, जोकि शक्तिका उत्तमसे उत्तम मंत्र है। इस मन्त्रोद्धारसे नवार्ण मन्त्रका प्रणव रहित—'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"—यही रूप सिद्ध होता है।

"पुरश्चर्यार्णव" ग्रन्थके तृतीय खण्डमें भी नवार्ण-मन्त्रका मेरुतंत्र जैसे ही प्रणवविहीन मन्त्रोद्धार देखनेको मिलता है।

"डामर तन्त्र" में भी इसी सुप्रसिद्ध प्रचलित नवार्ण-मन्त्रका विस्तारपूर्वक अर्थ एवं विवेचनात्मक भाष्य किया गया है, जिसमें भी कहीं प्रणवकी चर्चा एवं उल्लेख नहीं किया गया है। अतः डामर तंत्र सिद्धान्तसे भी प्रचलित नवार्ण मंत्र प्रणव रहित ही सिद्ध होता है।

अथर्व वेदमें "श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्" की बड़ी महिमा गाई गई है। श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्में भी बिना प्रणवके इस नवार्ण मन्त्रका मन्त्रोद्धार निम्न प्रकार मिलता है। यथा—

वाङ्मायाब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्र समन्वितम्।
सूर्योऽवाम श्रोत्र बिन्दु संयुक्तष्टा तृतीयकः॥"
नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधर युक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्द दायकः॥"

इस मन्त्रोद्धारका अर्थ इस प्रकार स्पष्ट होता है—वाग्=वाणीबीज (ऐं) माया (ह्रीं), ब्रह्मसू=काम (क्लीं) इसके आगे छठा व्यञ्जन च, वही वक्त्र अर्थात् आकारसे युक्त (चा), सूर्य—'म,' अवामश्रोत्र=दक्षिण-कर्ण—'उ' और बिन्दु अर्थात् अनुस्वारसे युक्त (मुं), ट से तीसरा 'ड', वही नारायण अर्थात् 'आ' से मिश्रित (डा), वायु=य, वही अधर अर्थात् (ऐं) से युक्त (यै) और (विच्चे) यह नवार्ण मन्त्र (उपासकोंको) बड़ा आनन्द देने वाला है। इससे भी नवार्ण मन्त्रमें प्रणवकी प्रामाणिकता प्रमाणित नहीं होती।

मन्त्रशास्त्रके सुप्रसिद्ध ग्रन्थ "मन्त्र-महोदधि" तरंग १८ (अठारह) के श्लोक संख्या १०५ एवं १०६ नवार्ण-मन्त्रका मन्त्रोद्धार निम्न रूपमें मिलता है। यथा :—

"अथो नवाक्षरं मंत्रं वक्ष्ये चण्डी प्रवृत्तये।
वाङ्माया मदनो दीर्घा लक्ष्मीस्तन्द्रीश्रु तीन्दु युक्।
डायै सदृज्जलं कूर्म द्वयं झिंटीश संयुतम्।"

अर्थात्—वागिति वाक्बीज (ऐं), माया

(ह्रीं), मदनः (क्लीं), दीर्घा लक्ष्मीश्च (चा), तन्द्री 'म' श्रुतीन्दुयुग् उ बिन्दु युक्तः (मुं) (डायै) स्वरूपम्, सद्दग् जलं (वि), कूर्मद्वयं – च युग्मम् 'च्च'—झिंटीश संयुतम् – ए युतं (च्चे), यानि कि इससे भी प्रणव रहित—"ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"—यही रूप नवार्ण मंत्रका बनता है।

तन्त्र वाङ्मयके सुप्रसिद्ध ग्रन्थ रुद्रयामल के गौरीतन्त्र अन्तर्गत शिव-पार्वती सम्वादमें एक है "सिद्ध कुञ्जिका स्तोत्र" जिसके विषयमें यह प्रचलित है कि—"कुञ्जिका पाठ मात्रेण दुर्गापाठ फलं लभेत्"—तथा तन्त्र शास्त्रके आदि प्रवर्त्तक बाबा भोलेनाथने जगज्जननी पार्वतीजीको इसे इतना गुप्त बताया कि इसे "गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वती" रखने को कहा। इसमें भी नवार्ण मन्त्रका वर्णन प्राप्त होता है। यथा :—

"ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।
क्लींकारी काम रूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तुते॥
चामुण्डा चण्ड घाती च यैकारी वरदायिनी।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि॥

इससे भी शक्तिका नवार्ण मन्त्र बिना प्रणव का ही सिद्ध होता है।

उपर्युक्त सभी प्रामाणिक ग्रन्थोंके प्रमाणों से तो सवमान्य नवार्णमन्त्रका तो प्रणव रहित होना ही प्रमाणित होता है। हो सकता है कि सर्वसाधारणमें प्रचलित सामान्य शास्त्र नियमानुसार इसमें भी मंत्रशक्तिकी वृद्धिके लिए प्रणव का योग कर लिया हो।

किन्तु मन्त्र महोदधिकाने नवार्ण मन्त्र को प्रणव सहित एवं प्रणव-रहित दोनों प्रकार से जपनेका निर्देश दिया है। इससे ज्ञात होता है कि मन्त्रमहोदधि निर्माणकालके समय प्रणव-सहित एवं प्रणव-रहित ये दोनों प्रकार प्रचलित थे।

उपर्युक्त सभी उदाहरणोंसे प्रणव रहित नवार्ण मन्त्रका होना तो सिद्ध होता है, परन्तु यह प्रमाणित नहीं होता कि नवार्ण मन्त्रमें प्रणव लगाकर जपनेसे कुछ अनिष्ट भी होता है। तब "प्रणवके मारकत्व" का प्रश्न आया कहांसे ?

इस प्रश्नके पक्षमें प्रमाण प्राप्त होता है सहस्राधिक पृष्ठों वाले सुप्रतिष्ठित एवं प्रामाणिक महाग्रन्थ "पुरश्चर्यार्णव" से जिससे प्रणव सहित नवार्ण मन्त्र जपनेका विधान नहीं बल्कि स्पष्टतया निषेधाज्ञा ही मिलती है। "पुरश्चर्यार्णव ग्रन्थान्तर्गत प्रथम खण्डमें एक श्लोक है, जिसका अर्थ इस प्रकार है कि—

"ओंकार (प्रणव) युक्त नवार्ण मन्त्र चामुण्डा भगवतीके अभिशापके कारण खड्ग हो जाता है जो साधक (जपकर्ता) को नष्ट कर देता है, अतः प्रणव युक्त नवार्ण मन्त्र नहीं जपना चाहिए।

उसी "पुरश्चर्यार्णव" ग्रन्थान्तर्गत "मन्त्र शाप प्रकरण" नामक एक अध्याय है जिसमें पुनर्वार इसका निषेध किया गया है। तत्र स्पष्टोक्तम् च:—

"नवार्ण ॐ कार युतश्चामुण्डाशापं मनुः।
निस्त्रिंशः साधकं छिन्द्यान्निस्त्रिंशेन न संशयः॥"

प्रस्तुत उद्धृत श्लोकका संक्षेपमें तात्पर्य सारांश इस प्रकार है कि—"चामुण्डा देवीने शाप दिया है कि ओंकार (प्रणव) सहित (संयुक्त) नवार्ण मन्त्र खड्ग हो जाता है।

निस्त्रिंश-खड्गको कहते हैं और उस खड्गसे अर्थात् प्रणव संयुक्त नवार्ण मन्त्र, जप करनेसे साधकका अनिष्ट होता है।

उपर्युक्त यही प्रमाण अमरत्व प्रदाता ओंकार (प्रणव) के लिए मारकत्वका प्रश्न-वाचक चिह्न वनकर खड़ा होता है। परन्तु इसके सत्यासत्य पर तो अधिकारपूर्वक वे सिद्ध-साधक वृन्द ही अपने मत दे सकते हैं, जिन्होंने अपने साधनकालमें कुछ अनुभव प्राप्त किए हों। एक सामान्य उदाहरणको लीजिए—यह सर्वविदित है कि शुद्ध घी और शहद दोनों अमृत तुल्य हैं जोकि आयुर्वेद शास्त्र भी बतलाता है। यदि इन्हीं दोनों (अमृत-तुल्य घी और शहद) को समान अनुपातमें परस्पर मिलाया जाये तो उन दोनों ही अमृतोंके मिश्रण से वह "मारक-विष" बन जाता है।

कहनेका तात्पर्य यह है कि प्रणव (ओंकार) और नवार्ण-मंत्र दोनों ही अपने आपमें विलक्षण शक्ति सम्पन्न मंत्र हैं ऐसे बहुत प्रमाण मन्त्रादि शास्त्रग्रन्थोंमें बहु संख्यामें मिलते हैं। परन्तु क्या इन दोनों मन्त्रोंको संयुक्त कर (एक साथ मिलाकर) जपनेसे किसी अनिष्टकारी शक्तिकी सृष्टि होती है जिससे साधक (जपकर्त्ता) का अनिष्ट या अमंगल होता हो। यह एक गवेषणात्मक शोध अनु-सन्धानका विषय है।

जब "पुरश्चर्यार्णव" जैसे सुप्राचीन ग्रन्थ में इस प्रकारका प्रमाण उपलब्ध होता है तो हमें यह मानना चाहिए कि उसमें अवश्य ही किसी "आधार" पर ही ऐसा प्रमाण दिया गया है। वह आधार क्या है? चामुण्डादेवीने नवार्ण मन्त्रको अभिशाप क्यों दिया कि प्रणव लगनेसे वह खड्ग बनकर साधकका अनिष्ट करे। कब और किस लिए यह सब हुआ? इसके आवश्यक प्रमाणोंकी प्राप्तिसे किसी निश्चयात्मक निर्णय पर पहुंचा जा सकता है। उदाहरणस्वरूप देखिए—वेदमाता गायत्री जैसा महान् मन्त्र भी ब्रह्मा, वशिष्ठ, विश्वामित्र, वरुणादि देव-ऋषियोंके द्वारा अभिशप्त है जिसके कि कारण उपलब्ध होते हैं।

उसी प्रकार हो सकता है कि किसी कारण-वश भगवती चामुण्डा देवीने भी नवार्ण मन्त्र को शाप दिया हो (जिसके प्रमाण कारण अभी जानकारीमें नहीं आए हैं) जिसके फलस्वरूप "प्रणवको मारकत्व" का दोष लगा हो। इस महत्वपूर्ण विषय पर अनुसन्धान आवश्यक ही नहीं अनिवार्य एवं अपेक्षित है।

आशा ही नहीं अपितु पूर्णातम-विश्वास है कि सुयोग्य सिद्ध-साधक एवं विषयके अधि-कारी विद्वान् तथा भक्तहृदय सुधी पाठक वृन्द इस पर अन्वेषण कर सत्यासत्यका प्रतिपादन करेंगे एवं शाक्त जगत्का सही मार्ग-दर्शन कर माँ पराम्बाके कृपापात्र बनेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ :— 'जय जगदम्बा'

(१) वाराही तन्त्र (२) मेरु तन्त्र
(३) मन्त्रमहोदधि (४) डामर तन्त्र
(५) अथर्व वेदान्तर्गत श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्
(६) रुद्रयामलान्तर्गत गौरी तन्त्र
(७) पुरश्चर्यार्णव—आदि।

संपर्क सूत्र :—बाखराबाद
कटक—७५३००२ (ओड़िसा)

त्रैमासिक व्यापारिक भविष्यफल

[लेखक :—कविवर श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त साहित्यविशारद, खोरी जि० महेन्द्रगढ़-हरियाणा]

कार्तिक मास २०३७ वि०

बदी १ शुक्रवार—गल्ला गेहूं जौ, चणा बाजरा जुवार चावल चांदी रुई कपास कपड़ा मन्दा। कन्याका शुक्र मन्दीमें मददगार। परन्तु खेतीमें हानिकारक। अतः धान (चावल) तेज हो सकते हैं। ता० २५ अक्टूबर—चांदी रुई, नमक रंग सरसों अलसी, अन्न तिलहन पाट कुष्ठा मशीनरी तेज। २६ अक्टूबर रविवार—बाजार बन्द, ज्येष्ठाका भौम अचानक मनुष्यों को रोगी करेगा। प्रजामें उपद्रव। २७ सोमवार—सोना चांदी बिनौला सूत सन रुई चीनी चावल मन्दा। ता० २८ मंगलवार आज आर्द्रा नक्षत्र है आगे वर्षा कम होगी। इसलिये तृण चारा, घासका स्टाक करें। पश्चिमी बुधास्त राजस्थानमें वर्षाकारक, सोना, चांदी रुई मन्दी, पिछली तेजी समाप्त। इस अवसर पर सौदा सुधार लें। सोंठ कालीमिर्च, पीपल, धनिया जीरा सौंफ अजवायन, नारियल, किराणा तेज होगा। २९-३० दो दिन बाजार मन्दा, ३१ को तेज।

नवम्बर मास १९८० वि०

ता० १—सोना चांदी, रुई सूत मन्दा, सरसों, अलसी तेल साबुन घी वारदाना मशीनरी स्टीलके बर्तन तेज। ता० ३ नव० जौ, गेहूं, चणा चावल नमक रुई कपास चीनी मंदी। ता० ४ मंगलवार—सोना, ताम्बा पीतल, गुड़ गेहूं चणा चाय तमाखू भांग चरस नशीली वस्तुएं तेज। ता० ५—तिल तेल तिलहन तेज। जौ, गेहूँ, चणा, मूंग उर्द बाजरा मकई सोना चांदी मन्दी। ता० ६ रुई कपास कपड़ा उर्द मूंग सोना तेज। विशाखाका सूर्य, सोना चांदी, रुई सूत नोट शेयरोंको तेज करेगा। दक्षिणी देशोंमें उपद्रव। अमावस्या शुक्रवारी श्रेष्ठ है, रात्रिको दीपावलीमें 'श्रीमहालक्ष्मीजीका पूजन होगा। स्वाति नक्षत्र है। सुदी १ शनिवार—विशाखा नक्षत्र आज अन्नकूट है गोवर्धन पूजा होगी—

स्वातीमें दीवाबलै विशाखा खेलैं गाय।
कै लाख गयंदा रण चढै, कै शाखा निष्फल जाय॥

कहीं जोरदार युद्ध छिड़ेगा, अथवा खेती नष्ट हो जायेगी। अन्न चारा तेज होगा। हालात तो ऐसे हैं कि खेती खराब होगी। आज बाजार तेज रहेगा। ता० ९ रविवारा—चन्द्रोदय गुड़ खाण्ड तेल घी तिलहन रुई तेज करेगा। बुध—का उदय वर्षा वायुवेगसे खेतीमें हानि कारक। ता० १० को चांदी रुई कपास चीनी चावल खाण्ड मन्दी। ता० ११—सुदी ३ की वृद्धि, उर्द मूंग मौठ अरहर चणा घी मन्दा। आज संगलवार मूल नक्षत्र है बाजरा तेज रहेगा, शुभ कार्योंमें बाधा पड़ेगी। ता० १२—सोना, गुड़, गेहूँ किराना हल्दी मिर्च धनियां जीरा आदि किराना मन्दा। मार्गी बुध बाजार की लाईन बदलेगा। ता० १३—बाजार मन्दा, मूला: धनुषि भौमः सोना चांदी रुई सूत, पाट बारदाना गेहूं जौ, चणा, वाजरा आदि गल्ला तेज। चित्राका शुक्र—पक्षियोंको पीड़ाकारक।

ता० १५ शनिवारी सप्तमी है।

कातिक शुक्ला सप्तमी जो शनिवारी आव।
चांदी चावल सूत सन चीनी महँगा भाव।।

इनके अलावा सभी श्वेत वस्तुएं तेज होंगी। वृश्चिके रवि—सोना चांदी ताम्बा पीतल गल्ला रुई कपासमें साधारण तेजी, परन्तु शनि मंगलकी दृष्टि तेजी बढ़ायेगी। नौमी तिथिका क्षय तेजीकारक।

ता० १७—सोना ताम्बा पीतल ऊनी वस्त्र रुई सूत सन मन्दा। पू० भा० क्षय अनाज और रसपदार्थ तेज करेगा। १८ को बाजार तेज। ता० १९—सोना चांदी मन्दा, तुलाका शुक्र सुख-शांतिकारक। अनुराधाका सूर्य सभी वस्तुओंमें तेजी लाएगा। ता० २०—चांदी, रुई कपड़ा, अनाज मन्दा। ता० २२ पूर्णिमा शनिवारी, सरसों अलसी अरण्डी बिनौला तिल तैल अनाज तेज। कृत्तिका नक्षत्र सुख सुभिक्ष कारी है।

मार्गशीर्ष मास २०३७ वि०

वदी २ का क्षय—"मंगसिर पहिले पाखमें कोई तिथि घट जाय। झगड़ा और फिसाद नित लोगोंमें अधिकाय" (भविष्यभारती) गत वर्ष भी यह दोयज क्षय थी। ता० २४ नवम्बर—सोना चांदी रुई बिनौला चीनी चावल मन्दा। स्वात्यां शुक्र चोर डाकू अग्निके उपद्रव बढ़ायेगा। भाव तेज करेगा। ता० २५ गुड़ खाण्ड नमक खार सोना ताम्बा चणा गेहूं हल्दी तेज। ता० २६।२७—सोना चांदी रुई सूत कपड़ा गल्ला मन्दा। २८।२९ दोनों दिन घटबढ़।

दिसम्बर मास

बदी ९ की वृद्धि—तीन दिनके अन्तर्गत हर वस्तुमें तेजीका झटका देगी। नशीली चीजें मंदी। चावल घी बादाम खोपरा मूंगफली सोना चांदी तेज। गौवोंमें दूध कम, पृथ्वी अन्नपूर्ण, चावल तिल उर्द घी तेज कारक। ता० २ ज्येष्ठायां रवि:—सोना चांदी रुई सूत कपड़ा अन्न तेज। ता० ३ बुधवार—बाजारमें घटबढ़ रहेगी। ता० ४ बाजार मन्दा। ता० ५ शुक्रवार—तिल तेल मूंगफली तेज, सोना चांदी रुई मन्दी। किसी नामी सटोरियेका दिवाला निकलेगा। ता० ६ शनिवार—गल्ला सरसों तिलहन तेज, नक्षत्र वृद्धि कई वस्तुओंमें मन्दी का झटका देगी। ता० ७ रविवारी अमावस्या तेजीकारक। पूर्वमें बुधास्त सोना चांदी रुईके अटके हुए भावोंमें तेजीका तूफान आयेगा। ५।६ दिनमें भाव गिर जायेंगे। गल्ला और घी मन्दा रहेगा। सुदी १ सोमवार—चांदी रुईमें अच्छी मन्दी, चीनी चावल खाण्डमें मामूली मंदी। ता० ९—सोना चांदी ताम्बा गल्ला सूत सन तेज चन्द्रोदय तेजी बढ़ायेगा।

ता० ११ गुरुवार—गुड़ खाण्ड नमक कल मन्दे, राहु केतुका नक्षत्र परिवर्तन घटबढ़ रखेगा। ता० १२ गल्ला तेज, सोना चांदी रुई तिल तेल मन्दा। ज्येष्ठाका बुध सभी रस-पदार्थोंमें तेजी करेगा। षष्ठी शनिवारी तिलहन लोहा पाट बारदाना तेज करेगी। वृश्चिके बुध रुईमें अच्छी मन्दीका चांस देगा। ता० १५ उ०भा० नक्षत्रमें धनु संक्रांति युग-प्रलय कारक है। गल्लामें अच्छी तेजी चलेगी। लोहा आदि धातुएं रसपदार्थ सभी तेज। ता० १६।१७ दो दिन घटबढ़से तेजी। ता० १८ उषा. का भौम—रुई अचानक तेज, वर्षा होगी। ता० १९ लाख चपड़ा नमक चांदी मन्दी, त्रयोदशीका

क्षय भी तेज करेगा। ता० २० गल्ला गेहूं गुड़ चणा रुई कपास अफीम तेज। पूर्णिमा रविवारी तेजीकारक, मूल धनुषि बुध: सोना चांदी रुई अनाज मन्दा एक सप्ताह बाद तेज, प्रजामें द्वेष बढ़ेगा।

पौष मास २०३७ वि०

बदी १ सोमवार—सोना, चांदी, ताम्बा, गुड़, खाण्ड, नमक खार, चपड़ा मन्दा, रातको मकरे भौम :—घी और तेलमें तेजी और सभी अनाजोंमें मन्दी रहे। मनुष्योंमें कुछ पीड़ा भी हो। बदी २ मंगलवार—जौ, गेहूं, चना, मूंग, उर्द, सोना, चांदी, रुई, सूत कपड़ा तेज। ता० २४ दिसम्बर आज बाजारमें मन्दीका रुख रहेगा। सोना, चांदी गुड़ गेहूँ, चना, रुई, कपास, तिलहन सभी वस्तुएं मन्दी। ता० २५ को भी कल (२४ ता०) वाली लाइन रहेगी। ता० २६ सोना, चांदी रुई, सूत गल्ला तेज। ज्येष्ठाका शुक्र—सायं समय सोना, चांदी, सूत, रुई, खाण्ड, चावलमें मन्दी और तिलहन तेज, गल्लामें तेजी करेगा। वर्षामें कमी, बच्चों में रोग। ता० २७ गल्ला, गेहूँ, चना, नमकमें घटबढ़, तिलहन तेल, लोहा, जस्ता, मशीनरी (कपड़ा सीनेकी मशीनें साईकलें) आदि तेज। ता० २८ को रविवार—बाजार बन्द श्यामको पू०षा० का सूर्य—तिल तेल गुड़, चांदी, सोना, सन, हल्दी, चपड़ा, ऊनी बस्त्र तेज। ता० २६ तिल तेल मूंगफली खोपरा, तिलहन, बिनोला, सोना, चांदी, आदि धातु और अन्न मन्दा रहेगा। सायंकाल पू०फा० का बुध भी गल्ला और गुड़में मन्दीकारक। राजाओंमें युद्धकी भावना बढ़े। ता० ३० रुई कपास, कपड़ा, सूत, मूंग, उर्द, सोना, ताम्बा तेज। ता० ३१ आज बाजार मन्दा रहेगा। ता० १ जनवरी सन् १९८१ सोना चांदी रुई, सूत, सन, राई मन्दी। ता० २ एकादशीकी वृद्धि तेजीका झटका लायेगी। तिलहन तेल, मूंगफली तेज, सोना, चांदी मंदा। ३ जनवरी गल्ला तिलहन, लोहा, जस्ता, मशीनरी तेज। ४ जनवरी रविवार, श्रवणे भौम वर्षाकारक, धान्य मन्दा, सोना, चांदी तेज। किसी रोगका प्रसार होगा। अमावस्या मंगलवारी तेजी तथा रोगकारक। गुड़, गेहूं, चना, सोना, तांबा, पीतल किराना तेज होगा। भड्डली तो कहता है—

"शनि आदित और मंगल पौष-अमावस्या होय।
दुगणो, तिगुणो, चौगुनो नाज मंहगो होय॥"

पश्चिममें बुधोदय, सोना, चांदी, रुई, सूत, गुड़, गेहूं मन्दा करेगा। इस पक्षमें दो योगों का क्षय घी तेज करेगा। पौष सुदी १ बुधवार सदा तेजीकारक होती है। इस पक्षसे आलू अदरक, प्याज, गाजर, मूली, टमाटर, बैंगन, गोभी आदि सभी खाद्य पदार्थ और शाक सब्जी तेज रहेगी। हलदी मूंगफली, सकरकन्दी गल्ला गुड़ तेज। बुधवारा चंद्रोदय सोना, चांदी, रुई मन्दी और घी तेज करेगा। ८ जनवरी गल्ला तेज, रुई कपास मन्दी। रातको मकरे बुध: रुईमें तेजी कारक। १० जनवरी १९८१ शनिवार—सोना, ताम्बा, ऊनी कपड़े, सूत, सन, गुड़ खाण्ड तेज। उषाका सूर्य उर्द मूंग गेहूं चावल सरसों, गुड़ तेज करेगा। पौषकी शनिवारी चौथ तीन मास तक कष्टकारक होती है। संवत् २०३६ में भी थी।

१२ जनवरी सोमवार—सोना, चांदी रुई, कपड़ा मन्दा। १३ जनवरी मंगलवार सोना, चांदी तेज। आजकी मकर संक्रांति अनाजमें

घोर तेजी करेगी। सावधान। १४ जनवरी बुधवार श्रवणका बुध ओलोंसे गल्ला चना गुड़ अलसीकी फसलमें नुकसान करेगा। १५ जन० को मंगल अस्त होगा, वर्षाका जोर, घास चारा जई भूसा ज्वार मन्दी। चोरोंका भय बढ़ेगा।

ता० १६ सुदी एकादशीको कृत्तिका नक्षत्र है। लाल रंग की सभी वस्तुएं और सोना, होली तक तेज। १७ जनवरी बाजार तेजीमें चलेगा। १८ जनवरी इतवारको बाजार बन्द है। १० सोमवार—सोना चांची गुड़ खांड नमक खार मन्दा, शनि वक्री होगा, तेजी बढ़ायेगा। रोगकारक है। २० जनवरी मंगलवार शनि-अंगारक योग है, कई प्रकारकी दुर्घटनाएं होंगी। गल्ला गेहूं जौ चना उर्द मूंग तेज। चांदीमें अच्छी तेजी।

शकुन विचार

कातिक

कातिक पड़वाको रहे सूरजके परिवेष।
सरसों अलसी तेल तिल महंगे रहे विशेष॥
कातिकमावसके दिना स्वाति नखत विचार।
गिरे कहीं भूकम्पसे पर्वत या मीनार॥
कातिक मंगसिर पूर्णिमा मेघ घटा आकाश।
गल्ला घी संग्रह करो लाभ पांचवें मास॥

मंगसिर

मंगसिर वदी त्रयोदशी के दिन जो पड़े वर्फ।
बढ़े धान्य सम्पदा मंगलमय चौ तर्फ॥
मार्गशीर्ष के मास में पांच होय रविवार।
पांच शनैश्चरवार हो तेजी होय अपार॥
सूरज बादल में उगे मावस मगसिर मास।
अन्न उपज कमती रहे मँहगा चारा घास॥

पौष

बादल गर्जे पूर्वमें नौमी लागत पौष।
समझो खेती नाशका होता है यह घोष॥
पौषी मावस के दिना शनि रवि मंगलवार।
भय उपजे मँहगे बिके ज्वार बाजरा गुवार॥

यह लेख संक्षेपमें लिखा गया है। खुलासा जाननेको सन् १९८१ ई० का "भविष्य फल प्रकाश" पढ़ें, उसमें सभी वस्तुओंके साल भरके घटते-बढ़ते भाव तेजी मंदीके चांस, पीरियड, लाइनें, तथा हाजिर माल स्टाक करनेका उचित समय, खरीदने बेचनेकी लाभदायक तारीखें तेजी मन्दीकी इकतर्फा लाइनें, राशिफल तथा कई लाभकारी लेख लिखे हैं। हम चांसोंका धन्धा नहीं करते, सभी चांस पुस्तकमें ही लिख देते हैं। आप हमें किसी चांस अथवा जन्मपत्री के लिए आर्डर न दें। पुस्तकका मूल्य १५) है १०) पेशगी मनिआर्डरसे भेजिए। या ५) की वी०पी (V.P.) भेज देंगे। (V.P.) डाकखर्च छोड़ देंगे।

पता—

प्रकाश पुस्तकालय मु० पो० खोरी KHORI
जिला महेंद्रगढ़ (हरियाणा)
पिन—१२३१०१

'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग'

आगामी नये वर्ष सं० २०३८ वि० सन् १९८१ ८२ का 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' और 'श्रीगजेन्द्रविजयपंचांग' बहुत सुन्दर रूपमें शीघ्र प्रकाशित हो रहे हैं—नीचे लिखे पतेसे शीघ्र मँगवा लें। 'विश्वविजयपंचांग' का मूल्य ५.५० गजेन्द्रविजयपंचांगका १.५० डाक रजिस्ट्री खर्च २.८० अलग।

पता—धर्मसन प्रकाशन, नईसड़क, देहली—६

ज्योतिषियोंके नाम एक ज्योतिषीका पत्र

ज्योतिषियोंको, जोकि वास्तवमें ज्योतिष शास्त्रके अधिकारी विद्वान् हैं, उन्हें अपनी उपार्जित विद्या पर गर्व होना चाहिये। अपने अध्ययन और अनुभवका लाभ सार्वजनिक रूप में प्रस्तुत करना ज्योतिषियोंका कर्त्तव्य है। ज्योतिष इतना सुरुचिकर विषय है कि सर्व-साधारण अपनी-अपनी रुचिके अनुसार सही तौर पर मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं और उससे लाभ उठा सकते हैं। मैं स्वयं भी ज्योतिषी हूं, बहुत अनुभव पाया है इस क्षेत्रमें। खट्टे-मीठे अनुभवके आधार पर यह कह सकता हूँ कि बारीकी पाना भले ही कठिन हो, किन्तु असंभव नहीं है। किसी भी जातकके सम्बन्धमें जो भी ज्योतिषीय संकेत प्राप्त हो, वह अकाट्य होता है, बशर्त्ते उसमें अपने मनगढ़न्त विचारोंको शामिल न किया जाय। एक बार बाबू सम्पूर्णानन्दजीने मुझसे कहा था कि ज्योतिषके किसी अंग-विशेष पर यदि कुछ अनुसंधान करना हो तो उसमें अनुसन्धाताको अपना विचार रखनेका पूर्ण अधिकार प्राप्त है, लेकिन जो ऋषि-वाणी हो, उसे सही ढंगसे पेश करना उचित है। डा० सम्पूर्णानन्दजी जो उत्तरप्रदेश राज्यके शिक्षामंत्री और राजस्थानके राज्यपाल रहे हैं, वे स्वतः ज्योतिष-शास्त्रके विशिष्ट विद्वान् और विचारक थे। नैनीतालमें उनके प्रयाससे स्थापित वेधशालाका जिक्र चलने पर एक बार उन्होंने यह बताया था कि भारत में ज्योतिषियोंको अपनी विशेष भूमिका निभाना नहीं आता, क्योंकि जो वास्तवमें इसके अधिकारी विद्वान् हैं वे अनेक कारणोंसे पनप नहीं पाते और जिन्होंने इसे व्यवसाय बना रखा है वे ज्यादातर ठगी ही करते हैं। ज्योतिष क्षेत्रके विद्वानोंकी परिचर्चा करते हुए एक बार डाक्टर श्री हजारीप्रसाद द्विवेदीने कहा था ज्योतिष न तो रणनीतिका मंदिर है और न राजनीतिका पुजारी, फिर ज्योतिषी लोग क्यों झूठी वाहवाही लूटनेके लिए या तो सरकारी अधिकारियोंकी सेवा करनेमें आनन्द पाते हैं या फिर राजनीतिज्ञोंको ही अपना कमाल दिखाना ज्यादा पसन्द करते हैं। शायद इसलिए कि उन लोगोंसे मुंहमांगी रकम मिलनेके साथ-साथ प्रशस्ति पत्र भी प्राप्त होता है।

ज्योतिषियोंका यह कर्त्तव्य है कि वे ज्योतिषके प्रत्येक अंगोंका सही ढंगसे आकलन करें और अपने अध्ययनका सही जायजा सर्व-साधारण जनताके सामने ईमानदारीसे पेश करें। अक्सर ऐसा देखा जाता है कि ज्योतिषियोंकी वाक्पटुतामें उलझ कर दुःखी जनताका दुःखदर्द और भी बढ़ जाता है। जो भविष्य-वाणी ज्योतिषी लोग करते हैं उससे ज्योतिषके प्रति जनताके मनमें भ्रमपूर्ण भावनाएं पैदा होती हैं, आम जनताकी समस्याएं दूर होनेके बजाय और भी जटिल हो जाती हैं।

अन्तमें निवेदन है कि ज्योतिषी लोग एक मत होकर सामने आवें, ज्योतिष शास्त्रकी सेवा और अनुसन्धानमें संलग्न रहकर विविध भिन्नताके कारण और निवारणका मार्ग प्रशस्त करें।

भवदीय—

कैलाशनाथ उपाध्याय ज्योतिषी
के० २१/८, ब्रह्माघाट, वाराणसी—१

विश्वके धरातल पर ज्योतिष व हस्तरेखाका मूल्यांकन

[लेखक :—श्री पं० लक्ष्मीनारायण शास्त्री ज्योतिषाचार्य, सुन्दरबिलास, अजमेर राज.]

आज यदि भारतीय ज्योतिष शास्त्रके इतिहास पर दृष्टिपात किया जाय तो स्पष्ट ज्ञात होगा कि प्राचीन कालमें भारतीय विद्वान् लोग अपनी भिन्न-भिन्न विद्याओंमें कितने निपुण और पारंगत थे। प्राचीन ऋषियोंने अपने दिव्य ज्ञान और योगजन्य शक्तिसे ग्रह और नक्षत्रोंके सम्बन्धमें अपने दिव्य नेत्रोंसे राशि नक्षत्र, तारा समूह, चन्द्र, सूर्य और मंगल आदि ग्रहोंकी गति, स्थिति और संचारको देखकर योगके बलसे अपने शरीर स्थित सौर-मण्डलसे तुलना कर आन्तरिक ग्रहोंकी गति पर, हजारों वर्ष पूर्व भविष्यवाणियां करते रहे।

आदि कालमें ज्योतिषकी प्रगति :—

आदिकालमें भारतीय ज्योतिषने अनेक संशोधन देखे, पांचवीं शती ईस्वीमें होने वाले आर्यभट्टने इस शास्त्रमें एक नई क्रान्ति की, उसने अपनी प्रतिभा द्वारा अनेक मौलिक सिद्धान्तोंके साथ-साथ सूर्यको स्थिर और पृथ्वी को चल सिद्ध किया। ऋषिपुत्र, जैनाचार्य, भद्रवाहु और कालकाचार्य आदिने अनेक महत्वपूर्ण सिद्धान्तों पर ग्रन्थ लिखे। इस कालकी सबसे बड़ी रचना वेदांग ज्योतिष रही, जिसमें ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी सभी विषयों पर पूर्ण निरूपण किया गया।

भारतीय ज्योतिषका पाश्चात्य विद्वानों पर प्रभाव—

१. अलबेरूनीने लिखा है कि "ज्योतिष शास्त्रमें हिन्दू लोग संसारको सभी जातियों से बढ़कर हैं।"

२. प्रोफेसर मेक्समूलरने अपने शब्दों में कहा है कि "भारतवासी आकाश-मण्डल और नक्षत्र मण्डल आदिके बारेमें अन्य देशोंके ऋणि नहीं है। मूल आविष्कर्ता भारतवासी ही हैं।"

३. फ्रान्सिसी यात्री टरवीनियरने लिखा है कि—"भारतीय लोग ज्योतिष ज्ञानमें प्राचीन कालसे ही अतीव निपुण हैं।"

४. डाक्टर राबर्टसनका कथन है कि—"१२ राशियोंका ज्ञान पहिले भारतवासियोंको ही हुआ था।"

५. काण्ट आर्मस्टर्जनने स्पष्ट शब्दोंमें लिखा है "हम उन ज्योतिषियोंको कहां पा सकते हैं जिनका ग्रह-मण्डल सम्बन्धी ज्ञान आज भी योरोपमें आश्चर्य उत्पन्न कर रहा है।"

६. प्रोफेसर कोलब्रुकका कहना है कि "भारतको ही सर्वप्रथम नक्षत्रोंका ज्ञान प्राप्त हुआ था। और इनके द्वारा चीन, अरब आदि देशोंने ज्ञान प्राप्त किया और निस्सन्देह क्रान्ति मण्डल हिन्दुओंका ही है।"

७. वर्जेस महोदयने अपने शब्दोंमें लिखा है कि सूर्यसिद्धान्तके अंग्रेजी अनुवादके परिशिष्टमें अपने विचार व्यक्त करते हुये बताया कि "भारतका ज्योतिष टालमीके सिद्धान्त पर आश्रित नहीं है। जिसके सिद्धान्त सैंकड़ों वर्ष

पहिले ही बन चुके थे ।ठीक इसी प्रकार—

सामुद्रिक शास्त्र ज्योतिष शास्त्रका एक प्रमुख अंग माना जाकर इस पर सैंकड़ों ग्रंथ लिखे जाने लगे और समाज हस्तरेखा द्वारा अपने भाग्यका निर्णय करानेमें अधिक प्रभावित होने लगा । जिसके कारण १. मुखाकृति (भाल रेखा ज्ञान) २. करतल रेखा ज्ञान । ३. स्वरोदय ज्ञान आदि विषयों पर अनेक ग्रंथ लिखे गये ।

(१) आदिकवि बाल्मीकि (२) महर्षि वेद व्यास, (३) पाराशर (४) समुद्र (५) हिपोक्रेटस (६) एनक्सागोरस (७) वराह-मिहिराचार्य (८) भोजराज (९) अलवर्टस् मेगनस (१०) माधवगांवकर (११) डा० फ्रेजजोसफ गाल (१२) कामटे डी सेन्ट जर्मन (१३) जान ईवार्नर कीरो आदि महान् व्यक्तियोंके ग्रंथोंकी वाढ़सी आ गई ।

अतः उपर्युक्त उद्धरणोंसे स्पष्ट है कि भारतीय सामुद्रिक शास्त्र ज्योतिष शास्त्रका प्रमुख अंग है, जिसके द्वारा मानव अपने ही अंगों तथा रेखाओंके द्वारा अपने भविष्यका ज्ञान स्वयं प्राप्त करता है ।

हाथ मानव जीवनका सतर्क प्रहरी, स्वामीभक्त, अनुचर तथा आज्ञानुवर्ती साथी है । जो कि सामुद्रिक शास्त्रकी एकमात्र कसौटी द्वारा मानवजीवनका साकार चित्र ज्योंका त्यों प्रस्तुत करता है । जिसके द्वारा जन्म, मृत्यु, प्रेम, तलाक, मान, अपमान, यश, उन्नति, आत्मघात, कारावास, मृत्यु, दंड, धन, वैभव, सम्पत्ति, दुःख, सुख आदि जीवनकी प्रत्येक घटनाका स्वयं ज्ञान कर भविष्यके लिए आशा की किरणें देखता रहता है ।

अतः भारतीय सामुद्रिक विद्वानोंने हस्त सामुद्रिकका ज्ञान कर निश्चय किया कि हाथ में तीर्थोंका वास होता है । देवतीर्थ, पितृतीर्थ प्रजापतितीर्थका हाथके मध्यमें ही वास है । इस प्रकार प्रजापति तीर्थ कनिष्टिकाका मूल भाग, पितृतीर्थ तर्जनीका मूलभाग, ब्रह्मतीर्थ अंगुष्ठका मूलभाग देवतीर्थ अंगुलियोंके अग्रभागमें निश्चित है । अतः मानव, पृथ्वी पर किसी देश तथा समाजका घटक क्यों न हो, परंतु सामुद्रिक शास्त्रकी कसौटी पर उसके हाथकी परीक्षा करने पर उसके स्वभावका, उसके मनकी वृत्तिका पूर्व वृतान्त ज्ञात हो जायेगा, क्योंकि यह सामुद्रिक शास्त्र विज्ञान है । और विज्ञान के सभी परिणाम एक प्रकारके होते हैं । यह विषय अल्पबुद्धि वालोंको मुंहतोड़ जवाब देने के लिए सही उत्तर है । इसीलिए किसी विदेशी विद्वान्ने अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया कि

"The Hand, Like a Mirrior, Relfeects the mind of a man birth to death.

विश्वके सन्त ही नहीं किन्तु राजनीतिके चतुर खिलाड़ी भी इस विद्यामें पूर्ण विश्वास रखते हैं । हिटलरको इस शास्त्र पर पूर्ण विश्वास था और वह स्वयं इस विद्यामें प्रवीण था । इसीके सहारे उसने विश्वमें महान् कार्योंमें सफलता प्राप्त की, वह अपनी हस्तरेखाके विज्ञान द्वारा भविष्यका चार्ट बनाकर उसी प्रकार अपनी चाल और गतियोंको बदलता हुआ आगे बढ़ता रहा ।

ठीक इसी प्रकार नेपोलियन बोना पार्ट भी इस विद्याके सहारे ही एक साधारण सिपाही से नेपोलियन महान् हो गया और उसने इस

विषयमें कहा था—

It can become a fas-cinating which can Intimate your fore cast.

यही नहीं नेपोलियन वोनापार्टके गुरु अरस्तुने इस विद्याके विषयमें लिखा है।

The lines are mostvisible and have the strictest Communication with the heart and brain.

इसी प्रकार हस्तरेखाके विश्वविख्यात "CHERO" चीरोने अपने स्पष्ट शब्दोंमें लिखा है कि विश्वमें सर्वप्रथम भारतके विद्वानोंने ही इस सामुद्रिक शास्त्र पर खोज करके शारीरिक प्रत्येक अंगके चिह्न निश्चित किये।

समुद्र विद्वान्ने—यह सिद्ध कर दिया कि हस्तरेखा ही पूरे जीवनका कोष है, जिसमें संपूर्ण जीवनका ज्ञान भरा पड़ा है। और इस विषय पर, चीन, जापान, तिब्बत, फारस, इजिप्ट आदि देश इस विषय पर निरंतर तूफान की तरह आगे बढ़ रहे हैं। किन्तु, आजका विश्व इन दोनों विषयोंसे निराश होकर पागल की तरह संघर्ष कर रहा है जिसका मार्गदर्शक भविष्यको उज्ज्वल वतलाने वाला कोई विज्ञान वेत्ता नहीं आश्चर्य तो इस बातका है कि दोनों ही विषयोंके विद्वान् एक दूसरे पर न विश्वास करते हैं, न कभी विचारविमर्शसे किसी परिणाम पर पहुंचना चाहते हैं। और न अब तक कोई विद्वान् ऐसा हुआ है जो दोनों विषयोंमें समन्वय के आधार पर इन विषयोंके विद्वानों को दोनों विषयोंके द्वारा मूल्यांकन करके सही निर्णय दे सके। ऐसी स्थितिमें यह स्पष्ट है कि चिंगलरके शब्दोंमें "रंग खुशबूसे, कविता उपन्याससे अथवा शराब कंचनकामिनीसे, ज्योतिष व हस्तरेखासे मन हम चाहे जितना भी वहला लें मगर यह निश्चित है कि यह नाव समुद्रके मध्यमें डूब रही है, और क्षण-क्षणमें हम नीचे जा रहे हैं। इसको वचाने वाला कोई नहीं है।"

जब तक उपरोक्त ज्योतिष व हस्तरेखाके सभी प्रकाण्ड विद्वान् सामूहिक रूपसे किसी मुख्य स्थान पर समन्वयकी दृष्टिसे एकत्रित होकर किसी सत्यता पूर्ण निर्णय पर नहीं पहुंचेंगे और शास्त्रोंमें नवीन शोधकर सही और सत्यताका पता नहीं लगायेंगे, साथ ही पंचांगोंकी गणित व फलित शास्त्रोंके मूल सिद्धान्तोंका एकीकरण नहीं करेंगे तब तक इन विषयोंके लिये भविष्य सदा अन्धकारमय, अधूरा ही रहेगा।

★

गोरधनकी परकम्मा

गिरिराज परौसकी रौसन पै, इठला मिठला बल खाती चलैं।
निज जौवनकी धमकान सौं, धीरज ज्वानन कौ धसकाती चलैं॥
अनुराग-सुहाग-भरी रसना सौं, सुराग की आग लगाती चलैं।
कछु कोरी सी, गोर सी, भोरी लली परकम्मा की गैल में गाती चलैं॥

—सम्पूर्णा दत्त मिश्र

(पृष्ठ १६ से आगे)

बढ़ेंगी या नहीं ? राष्ट्रीयकरण (नैशनलाइजेशन) कम्युनिष्ट डॉ० जिलासके शब्दोंमें 'ब्यूरोक्रेसी-जेशन' है। राष्ट्रीयकरण, नौकर-शाहीकरण है। यह 'मार्शल स्तालिन' के मित्रका कहना है। यह सत्य कहनेके कारण वर्षों वह मार्शल टीटोका बन्दी रहा। जे० पी० उससे जेलमें मिलना चाहते थे। फलत: मार्शल टीटोने उन को दिया आमंत्रण वापस ले लिया। कांग्रेस मास्कोकी एजेण्ट और इस्लामकी चेरी है, क्योंकि रूसी विशालसाम्राज्यमें मुस्लिम पर्याप्त संख्यामें हैं। स्व० कम्युनिष्ट नेता श्री मोहन कुमार मंगलम्‌ने कोयला निजी आंचलसे ले लिया। परिणाम क्या हुआ देखिए।

कोल इण्डिया लि०

अधिकृत पूंजी ७५३ करोड़ रु०

१९७८ तकका घाटा ७११ करोड़ रु०

यह घाटा तब है, जब कोयलेकी आठ वर्षोंमें १५० से २५० प्रतिशत कीमत बढ़ाई जा चुकी है। इस कारण महँगाईका मूल कारण रहते कीमतें गिर नहीं सकती। कांग्रेस यह नहीं चाहती, क्योंकि भूखे-नंगे ही तो उसे वोट देंगे। श्री पालकीवालाका कहना है "भारत की गरीबी और निरक्षरता राजनीतिज्ञोंके निहित स्वार्थका परिणाम है।" इसी कारण जापान और प० जर्मनी, तैवान, द० कोरिया के समान राष्ट्रवादका पथ कांग्रेसने ग्रहण नहीं किया। कांग्रेस जन-विरोधी भारत विरोधी संस्था है, इस सत्यको माने बिना भारत आगे बढ़ नहीं सकता।

रिहर्सल-पूर्वाभ्यास

पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनिहि मां॥
(यजु० १९-२०)

भारत-विभाजन मूर्खतापूर्ण कार्य था, १९८० में यह हरेक व्यक्ति कहने लगा है। परन्तु १९४७ में कराचीमें निकले जलूस और उसके नारोंको भूल गया है। एक नारा था—

"हँस हँस के लिया पाकिस्तान।
लड़के लेंगे हिन्दुस्तान॥"

जो कुछ हो रहा है, और जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह इसका रिहर्सल है—पूर्वाभ्यास है। यह क्यों हुआ, क्योंकि हम १९वीं शतीके अद्वितीय महान् भारतीय संन्यासी ऋषि दयानन्द की दी इस चेतावनीको भूल गए :—

"आपसकी फूटसे कौरव पांडव और यादवोंका सत्यानाश हो गया सो तो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है, न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्योंको सब सुखोंसे छुड़ाकर दु:खसागरमें डुबा मारेगा ?"

ऋषिके इस वाक्यमें विशेष रूपसे ध्यान देनेकी बात है कि इसमें 'आर्यों' शब्दका व्यवहार किया गया है। इस्लामके दिए नाम 'हिन्दुओं' का प्रयोग नहीं किया गया। आर्यत्व का ही जब अन्त हो गया, तब ऋषिकी इस अमरवाणीको कौन याद रखता !

"मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव महत्ते

वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम् ॥
साम० उ० ७।३।१७।१॥

परमेश्वर पर विश्वास करने वाला निर्भय होता है। मूर्ख भयभीत रहता है, अतः भारत प्रायद्वीपको विखण्डित किया गया। चींटी तक नहीं रेंगी। भारत प्रायद्वीपको एक देश और एक राष्ट्र पुनः, बनाए बिना भारतभूमि रणक्षेत्र बनी रहेगी।

इस्लामी क्रान्ति

काश्मीरकी जनसंख्यामें ९५ प्रतिशत मुस्लिम है। वहांके मुस्लिम छात्रोंके नेताकी घोषणा सुनें—

"हिन्दुस्तान हमारा मुल्क नहीं है, हिन्दुस्तानका संविधान हमारे ऊपर लागू नहीं होता, हमारी वफादारी सिर्फ इस्लामी संविधानके साथ है, कश्मीर एक स्वतन्त्र क्षेत्र है, जिस पर हिन्दुस्तानने गैर कानूनी तौर पर कब्जा कर रखा है।"

"हिन्दुस्तानने संयुक्त राष्ट्रसंघमें जो वादा किया था, उससे वह मुकर गया है।"

"जहां तक आजाद कश्मीर पर पाकिस्तानके कब्जेका सवाल है, हम यह नहीं कह सकते कि पाकिस्तानने कश्मीर पर गैर कानूनी कब्जा कर रखा है, क्योंकि पाकिस्तान आज भी कश्मीरमें जनमत संग्रहकी मांगका समर्थन कर रहा है।"

"हिन्दुस्तानका विभाजन धर्मके आधार पर हुआ था, जिसके अनुसार हिन्दू रियासतें हिन्दुस्तानके साथ और मुस्लिम रियासतें पाकिस्तानमें शामिल होनेकी बात तय हुई थी, कश्मीर एक मुसलिम रियासत है, फिर यह हिन्दुस्तानमें क्यों रहे?"

"शेख मुहम्मद अब्दुल्लाको भी हमारे आंदोलनकी हिमायत करनी चाहिए, क्योंकि वह खुद कश्मीरमें इस किस्मके आंदोलनों की हिमायत करते रहे हैं, वह सत्ताके लालच की वजहसे अपने असली रास्तेसे हट गये हैं।"

ये हैं उस उत्तेजक बात चीतके कुछ अंश, जो 'जमीयत-तुलवा' नामक छात्र संगठनके अध्यक्ष शेख तजम्मुल - उल- इस्लामने दि. ५ अगस्तको श्रीनगरमें एक प्रेस कान्फ्रेंसमें पत्रकारोंसे की।

इस इस्लामी क्रान्तिका रूप क्या होगा? काश्मीर सरकारने २०-५-१९८० के एक गुप्त सर्क्युलर "सं० डी. ए. एल. एम. ६२।१२ डी. एल. २९५।६०" द्वारा राज्यके पुस्तकालयोंको सत्यार्थप्रकाश व भगवद्‌गीता रखनेकी मनाही कर दी गई। इसके कारण धार्मिक जगत्‌में जो व्यापक आन्दोलन उठेगा और असन्तोषकी प्रचंड आंधी उठेगी, इसकी कल्पना करना कठिन नहीं।

विश्व-इस्लामका केन्द्र मुरादाबाद—

इस परिप्रेक्ष्यमें मुरदाबाद रामपुर सम्भल बरेली, पुरानी दिल्ली अलीगढ़ स्थानोंमें जो घटनाएं घटित हुई, पुलिसको मारा गया, पीटा गया, आदि बातोंको देखिए। कहते हैं इस्लामाबादसे ११ अगस्तको "कोड" सांकेतिक भाषा में फोन आया, १३ अगस्त ईदके दिन काम शुरू कर दो। यह भी कहते हैं कि दिल्लीके जामा मस्जिदके इमाम श्री बुखारीको यह सन्देश नहीं दिया गया। क्योंकि वह एक बार दंगेके लिए अजमेरके मुस्लिमोंको दोषी ठहरा चुके हैं।

पाकिस्तानके प्रेजीडेंट जिया उल-हकको सैनिक विप्लव होनेका भय है। अतः वह

लोगोंका ध्यान हटाकर भारत पर केन्द्रित करना चाहते हैं । पाकिस्तान अपना शस्त्री-करण तेजीसे कर रहा है। सौदी अरेबियाने ६५ करोड़ डालर इस कामके लिए दिए हैं। १९६५ में पाकिस्तानकी सेनामें २,५०,००० सैनिक थे। इस समय ४४.५०.००० है। यह वृद्धि किस लिए ? पाकिस्तानका भारत पर हमला होने पर जरूरी है कि १९६५ के समान भारतकी समस्त सैनिक शक्ति पश्चिमी मोर्चे पर केन्द्रित न हो । इसको देश भरमें बिखराना किस सीमा तक और किस मात्रामें सम्भव है यह जानना पाकिस्तानके लिए क्या आवश्यक नहीं ? इस्लामी उपद्रव वस्तुत: पाकिस्तानी आक्रमणकी रिहर्सल है। ५७००० पाकिस्तानी नागरिक भारतमें रहकर यही कर रहे हैं। यह भारतको चेतावनी है कि वह विजयी होना चाहता है, तो सैनिकोंकी संख्या दुगनी करे, बीस लाख करे। इस सेनाको सशस्त्र करनेके लिए वैयक्तिक साहसको प्रोत्साहन दे। राष्ट्र-वादकी उपासना करे। विश्व इस्लामको एक केन्द्र चाहिए। जकार्त्ता (हिन्देशिया) से लेकर कैसाब्लांका (मोरक्को) तक फैले इस्लामका केन्द्र भारतमें मुरादाबाद से अधिक अच्छा क्या और कोई दूसरा हो सकता है ?

भारत विश्वकी नाभि है । यू. पी. में सहारनपुरसे शाहजहांपुर तककी भू-पट्टी (पुरानी रुहेलखण्ड कमिश्नरी) मुस्लिम बहुल है। मुरादाबाद सम्भल अमरोहा रामपुरमें ७० प्रतिशत मुस्लिम है। ये प्राय: करके सुन्नी हैं। दक्षिणपूर्व एशियामें इस्लाम फैलाया है भारतके मौलवियोंने। इस भागमें इस्लामकी रक्षा भी भारतके मौलवी ही कर सकते हैं। यह ज्ञान कि इस्लाम शिवलिंग (काबा) की पूजा करता है, इस देशके मौलाना गुप्त रख सकते हैं। यह भेद प्रकट हो जाने पर इस्लाम भारतसे ही नहीं अपितु दक्षिण और आग्नेय एशियासे भी गदहेसे सींगके समान लुप्त हो जायगा।

इस वास्ते मुरादाबादमें दो मुस्लिम विश्व-विद्यालय स्थापित करनेकी तैयारी है। यह अलअजहरसे भी बड़ा होगा। इस वास्ते दूर-दूर से मुसलमान बुलाकर यहां बसाए जा रहे हैं। पर, बंगाली मुसलमानोंको नहीं बसाते। नई बस्तियां मुरादाबादसे चारों ओर जाने वाली सड़कोंके दोनों ओर बसाई जा रही हैं। ये वस्तियां किलेबन्दीका भी काम करेंगी। रामपुर में शस्त्रास्त्र बनानेकी फैक्टरियोंका मिलना, अमृतसरके सीमान्त गांवोंमें तस्करी मालमें रिवालवरोंका बड़ी संख्यामें मिलना इसी बात को सूचित करता है। भारत-भक्तिको जगाए बगैर यह समस्या हल न होगी। शान्ति-सेना का निर्माण इसका हल नहीं। यह इस्लामकी ताकत बढ़ानेका उपाय है। जैसे भारत विभाजन से सिद्ध हुआ।

प्रधानमंत्री भारी दुविधामें—

प्रधानमन्त्री इस समय दुविधामें हैं। कांग्रेस (इ) के जोड़-तोड़ सफल नहीं हो रहे। अर्स की कांग्रेसके नेता श्रीमती गांधीका पल्ला पकड़नेको तैयार हैं, किन्तु श्रीमती गांधीका अपनी पार्टी पर प्रभाव ही नहीं रहा। अपने पुत्र राजीवको राजनीतिमें आनेके लिए कहने का साहस नहीं रखती । इस वास्ते नाटक रचती हैं । श्रीमती सोनिया नहीं चाहती उसका पति राजनीतिमें आवे। उधर श्रीमती

मेनका कह रही हैं—उसके पतिकी छोड़ी सारी सम्पत्ति उसको दी जाय। श्रीमती गांधी इसके वास्ते तैयार नहीं। श्रीमती मेनकाकी माँने दूसरा विवाह करा लिया है। २१ वर्षकी श्रीमती मेनका क्या माँका अनुसरण न करेगी? श्रीमती मेनकाने कांग्रेस सदस्योंको स्पष्ट शब्दोंमें कहा है—वह नेहरू और आनन्द परिवारमेंसे एक चुन लें। फलतः आंध्रके मुख्यमन्त्री डॉ० चेन्ना रेड्डी को त्यागपत्र देनेके लिए कहकर भी मुख्यमंत्रीको पालम पहुंचने पर रोक दिया, त्यागपत्र देनेके बाद भी १६ मंत्री वेतन पा रहे हैं। क्योंकि त्यागपत्र स्वीकार नहीं हुए। कर्णाटकके मुख्य-मन्त्रीको दिल्लीने मंत्रिमण्डलका विस्तार करने की अनुमति दे दी। किन्तु बंगलौरमें पार्टीने विद्रोहकी झंडी फहरा दी। इनका कहना है—कर्णाटक हरयाणा और हिमाचल-प्रदेशमें विधान-सभाका नया चुनाव कराया जाय। दलबदलुओंसे पार्टीको शुद्ध किया जाय। हरयाणामें यह मांग करने वाले श्री मणिराम गोधड़ाको पार्टीसे ही निलम्बित कर दिया गया।

दो किलोग्राम चीनी लेनेके लिए सुपर बाजारमें लगी लम्बी पंक्ति और राशनकार्ड पर ६ रु० १० पैसेमें (जनवरीमें चीनीका भाव ४ रुपये किलो था) पानेके लिए ढाई घंटा खड़े रहना पड़े, यह देखकर श्रीमती गांधी पराजय की आशंकासे चुनाव करानेकी हिम्मत नहीं कर सकतीं। फिर मंत्रियोंके भ्रष्टाचारको कानूनी बताकर—३८ लाख टन कोक, उर्जा-मन्त्रीने बंगलादेश माल्दा जिलेकी राह पहुंचा दिया, पार्लमेंटमें इसको विधि-मंत्रीने अपने निर्वाचन क्षेत्रकी सेवा बताया। इस प्रकार इंदिरा-मन्त्रिमण्डलका यश धूमिल हो गया है। लार्ड माउण्टबेटनकी जीवनी लेखकने लेडी एडविनाका श्रीनेहरूसे प्रेम सम्बन्ध बताकर श्री मथाईकी लिखी बातका समर्थन किया है। इससे बहुत पहले "लास्टडेज ऑफ ब्रिटिश एम्पायर इन इण्डिया" के लेखकने लिखा था—'लेडी एडविनाने श्री नेहरूका चिरकालिक विधुरत्व दूर कर दिया।' इससे श्रीमती गांधी की 'इमेज' गिर गई है। भारत-विभाजन श्री नेहरूने क्यों माना, इसका कारण लेडी एडवीना है, यह सामान्य जनता सुनकर नेहरू परिवारके प्रति स्नेहसे नहीं देख सकती।

इसकी प्रतिक्रिया हुई है। चार मास पहले जिस श्री देसाईको लोग विस्मृत कर चुके थे—उस ८४ वर्षीय युवाकी प्रतिदिन आने वाली डाक बढ़ रही है, दर्शनार्थी भी बड़ी संख्यामें आने लगे हैं। भक्त गण उनके पैर छूते हैं, यह व्यक्ति सच्चा है, इसका २७ मासों का शासन बढ़िया था, यह मानने लगे हैं। इस जन जागरणसे ज्ञात होता है कि निकट भविष्यमें ही कुछ परिवर्तन होने वाला है।

आवश्यक सूचना

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

प्रजा-पीड़नसे राष्ट्रका पतन होता है

कालसर्प-योग और प्राकृतिक उत्पात

गुरु-शनियोगका संसार पर प्रभाव

सिद्ध भैरवके श्रीविग्रहसे अश्रुपात और विचित्र बालकका जन्म

—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी—

राजावृक्षः सुप्रजा तस्य मूलं
भृत्याःपर्णा मंत्रिणो तस्य शाखा।
तस्माद्राज्ञः स्वप्रजा रक्षणीयं
मूले गुप्ते नास्ति वृक्षस्य नाशः॥

प्राचीन महर्षियोंने कहा है कि राजा या शासक राष्ट्रका विशाल वटवृक्ष है। प्रजा (जन समुदाय) उसका मूल (जड़) है। भृत्य-वर्ग (राजकर्मचारीगण) पत्ते और मंत्रिमण्डल शाखाएं हैं। अतः राजाका कर्तव्य है कि मूल प्रजाकी रक्षा करे। यदि मूल (जड़) का उत्पीड़न किया गया तो वृक्ष सूख जायगा, तब न पत्ते रहेंगे न शाखा ही। इतिहास साक्षी है कि जिस राष्ट्रमें भी प्रजाका उत्पीड़न हुआ वहां प्रजाकी कोपाग्निसे राजतन्त्रका विनाश हुआ है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामने—

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा॥

कहकर लोकाराधन या प्रजारञ्जन का उच्चादर्श प्रस्तुत किया है। इसी रामराज्यके स्वप्नद्रष्टा म० गांधीके तथाकथित चेले वर्तमान शासक, राष्ट्रपिताके आदेशको भूलकर अपनी प्रजाका उत्पीड़न कर रहे हैं। ३३ वर्ष पूर्व भारतमें विदेशी अंग्रेजी राज था, उस समयकी प्रजा इतनी मँहगाई और पापाचरणसे दुखी नहीं थी। प्रजा पर लाठी-चार्ज अश्रुगैस गोली-काण्डको नीच अंग्रेजोंकी बर्बरता कहा जाता था। परंतु आज अपने स्वराज्यमें अपने ही शासकों द्वारा पड़ौसी प्रान्तकी पुलिससे प्रजा पर लाठीप्रहार और अश्रुगैस तथा कहीं-कहीं गोलियां भी चलाई जाती हैं जो अंग्रेजी राजमें संभव था।

यद्यपि अंग्रेज चले गये तथापि अभी तक अंग्रेजोंके मानसपुत्र अंग्रेजी शिक्षित लोगोंका शासन है, इसीलिए इस अंकके सम्पादकीयमें कई स्थानों पर हमने अंग्रेजी राजके अन्तकी बात लिखी है (सम्भव है इससे हमारे कुछ पाठक सोचेंगे कि सम्पादककी बुद्धि सठिया गई है, अतः स्वराजको अंग्रेजीराज बताता है)।

हमने ग्रहगणनाके आधार पर राष्ट्र-नायकोंको यथासम्भव सावधान किया है। गताङ्कमें पृष्ठ १२ पर लिखा था—

"हम श्रीमती गांधीसे विनम्र निवेदन

करेंगे कि अब इस संक्रमणकालमें वे पदलोलुप स्वार्थी चाटुकार लोगोंसे सावधान रहकर दूर-दर्शितापूर्ण ऋतम्भराप्रज्ञासे काम लें तो वे सभी सम्भाव्य विघ्नबाधाओंको पार करके भारतका नवनिर्माण कर सकेंगी।"

'ऋतम्भरा-प्रज्ञा' के अभावमें ही आज भारती प्रजा और शासकवर्ग दुःखसागरमें डूबे जा रहे हैं—

ग्रहगतिसे पूर्वाभास

विगत वर्षोंमें ग्रहगणनानुसार जो शुभाशुभ सूचनाएं इस पत्रिकामें दीं गईं वे कितनी उपयोगी सिद्ध हुई इसका प्रमाण विज्ञवाचकवृन्द हैं। गताङ्क (वर्ष २३ सं. ४) में पृष्ठ १२ पर स्वतन्त्रभारतके ३४वें वर्ष लग्नकी ग्रहस्थिति का विश्लेषण करते हुए लिखा था—

"ये सब योग राष्ट्रकी राजनैतिक सामाजिक आर्थिक स्थितिको भयाक्रान्त बनाने वाले हैं। सत्तारूढ़ दल और प्रतिपक्षमें घोर संघर्ष होगा, युवाशक्तिमें भी दरार पड़ेगी। एक दूसरे की भावनाको यथार्थवादी दृष्टिकोणसे न समझ पानेसे राष्ट्रका अहित होगा। वर्षका पूर्वार्ध राष्ट्रके लिए कठिन कसौटीका है। अक्टूबरसे दिसम्बर तक कुछ आकस्मिक परिवर्तन होंगे। प्रकृति-प्रकोप हड़ताल तालाबन्दी घेराव धरना आदिसे यत्रतत्र अशान्ति फैलेगी।" इत्यादि।

प्रकृतिकी ओरसे चेतावनी

भारतमें इस समय सर्वत्र अशान्ति अव्यवस्था का साम्राज्य है। मँहगाई पराकाष्ठा पर पहुंच चुकी है। शासित प्रजा और शासकवर्गमें स्नेह-सद्भावका नाम नहीं। एकदूसरेके दृष्टिकोण यथार्थवादी नहीं रहे। छोटे-बड़े प्रश्नोंको दोनों पक्षोंने अपने संकुचित स्वार्थ, अहं एवं प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया, अतः राष्ट्र विघटन या विनाशकी दिशामें बढ़ रहा है। समस्त भारतमें न्यूनाधिक रूपमें अशान्ति है। इस वर्षमें जितना प्रकृतिप्रकोप (बाढ़ दुर्भिक्ष दुर्घटना-दुर्मरण या दुराचार बलात्कारकी घटनाएं) हो रहा है उतना पहले कभी नहीं सुना। यत्रतत्र हड़ताल बन्द घेराव उग्ररूप धारण करता जा रहा है। कर्मचारी और शासक वर्गने इसको अपनी प्रतिष्ठाका प्रश्न बना लिया है इससे राष्ट्रकी कितनी हानि हो रही है यह दृष्टिदोषके कारण किसीको कुछ दिखाई नहीं देता। दृष्टिदोषसे जब मनुष्योंकी बुद्धि मलीन होकर पापाचार बढ़ने लगता है तब देवगण क्रुद्ध होकर प्रकृति-प्रकोपके द्वारा विनाशकी सूचना देते हैं। जहां अपूज्य (अयोग्य भ्रष्टाचारी दुर्जन) व्यक्तियों की पूजा होती है (उच्च पद पर बैठा दिये जाते हैं) और पूज्यजनों (सदाचारी योग्य सज्जन व्यक्तियों) का निरादर होता है वहां दुर्भिक्ष मरण और पारस्परिक भयसे जनधनका विनाश होना तत्वदर्शियोंने लिखा है—

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां च व्यतिक्रमः।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्॥

अति लोभ, असत्य व्यवहार और पापाचरणसे प्राकृतिक उत्पात होनेकी सूचना महर्षि गर्गने यों दी है—

"अतिलोभादसत्याद्वा नास्तिक्याद्वाप्यधर्मतः।
नरापचारान्नियतमुपसर्गः प्रवर्तते॥"

गत २७ जुलाई ८० से शनि कन्या राशि

में प्रविष्ट हुआ और अभी गत २६ सितम्बरसे देवगुरुने भी कन्या राशिमें प्रवेश किया है। 'ज्योतिष्मती' के गत २३वें वर्षके तीसरे अङ्कमें पृष्ठ १६ पर कन्या राशिके शनिका जो प्रभाव बतलाया उसका उपक्रम वर्तमान ईराक-ईरान युद्ध और काश्मीरकी गतिविधिसे प्रारंभ हो गया है। सात मास पूर्व लिखी गई पंक्तियां चेतावनीके रूपमें यहां पुनः उद्धृत की जा रही हैं—

"२७ जुलाई १९८० से आगे कन्याके शनिमें काश्मीर समस्या पुनः ज्वलन्त हो उठेगी। पाकिस्तान बंगलादेश चीन ईरान ईराक अफगानिस्तान यूनान तुर्की अरब इजरायलमें कन्याके शनिमें अकल्पित घटनाएं घटेंगी। राज्याध्यक्षोंका सम्मान सत्ता तथा व्यक्तिगत सुरक्षा कठिनाईमें पड़ेगी। श्रमिक समस्याएं उग्र बनेंगी। ग्रहण और आगामी ग्रहयोगोंके परिणामका निष्कर्ष यह है कि—इन ग्रहोंके दूरगामी प्रभावकी ऐतिहासिक घटनाएं न केवल भारत, बल्कि अमेरिका रूस चीन अफगानिस्तान ईरान और मध्यपूर्वमें भी घटित होंगी। पाकिस्तान आक्रामक प्रवृत्ति प्रदर्शित नहीं करेगा, परन्तु गुप्त रूपसे युद्धकी तय्यारी करता रहेगा। इस आगामी ३ वर्षकी अवधिमें भारतीय शासन-सूत्र संचालकों और जनताको बहुत दूरदर्शितापूर्ण विवेकबुद्धिसे संयम साहस और शक्ति-सम्पन्न बनकर राष्ट्रको आगे बढ़ाना चाहिए।"

सिद्धभैरवके श्रीविग्रहसे अश्रुपात

हिमाचल-प्रदेशमें कांगड़ाके निकट भगवती भुवनेश्वरीके पार्श्वमें सिद्ध भैरवका स्थान है। गत ६ माससे इस भैरव श्रीविग्रह (मूर्ति) के नेत्रोंसे अश्रुपात होते अनेकों भक्तोंने देखा है इसको किसी भावी आपत्तिका सूचक माना जाता है। प्रान्तीय वृद्धजनोंका कहना है कि जब भी इस मूर्त्तिमें आंसू या पसीना दिखाई दिया है कोई महा अनिष्ट हुआ है। ६० वर्षपूर्व कांगड़ाके विनाशकारी भूकम्पसे पहले भी इस मूर्त्तिमें आंसू आये थे। ३३ वर्ष पहले भारत-विभाजनके नरसंहारसे पूर्व भी इस मूर्त्तिमें आंसू आये थे और अब फिर आ रहे हैं। हिमाचली भक्तगण भयभीत हैं। भावी आपत्तिको टालनेके लिए वे वेदोक्त तंत्रोक्त मंत्रोंसे श्री-विग्रह पर अभिषेक और अनुष्ठान करवा रहे हैं।

आगामी दो वर्षोंमें

आने वाली आपत्तियोंकी सूचना

अभी इन्दौरसे प्रकाशित होने वाले दैनिक 'नवभारत' दि. १९ सितम्बर १९८० में यह समाचार छपा है—

"......एक महिलाने ऐसे बालकको जन्म दिया—जिसके दो सिर, दो मुंह, तीन नाक चार आंखें थीं। कुछ काल बाद वह बालक कालका ग्रास बन गया।" ऐसे विकृति-पूर्ण प्रसवके लिए शास्त्रकारोंने लिखा है—

अपत्यभेदो विविधैक द्विशीर्षे,
एक द्विशीर्षे भवति द्विरास्यम्।
अपादहस्ते म्रियते त्वमात्यो,
जातेकबन्धे नृपति बिनश्यति॥
औशनसे च—चतुरस्के द्विशीर्षे,
च मात्रैरप्यधिकं यदा ।

एकचक्षुरचक्षुर्वा दशनैः पालितैस्तथा,
×× मानुषी यत्र प्रसूयेत ॥
द्विसंव्वत्सर पर्यन्ते राजा तत्र विनश्यति ।
विनाशं तस्य देशस्य ×××
विनिर्दिशेत् ॥
अमानुषाणि काण्डानि,
सञ्जात व्यञ्जनानि च ।
अनङ्गाह्यधिकाङ्गा वा,
हीनाङ्गा सम्भवन्ति वा ॥
विनाशं तस्य देशस्य,
कुलस्य च विनिर्दिशेत् ।

इन आर्ष वचनोंका भावार्थ यह है कि जब ऐसे प्राकृतिक उपसर्ग (देवप्रतिमासे अश्रुपात और हीनाङ्ग या अधिकाङ्ग वाले बालकों का जन्म) होते हैं तब दो वर्षकी अवधिमें उस राष्ट्रके राजा या मुख्य पुरुषकी मृत्यु होती है और भूकम्पादि प्रकृतिप्रकोपसे उस देशकी अपार हानि होती है। इधर विश्वको विनाशोन्मुख बनाने वाले ये दुर्लक्षण पृथ्वी पर प्रकट हो रहे हैं, उधर अन्तरिक्षकी ग्रहस्थिति भी यही कुछ संकेत दे रही है—

काल-सर्पयोग

इस वर्ष गत भाद्रपद कृष्ण ७ सोमवार दि. २ सितम्बर ८० से माघ कृष्णा ६ सोमवार दि. २६ जनवरी १९८१ तक प्रतिमास १५ दिन तक कालसर्पयोग बनता रहेगा। अर्थात् हर्शल नेपच्यून वेंकटेश सहित सभी ग्रह कर्क और मकर राशिके मध्यमें राहु और केतुके अन्तरालमें रहेंगे । १५ दिनके लिए केवल चन्द्रमा (कुम्भसे कर्क तक) काल-सर्पयोगसे हर मास बाहर रहेगा। काल-सर्पयोग विश्वके लिए अनिष्टकारी होता है। युद्ध उत्पात भूकम्प बाढ दुर्भिक्ष महामारी आदिसे जन-धन की हानि होती है। गुरु शनि भी काल-सर्पयोग में जा रहे हैं। इस बार गुरु शनिके साथ महाग्रह वेंकटेश (प्लूटो) भी रहेगा यह आगामी प्रवेश होने वाले दशकमें (१९८१-९०) विश्व का मानचित्र बदलेगा।

यदा जीवयुत्तो मंदो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः ।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्नपरिक्षयः ॥

गुरु शनिका अभी एक वर्ष आगे तक (२७ अक्टूबर १९८१) कन्या राशिमें योग रहेगा । जब ये ग्रह वक्री होंगे तो विशेष विनाशक प्रवृत्तियां पैदा करेंगे। १ जनवरी १९८० को गुरु शनिका युद्ध (अंश साम्ययोग) होगा, तब तक विश्वमें अप्रिय घटनाएं कम न होंगी। आगे १९ जनवरी ८१ से कन्या राशिमें शनि वक्री हो रहा है, यह राजयुद्ध और दुर्भिक्षका द्योतक है। यथा—

कन्या मीने यदा सौरी राशिवक्रं प्रजायते ।
नृपयुद्धं भयं लोके दुर्भिक्षं तत्र जायते ॥

अध्यात्मबलसे ही विश्वका कल्याण

इस पत्रिका और 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' में मैं कई बार लिख चुका हूं कि विश्वको विनाशके मुखमें जानेसे बचानेकी यदि किसीमें शक्ति है तो वह केवल भारतीय अध्यात्मवाद मूलक दैवी बल—भगवत् शरणागतिमें ही है। दैवीबलसे ही दुर्भाग्यको भी बदला जा सकता है—इस सम्बन्धमें गताङ्क (वर्ष २३ संख्या ३ वैशाख संवत् २०३७) में मैंने पर्याप्त लिखा है। वहां देखें।

(शेष अन्तिम टायटल पेज पर)

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

अक्टूबर १९८०

ता. २३ गुरुवार—शरत्पूर्णिमा सत्यव्रत श्री-बाल्मीकि जयन्ती।
२६ रविवार—श्रीगणेश ४ (करवाचौथ)
३१ शुक्रवार—अहोई ८ व्रत।

नवम्बर १९८० ई०

ता. ३ सोमवार—रमा ११ व्रत।
५ बुधवार—प्रदोषव्र. धन १३ धन्वन्तरि ज.
६ गुरुवार—रूप, १४ श्रीहनुमज्जयन्ती।
७ शुक्रवार—दीपावली श्रीमहालक्ष्मी पूजन महावीर निर्वाण दिवस।
८ शनिवार—अन्नकूट गोवर्धनपूजा बलिपूजा
९ रविवार—चन्द्रदर्शन, यम २ भय्यादूज विश्वकर्मा जयन्ती।
१३ गुरुवार—पांडव पंचमी, ज्ञान ५ (जैन)
१४ शुक्रवार—बालदिवस नेहरू जन्मदिन
१५ शनिवार—वृश्चिकमें सूर्य संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल अगले दिन, गोपाष्टमी।
१६ रविवार—कूष्माण्ड ९ अक्षया ९
१८ मंगलवार—हरिप्रबोधिनी ११ व्रत स्मार्तो का, भीष्म पंचकारंभ।
१९ बुधवार—११ व्रत वैष्ण. ताजिया मुहर्रम।
२१ शुक्रवार—सत्यव्रत।
२२ शनिवार—कार्तिकी पूर्णिमा, मेला पुष्करराज, गढ़गंगा, रेणुकातीर्थ, जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य जयन्ती नानकजयन्ती, भीष्मपंचक समाप्त।
२५ मंगलवार—श्रीगणेश ४ व्रत
२९ शनिवार—श्रीमहाकाल भैरवाष्टमी।

दिसम्बर १९८० ई०

ता. ३ बुधवार—उत्पन्ना एकादशीव्रत सबका।
४ गुरुवार—प्रदोषव्रत, मल्ल द्वादशी।
७ रविवार—अमावस्या।
९ मंगलवार—चन्द्रदर्शन मु० ३०
१२ शुक्रवार—श्रीगुरु तेगबहादुर बलिदान दि.
१३ शनिवार—चम्पा ६ स्कन्दषष्ठी।
१५ सोमवार—धनुःमें सूर्य संक्रान्ति मु० ४५
१८ गुरुवार—मोक्षदा ११ व्रत, गीताजयन्ती।
१९ शुक्रवार—प्रदोष व्रत।
२० शनिवार—श्रीत्रिपुर भैरवी जयन्ती।
२१ रविवार—सत्यव्रत, दत्तज० अन्नपूर्णा ज.
२४ बुधवार—श्रीगणेश ४ व्रत चंद्रोदय २०।१२
२५ गुरुवार—क्रिस्मस डे (बड़ा दिन)
३१ बुधवार—श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती।

जनवरी १९८१ ई०

ता. १ गुरुवार—सफला ११ व्रत स्मार्तोंका
२ शुक्रवार—सफला ११ व्रत वैष्णवोंका
३ शनिवार—शनिप्रदोष व्रत।
६ मंगलवार—अमावस्या पुण्यकाल।
७ बुधवार—चन्द्रदर्शन मु० ४५
१२ सोमवार—लोहड़ी महोत्सव पंजाबमें श्रीगुरुगोविन्द सिंह जयन्ती।
१३ मंगलवार—मकरमें सूर्यसंक्रान्ति मु० ३०
१४ बुधवार—मकरसंक्रान्ति पुण्यकाल गंगा-सागर यात्रा।
१६ शुक्रवार—पुत्रदा ११ व्रत सबका।
१७ शनिवार—शनिप्रदोष व्रत।
१९ सोमवार—सत्यव्रत।
२० मंगलवार—पौषी पूर्णिमा माघस्नानारंभ शाकम्भरी जयन्ती।

एकांतरा ज्वरके लिए अनुभूत प्रयोग

[ले०—श्री पं० शितिकण्ठ शास्त्री, साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ, मन्दसौर (म० प्र)]

एक दिन बीचमें छोड़ कर हर दूसरे दिन आने वाले ज्वरको एकांतरा कहते हैं। उस पर प्रयुक्त होने वाला अनुभूत प्रयोग मैं यहां प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा कई वर्षोंका अनुभव है कि इस प्रयोगसे कमसे कम ९५ प्रतिशत रुग्ण व्यक्तियोंको निश्चित रूपसे लाभ पहुंचा है।

जिस दिन बुखारकी पारी हो उस दिन—कत्था, चूना, सुपारी आदि मनोनुकूल मसालेसे युक्त ताम्बूल (नागर बेलका पान) को १०८ बार अर्थात् एक माला निम्न मन्त्रसे (अन्तमें लिखे ॐ वज्र हस्तो...से) अभिमन्त्रित करके बुखार आनेसे पूर्व रोगीको खिला देनेसे बुखार चला जावेगा।

प्रथम संख्याके मन्त्रसे पूर्व और अन्तिम संख्याके मन्त्रके पश्चात् अर्थात् पूरी मालाके आद्यन्तमें यदि उस मन्त्रको महामृत्युञ्जय मन्त्रसे सम्पुटित कर दिया जाय तो बहुत ही अच्छा। मैं स्वयं इसी तरह पानको अभिमन्त्रित कर एकान्तरा ज्वरके रोगियोंको दिया करता हूं। किसी भी कारणसे कोई भी रुग्ण व्यक्ति यदि पान खाना न चाहे तो उसकी इच्छानुसार मिश्री आदि अन्य कोई भी वस्तु, इसी प्रकार अभिमन्त्रित कर उसे दी जा सकती है। बुखार आनेसे पूर्व उस अभिमन्त्रित ताम्बूल आदि वस्तुके खा लेने पर निम्न प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं—

(१) बुखार नहीं आवेगा। (२) यदि आया तो हमेशाकी अपेक्षा तेज भी आ सकता है (३) कम भी आ सकता है (४) नियत समय छोड़कर उससे कुछ जल्दी या देरसे भी आ सकता है (५) सदाकी अपेक्षा कुछ अधिक समय तक या कम समय तक भी बना रह सकता है।

किसी भी रूपमें ज्वरके आने पर घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। समझ लेना चाहिए कि यह उसी अभिमन्त्रित ताम्बूल आदि की प्रतिक्रिया है। यदि उसी दिन बुखार न आवे तब तो यह अभीष्ट ही है, पर किसी भी रूपमें ज्वर आ जावे तो दूसरी पारी पर इसी तरह ताम्बूल आदि वस्तुको अभिमन्त्रित कर ज्वर आनेके पूर्व किसी भी समय रोगीको खिला देना चाहिए इससे बुखार नहीं आवेगा।

अभिमन्त्रित करने वाले सज्जनको यह सेवा निःस्वार्थ भावसे करनी चाहिए। हां! ताम्बूल आदि अन्य कोई भी अभिमन्त्रित की जाने वाली वस्तु उस रोगी अथवा अन्य सम्बन्धित व्यक्तिसे अवश्य मंगवाई जा सकती है। अभिमन्त्रित करनेका मन्त्र यह है—

ॐ वज्रहस्तो महाकायो, वज्रपाणिर्महेश्वरः।
ताड़ितो वज्रदण्डेन, भूम्यां गच्छ महाज्वर॥

श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वतका महाप्रयाण

यह समाचार सनातन-धर्मजगत्में बड़े खेदके साथ सुना जायगा कि 'सनातनधर्मालोक' महान् ग्रन्थके यशस्वी लेखक प्रतिभाशाली संस्कृत विद्वान् श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वतका ७८ वर्षकी आयुमें गत भाद्रपदमासमें दिल्लीमें देहावसान हो गया। शास्त्रीजीमें सरलता नम्रता एवं सादगी कूटकूट कर भरी थी। गुणीजनों विद्वानोंके वे अनन्य मित्र थे। विगत ३६ वर्षोंसे उनसे हमारा स्नेह सम्पर्क रहा। 'श्रीस्वाध्याय' और 'ज्योतिष्मती' में उनके अनेक विद्वत्तापूर्ण लेख हमने छापे। विगत सन् १९६९ में भारत सरकारने शीर्षस्थ संस्कृतशिक्षक के रूपमें आपको पुरस्कृत किया था, तथा गतवर्ष साहित्यकला-परिषद्ने भी आपको सम्मानित किया था। अपने एक विद्वान् महामानव मित्रको खोकर ज्योतिष्मती-परिवार शोकाभिभूत हैं। शास्त्रीजीके परिवारके साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करते हुए हम उस दिवङ्गत महान् आत्माको श्रद्धासुमनाञ्जलि समर्पित करते हैं।

उत्तराखण्डके महान् दैवज्ञ श्री चक्रधरजी जोशीका देहावसान

देवप्रयाग (गढवाल) की नक्षत्र-वेधशालाके संस्थापक संचालक, हमारे चिरपरिचित स्नेही सन्मित्र श्री पं० चक्रधरजी जोशीका गत अगस्त मासमें देहावसान हो गया। जोशीजी प्रतिभाशाली दैवज्ञ थे। सुप्रसिद्ध आचार्य स्व० श्री मुकुन्द दैवज्ञके आप सुयोग्य पट्ट शिष्य और 'ज्योतिस्तत्व' ग्रन्थ दोनों भागोंकी हिन्दी टीका एवं 'गदावली' के आप यशस्वी लेखक थे। जोशीजी गत कई वर्षोंसे रुग्ण रहते थे, बम्बई अहमदाबाद प्राय: वे जाकर चिकित्सा कराते रहते थे। जगद्गुरु वल्लभाचार्यके वंशज पीठासीन गोस्वामी-परिवारसे आपका स्नेह-सम्पर्क रहा। आपके निधनसे ज्योतिषजगत्की महान् क्षति हुई है। ज्योतिष्मती-परिवारकी ओरसे दिवंगत-आत्माको स्नेहसुमनाञ्जलि समर्पित करते हुए हम जोशीजीके सुपुत्रोंके साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।

श्री ओंकारनाथजी त्रिवेदीकी पत्नीका देहान्त

अभी-अभी यह दुःखद समाचार मिला है कि 'ज्योतिष्मती' के अनन्य स्नेही सहयोगी, राशि-भविष्यके लेखक श्री ओंकारनाथजी त्रिवेदीकी धर्मपत्नीका लम्बी बिमारीके बाद गत सितम्बर मासमें देहान्त हो गया। त्रिवेदीजीको इस युवावस्थामें अर्धाङ्गिनीका असामयिक निधन भारी दुख दायी है, किन्तु ईश्वरीय विधानके आगे किसीका कोई वश नहीं। श्री ओंकारनाथजी त्रिवेदीको ज्योतिष्मती-परिवारकी ओरसे सान्त्वना देते हुए हम अखण्ड सौभाग्यवतीकी सद्गति एवं शाश्वत शान्तिके लिए प्रभुसे प्रार्थना करते हैं।

त्रैमासिक व्यापार संदेश

[लेखक :—श्री मोतीलाल जैन ज्यो० W Z २७२ पालम कालोनी, नई दिल्ली—४५

नवम्बर १९८० ई०

ता० १ नवम्बर शनिवार—भविष्यमें वर्षा की कमी होगी, आज चांदी गुड़ खांड चना खुलते बाजारसे तेज होंगे। बन्द समय मंदा रहेगा। सरसों खल अलसी तेल शेयर अरंडा घटे भाव लेने वाला मोटा लाभ उठावेगा। ता० ३ सोमवार—शुक्र शनिकी युति तेजीको बढ़ावा देती है। आज चनेमें अच्छी तेजी आयेगी और चांदी सरसों गुड़ खांड आदि सभी व्यापारोंमें तेजीका साम्राज्य रहेगा। ता० ४ मंगलवार—चांदी मन्दी, तेल पदार्थोंमें तेजी, आज चांदी गुड़ खांड मन्दा होकर तेज बन्द होंगे व सरसों खल तेल शेयर चना अरंडा खुलते तेज होगा। ता० ५ बुधवार—भविष्यमें चांदी तेलादि दालोंमें अच्छी तेजी आयेगी। सरसों खल अलसी तेल शेयर अरंडा घटे भाव लेने वाला मोटा लाभ उठावेगा। ता० ६ गुरुवार—आज चांदी चना तेज होकर बन्द समय मदा रहेगा। सरसों खल अलसी तेल शेयर अरंडा खुलतेमें खरीदो मोटी तेजी आयेगी। ता० ७ शुक्रवारी अमावस्या दिवाली पूजनसे तेजीको बल मिलेगा। आज चांदी गुड़ खांड सरसों तेल शेयर चना तेज होंगे। ता० ८ शनिवार—तेजीका पूर्ण लक्षण है, रस तेल पदार्थोंमें भयंकर तेजी लायेगी। चना मन्दा होगा। ता० १० सोमवार—गुर्रा हिजरी १४०१ चालू होगा अनाजमें पहले ६ मास तेजी फिर मन्देका सन्देश लाया है। आज चांदी गुड़ खांडमें मन्दा सरसों तेल पदार्थ चना अरंडा तेज होकर बन्द समय कुछ मन्दे होंगे। ता० ११ मंगलवार—चांदी सरसों गुड़ खांड अलसी तेल शेयर चना अरंडा तेज। ता० १२ बुधवार—रुई चांदी चना सरसों खल तेल शेयरोंमें दिलखुश तेजी आयेगी। १३ गुरुवार—धन राशि पर मगल आनेसे भविष्यमें रुई चांदी कपासिया घास लकड़ी घी पशु सरसों खल अलसी तेल शेयर तेज होंगे। ता० १४ शुक्रवार—चांदी गुड़ खांड घटे भाव लेने वाला मोटा लाभ उठायेगा, सरसों खल चना अरंडा खुलते बाजारसे तेजी की दौड़ लगायेंगे। ता० १५ शनिवारी वृश्चिक संक्रांति माहेन्द्र मंडलमें लगनेसे रुई चांदी गर्म कपड़ा अनाजमें ३ मास तक मोटी तेजी तथा युद्धसे अपार जन धनका नाश म्लेच्छ पश्चिमी देशोंमें होना सम्भव है, भगवान् ही खैर करेंगे। आज सरसों अलसी तेल चना अरंडामें तेजी आवेगी। ता० १७ सोमवार—चांदी अलसी गुड़ खांड तेल शेयर अरंडामें अच्छी तेजी आवेगी। यहां कोई अकल्पित अनिष्ट घटना भी घट सकती है। ता० १८ नवम्बर मंगलवार—अनाज मन्दा, रुई चांदी अफीममें मोटी तेजी। आज चांदी गुड़ खांड सरसों तेलमात्र शेयर अरंडामें मोटी तेजी। ता० १९ बुधवार—चांदी गुड़ खांड सरसों खल तेल शेयर चना अरंडामें दिलखुश तेजी आयेगी। ता० २० गुरुवार—चांदीमें मन्दा होकर तेजी, गुड़ खांड में मन्दी, सरसों अलसी तेल शेयर अरंडामें मनमानी तेजी आवेगी। ता० २१ शुक्रवार—आज चांदी चना अरंडा मन्दा होगा, गुड़ खांड

अलसी तेल शेयरमें अच्छी तेजी आयेगी। ता० २२ शनिवार—चांदी गुड़ खांड मन्दा होकर तेज होगा चना व तेल पदार्थोंमें भयंकर तेजी आयेगी। ता० २४ सोमवार—अनाज मन्दा, गुड़ खांड तेज। ता० २५ मंगलवार—चांदी मन्दी, चना खुलते मन्दीमें खरीदो मोटी तेजी आयेगी. सरसों अलसी तेल शेयरमें दिलखुश तेजीका उछाला आयेगा। ता० २६ बुधवार—चांदी खांड गुड़ मन्दा होकर तेज बन्द होगा, सरसों अलसी तेल चना तेज होकर २ बजेसे मन्दे चलेंगे। ता० २७ गुरुवार—आज चांदी गुड़ खांड चना अरंडा मन्दा होकर तेज जायेगा। सरसों खल अलसी तेल शेयर खुलते बाजारसे २-३ बजे तक मोटी तेजी, फिर मन्दा बन्द होगा। ता० २८ शुक्रवार—चांदी खांड गुड़में अच्छा मन्दा आकर ३ बजेसे तेजी चलेगी, सरसों खल तेल शेयर अरंडामें अच्छी तेजी आयेगी। ता० २९ शनिवार—चांदी मन्दी होकर तेज बन्द होगी, गुड़ खांडमें अच्छी मन्दी, सरसों खल अलसी तेल शेयरमें दिल-खुश तेजी

ता. १ दिसम्बर ८० आज चांदी गुड़ मन्दा होकर तेज बन्द होगा, सरसों खल अलसी तेल शेयर अरंडामें अच्छी तेजी आयेगी। ता० २ मंगलवार—सोना चांदी तेल गुड़ खांडमें मोटी तेजी आयेगी। ता० ३ बुधवार—चांदी गुड़ चना अरंडा तेज होकर मन्दा बन्द होगा। सरसों खल अलसी तेल शेयर घटे भाव लेने वाला तेजीमें मोटा लाभ उठावेगा। ता० ४ गुरुवार—रुई चांदीमें मन्दा, तेलोंमें तेजी। ता० ५ शुक्रवार—चांदीमें अच्छा मन्दा आयेगा। गुड़ खांड अलसी मन्दी होकर तेज बन्द होगी। सरसों खल तेल शेयर चना अरंडा खुलते तेज होगा। ता० ६ शनिवार—तेजीकी सपोर्ट करेगी। आज चांदी गुड़ मन्दा होकर तेज बन्द होगा, सरसों खल अलसी तेल शेयरमें दिलखुश तेजी आयेगी। ता० ८ सोमवार—चांदी गुड़ खांड उछालेमें बेचना लाभदायक होगा। सरसों अलसी तेल शेयरमें दिलखुश तेजी आयेगी। ता० ९ मंगलवार—निकट भविष्यमें रुई चांदी में तेजी, अनाज सस्ता होगा। आज चांदी गुड़ खांड चनामें खुलते बाजारसे तूफानी तेजी आयेगी। सरसों खल अलसी अरंडा तेलादि मन्दे होकर तेज बन्द होंगे। ता० १० दिसम्बर बुधवार—आज चांदी गुड़ खांड तेल शेयर सरसों खल अरंडामें खुलते बाजारसे तूफानी तेजी चलेगी, चना मन्दा होगा। ता० ११ गुरुवार—चांदी गुड़ खांड चनामें खुलते बाजारसे मोटी तेजी चलेगी। सरसों खल अरंडा घटे भाव खरीदो, मोटी तेजी आयेगी। ता० १२ शुक्रवार—चांदी गुड़ खांड १ बजे तक मन्दी, फिर मोटी तेजीमें बन्द होंगे। सरसों खल चना अरंडा खुलते तेजीकी दौड़ लगायेंगे। ता० १३ शनिवार—चांदी गुड़ खांड तेल शेयर खुलते बाजारसे तूफानी तेजी। सरसों खल अलसी चना मन्दा होकर तेज बन्द होगा। ता० १५ सोमवार—धनु संक्रांति १५ मुहूर्ती वरुण मण्डलमें लगनेसे चांदी गुड़ खांड सरसों खल अरंडेमें दिलखुश तेजी आयेगी, मनचाहा लाभ उठावें। अलसी तेल शेयर चना तेज होकर अच्छा मन्दा बन्द होगा। ता० १६ मंगलवार—गुड़ खांडमें अच्छा मन्दा आयेगा। चना तेज होकर मन्दा होगा। ता० १७ बुधवार—चांदी गुड़ खांड चना तेज होकर मन्दा बन्द होगा, चनेमें मोटी तेजी आयेगी। सरसों खल अलसी तेल शेयर अरण्डा घटे भाव लेने

वाला लाभ उठायेगा । ता० १८ गुरुवार—चांदी सरसों गुड़ खांड खल चना अरंडामें मोटी तेजी । तेल शेयर मन्दे होकर तेज होंगे । ता० १६—चांदी गुड़ खांड सरसों अलसी तेल शेयर खलमें खुलते बाजारसे तेजी की दौड़ लगायेंगे । चनेमें अच्छा मन्दा आएगा । ता० २० शनिवार—चांदी, गुड़, खांडमें मन्दा आकर बन्द समय तेजी । अलसी तेल शेयर, चना, अरण्डामें तूफानी तेजी आयेगी, मोटा लाभ उठावें । यहां कोई राजकीय पाबन्दी सन्देश भी सुननेमें आएगा । ता० २१ दिसम्बर—पूर्णमासी राविवारी होनेसे चांदीमें मोटी तेजी ४००) ५००) रुपएकी नींव धरती है । मृगसिर नक्षत्रका योग उसकी तेजीको बल देता है। धनु राशि पर बुध आनेसे रुई, कपास चांदीमें एक बार मन्दीका झटका देकर लाईन पर खड़ा करेगी । यहां एक फिर विनाशकारी एटम योग बना है जोकि राहू कर्क राशि पर और केतु मकर राशि पर स्थित सभी शेष ग्रहोंको अपने गर्भमें समाए हुए हैं । यह भयंकर विनाशका कारण बना रहा है और संवत् २०३७ के साल (वर्ष) में फिर वस्तुओंके ऊंचेसे ऊंचे भावोंको आगामी ४ अप्रैल शनिवार सन् १९८१ तक आपको दिखलायेगा । आगामी इस वर्षका चौथा चरण जीवनमें याद रखने योग्य घटनाओंको पैदा करेगा । जो व्यापारी अपनी मनवांछित इच्छाओंकी पूर्तिमें निष्फल रहे हैं वे सावधान हो जाएं और संवत् २०३७ के शेष तीन मासके द्वारा अपनी इच्छाओंको पूर्ण करें वरना सांप निकल गया लाठी लिए रहे घटना जैसा पश्चात्ताप करनेके सिवाय क्या मिलेगा ।

ता० २२ सोमवार—पौष वदी १ को मकर राशि पर मंगल आनेसे तथा मंगलवारी अमावस्या और मंगलवारी पूनम व मंगल केतु का संयोग संसार भरमें भयंकर खलबलीका कारण बनेगा रुई सोना चांदी तेल घी अलसी ऊनमें भयंकर तेजी आयेगी । ता० २४ दिसम्बर को चंद्र राहु युति तेल पदार्थोंमें भयंकर तेजी का कारण बनेगी । ता० २१।२६।२७ को कृत्तिका नक्षत्रके संयोगसे भविष्यमें सोना चांदी चावलमें अच्छी तेजी आयेगी । ता० ३१ बुधवार—सूर्य बुध युति चांदी सोना सरसों गुड़ खांडादि तेज, शेयरोंमें विशेष तेजी लायेगी ।

जनवरी १९८०

१ जनवरीको गुरु शनिकी युति तेल पदार्थों में भयानक तेजीका कारण बनेगी । पौष वदी ११ की वृद्धि विशाखा नक्षत्रका संयोग भविष्य में युद्धकी चुनौती देता है । चांदी तेल पदार्थों में तेजी लायेगा । ता० ६ मंगलवारी अमावस्या सूर्य चंद्र व चंद्र बुधयुति निकट भविष्यमें रुई चांदी शेयरकी तेजी करेगी । ता ७ बुधवारा—चंद्र दर्शन रुई चांदीमें मंदा, गुड़ खांडमें तेजी लायेगा । चंद्र मंगल युति तेजीकारक होगी । ता० ५ मकर राशि पर बुधआनेसे भविष्यमें सोना चांदी अफीममें तेजी करे, पहले मंदा होकर तेजी करेगा । ता० १० शनिवार—उतराषाढ़ पर सूर्य आनेसे दिन १३ में गुड़ खांड अनाज तेल मात्र लोहादि धातुमें भयंकर तेजीका कारण बनेगा । ता० १२ जनवरी पौष सुदी ७मी को एक ऐसे एटमिक योगका जन्म होता है कि इससे ९० दिनके भीतर तेलमात्र, गुड़ खांडादि व चांदीमें अकल्पित तेजीका संयोग बनेगा । ता० १३ मंगलवार मकर संक्रांतिका संयोग रेवती नक्षत्र युक्त होनेसे

वरुण मंडलका संयोग पाय धातु मात्रमें तेजी तथा धान्योंका अकल्पित भाव और सरदीसे फसलोंको भयंकर हानि पहुंचेगी। यहां मंगलवारी अमावस मंगलवारी संक्रांति व पूनम भी मंगलवारी होनेसे भयंकर विनाशकारी बातावरण बना है। ता० १४—योगका क्षय चांदी खाद्य वस्तुमें मंदी लायेगा। ता० १५।१।८१ गुरुवारको मंगल पश्चिममें अस्त होनेसे भविष्यमें रुईमें ५०) रुपयेका मंदा लाता है। अलसी गुड़ खांड तेज। नैपचून धनु राशिमें आनेसे भविष्यमें रुई कपड़े सूतमें पांच मासमें भयंकर तेजीका निमित बनेगा, अकल्पित तेजी आयेगी। ता० १६ शुक्रवार—भविष्यमें मूंग मोठ उड़द तेज होंगे। गुड़ मंदा होगा। फागुन तक सोनेमें मोटी तेजी रहेगी। ता० १७ शनिवार हस्त पर गुरु आनेसे गुड़ खांड तेलमें शीघ्र मंदा होगा। यहां चांदीमें भी भयंकर तेजी बनी रहेगी। ता० २० जन. मंगलवारी पूनम पुष्य नक्षत्रका क्षय होना किसी महान् व्यक्तिका निधन चाहता है। अभिजित पर सूर्य आना भी इस अनिष्ट योगको पुष्टि करता है। बुधका पश्चिमोदय होनेसे रुई शेयरमें मंदा, चांदीमें तेजी। चावल घी तेल सरसोंमें दिलखुश तेजी आयेगी। आज पूर्णिमाको सूर्य मंगल बुध केतुका चतुर्ग्रही योग तथा चंद्र राहु व शुक्र नैपचून तथा हर्षलका दृष्टियोग भयंकर उथल-पुथल राजनीतिमें भयंकर उच्छृंखलतासे मंत्रिमंडलमें फेरोबदल अनिष्ट संयोग होंगे। आसौजसे पौष पूनम तक एक नया रिकार्ड बनेगा। भगवान् भजन ही शांति ला सकता है, अन्यथा संसार जीवन मरणका कारण बनता रहेगा। बीमारीके कारण अधिक खुलासा नहीं लिख सका इसलिये पाठकगण क्षमा करेंगे।

चेतावनी

ज्योतिष्मतीके ग्राहकोंको शुभ सूचना

पाठकोंकी बेहद माँग पर गत २३वें वर्षसे एक प्रश्नोत्तर विभाग स्थापित किया गया। इसका कार्यभार हमने अपने परम स्नेही श्री अमरचन्दजी ज्यो० के सुपुत्र चि० महेश चन्दको सौंपा था। प्रथम अंक पर ७२२, द्वितीय अंक पर ८०४, तृतीय अंक पर ४१२ व चतुर्थ अंक पर ६१४ प्रश्नकर्ताओंके पत्र (कूपन) प्राप्त हुए। यह 'ज्योतिष्मती' के प्रति रुचि व प्रश्नोत्तर विभागकी कार्यकुशलताका प्रमाण है।

कुछेक प्रश्न बिना कूपन व बिना स्पष्ट पतेके होनेसे उत्तर न दिये जा सके। कूपन की अवधि अगले अंक प्रकाशित होने तककी ही होगी।

एक कूपन पर एक प्रश्नका उत्तर बन्द लिफाफेमें भेजा जाता है। उत्तरके लिए ३५ पैसेका डाक टिकट और नीचे दाहिनी ओर छपा कूपन काटकर निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें।

नित्य अनेकों प्रश्न कूपन आते हैं उन सबका तत्काल उत्तर नहीं दिया जा सकता। एकसे डेढ़ मास तक प्रश्नकर्ताको अपने उत्तरकी प्रतीक्षा करनी चाहिए। इस अङ्कके कूपन २५ दिसम्बर १९८० तक ही स्वीकार किये जावेंगे।

प्रश्नोत्तर कूपन भेजनेका पता—
पं० श्री अमरचन्द महेशचन्द ज्योतिषी
(ज्योतिष्मती-प्रश्नोत्तर विभाग)
पूंगलपाड़ा, जोधपुर (राजस्थान)

ज्योतिष्मती
(वर्ष २४ अंक १
प्रश्नोत्तर कूपन

गोरधनकी परकम्मा

परकम्मा दई न दई गिरि की नयना कछु और के और भये।
निरख्यौ परख्यौ अज लौं जौ कछू जग में निगुरे सिग भूलि गये।
व्रज की बन-बिथिन मांहि गुसे बिगसे जु बसन्त के तन्त छये।
तिन सौं मन की अँखियान बये नित राधिका-माधव रूप नये॥ १॥

अर्थ—जिस दिनसे मैंने श्रीगोवर्धनगिरिकी परिक्रमा दी है उस दिनसे मेरी दृष्टि बदल गई है। आज तक संसारमें मेरी इन आंखोंने जो कुछ देखा और परखा उस सबको ये भूल गईं। व्रजके जंगलकी गलियोंमें वसन्तमें घनी विकसित लता और वृक्षोंके जो तन्तु छाये हुए हैं उनसे मेरे मनकी आंखोंने राधिका-माधवके नये-नये स्वरूप गढ़ लिये॥ १॥

—कवि पुण्डरीक सम्पूर्णदत्त मिश्र

(८८ पृष्ठका शेष) जो भी श्रद्धालुजन राग द्वेष मद मोह लोभसे विमुख होकर एक बार भी मांकी शरणमें चला जाता है उसकी सभी विघ्नबाधाएं समाप्त हो जाती हैं। श्रीदुर्गा सप्तशतीके १२वें अध्यायमें माँने अपने श्रीमुखसे प्रतिज्ञा की है—

एभिस्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।
तस्याऽहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ॥
उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् ।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥
ग्रहपीड़ासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ।
उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीड़ाश्च दारुणाः ॥

हिमाचलप्रान्तीयशक्तिपीठोंमें विश्वकल्याणयज्ञानुष्ठान

भारत धर्मप्रधान देश है, इसमें धर्मनिरपेक्षता या अनीश्वरवादी कम्यूनिज्म कभी सफल नहीं हो सकेगा। आज भी अनेक धार्मिक स्थलोंमें सहस्रचण्डी शतचण्डी विश्वकल्याण महायज्ञोंका आयोजन हो रहा है। कांगड़ाके सिद्ध चामुण्डा-पीठमें प्रतिवर्ष नवरात्रोंमें विश्वकल्याण महायज्ञ गत ३० वर्षोंसे बराबर होता है। अभी-अभी श्यामालय (शिमला) के समीप श्रीतारादेवीपीठमें (नवरात्रोंमें) शतचण्डी यज्ञका आमंत्रणपत्र मुझे प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार चण्डीगढ़के समीप पंजाब-हरियाणा-हिमाचलके संधिसंगमस्थलके शक्तिपीठ श्रीमनसादेवी क्षेत्रमें तरुण तपस्वी श्रीचन्द्र-स्वामीजीने विश्वकल्याणार्थ सहस्रचण्डी महायज्ञ इसी शारदीय नवरात्रमें विशालरूपमें सम्पन्न करनेकी योजना बनाई है। इस महायज्ञमें सम्मिलित होनेका विशेष निमंत्रण दो मास पूर्व स्वामीजी ने मुझे दे दिया था, किन्तु शारीरिक अस्वस्थता और इस 'नववर्षाङ्क' प्रकाशन कार्यमें व्यस्त रहनेके कारण मैं केवल आरम्भ और पूर्णाहुतिके समय ही श्रीमनसादेवी मांके श्रीचरणोंमें उपस्थित रह सकूंगा। श्री चन्द्रस्वामीजीका शुभनाम तो मैं विगत ५-६ वर्षोंसे सुनता था, परंतु साक्षात्परिचय का सुअवसर गतवर्ष आपने स्वयं सोलन पधारकर दिया। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप दतिया पीताम्बरापीठके परमशाक्त राष्ट्रकुलगुरु परमपूज्य मणिपुरवासी वनखण्डेश्वर श्रीस्वामीजी महाराजके कृपापात्र एक शिष्य हैं। राष्ट्रकुलगुरु स्वामीजी एक अलौकिक विभूति थे—उनके कृपाप्रसादसे श्री चन्द्र स्मामीजीने विदेशोंमें भी अच्छी ख्याति प्राप्त की है। विदेशमें रहकर भी आपने चाय और विदेशी अंग्रेजी औषधिका कभी सेवन नहीं किया। वहां भी आयुर्वेदका महत्त्व स्थापित किया। सुना है कि श्रीचन्द्रस्वामी हर नवरात्रमें निराहार मौन रहकर साधना करते और प्रतिवर्ष विश्वकल्याणार्थ किसी प्रधान शक्तिपीठमें महायज्ञ करवाते हैं। कई सहस्रचण्डी शतचण्डी प्रयोग करवा चुके हैं। इसी अध्यात्मशक्तिके बल पर देशविदेशके राष्ट्रपति प्रधानमंत्रियों तकसे आपका स्नेह सम्पर्क है और उनको भारतीय अध्यात्मवादकी ओर प्रेरित करके माँकी शरणमें लानेका प्रयत्न करते हैं। यदि वर्तमान आसुरी शक्ति-सम्पन्न मोहमदिराग्रस्त राष्ट्रनायक माँकी शरणमें जाकर 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' की ऋतम्भराप्रज्ञा प्राप्त कर लें तो वे अपना कल्याण तो निश्चयरूपेण करेंगे ही, साथ ही विश्वको भी विनाशके मुखमें जानेसे बचा लेंगे।

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकास्समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥

सोलन दि. १०-१०-८०

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

"JYOTISHMATI" REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.N., 4941/57

हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा कुमार प्रि० प्रैस सोलनमें छापकर ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलनसे प्रकाशित।